हिन्दी

Teachers' Manual

कक्षा 6

1 मातृभूमि

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास–प्रश्नोत्तर

पाठ से

मेरी समझ से

(क) 1. सिंधु, **2.** भारत की प्रशंसा की गई है।

(ख) उत्तर चुनाव के कारण—

1. हिन्द महासागर को प्रारम्भ में 'हिन्दू महासागर' के नाम से पुकारा जाता था। हिन्दू शब्द संस्कृत शब्द सिंधु से लिया गया है, जो इस क्षेत्र की प्रमुख नदी सिंधु नदी का नाम भी है। इसलिए कवि के मन में हिन्द–महासागर के लिए सिंधु शब्द आता है।

2. इस कविता में हिमालय पर्वत, हिन्द महासागर, भारतीय नदियों जैसे—गंगा, यमुना, सरस्वती, पक्षियों के कलरव, वन–उपवन के सौंदर्य के अलावा महापुरुषों और महाकाव्यों की प्रशंसा की गयी है, इसलिए यह उत्तर ही उचित है।

मिलकर करें मिलान

1. हिमालय — भारत की उत्तरी सीमा पर फैली पर्वतमाला।
2. त्रिवेणी — तीन नदियों की मिली हुई धारा, संगम।
3. मलय–पवन — दक्षिणी भारत के मलय–पर्वत से चलने वाली सुगंधित वायु।
4. सिंधु — समुद्र, एक नदी का नाम।
5. गंगा–यमुना — भारत की प्रसिद्ध नदियाँ।
6. रघुपति — श्रीरामचन्द्र का एक नाम, दशरथ के पुत्र।
7. श्रीकृष्ण — वसुदेव के पुत्र वासुदेव।
8. सीता — जनक की पुत्री जानकी।
9. गीता — एक प्रसिद्ध और प्राचीन ग्रन्थ 'श्रीमद्भगवदगीता' इसमें वे प्रश्न–उत्तर और संवाद हैं जो महाभारत में श्रीकृष्ण और अर्जुन के बीच हुए थे।
10. गौतम बुद्ध — एक प्रसिद्ध महापुरुष, बौद्ध धर्म के प्रवर्तक।

पंक्तियों पर चर्चा

अर्थ—'वह युद्ध–भूमि मेरी' के माध्यम से कवि कहता है कि भारतीयों के लिए यह संघर्ष की धरती है, जो हमें समस्त सामाजिक एवं आर्थिक बुराइयों जैसे अभाव, अज्ञानता, ऊँच–नीच तथा जाति–भेद के अलावा समस्त दु:खों के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रेरित करती है। 'वह बुद्ध–भूमि मेरी' से कवि का आशय है कि भारत में ही गौतम बुद्ध ने जन्म लेकर बौद्ध धर्म की स्थापना की, जिससे समस्त विश्व में प्रेम, दया और सहानुभूति की भावना का उदय हुआ।

'वह जन्मभूमि मेरी' के माध्यम से कवि ने भारत के गौरवशाली इतिहास और इसकी महानता का उल्लेख किया है। 'वह मातृ–भूमि मेरी' के माध्यम से कवि भारत की धरती को अपनी माता के समान उच्च स्थान देता है। वह कहता है कि जिस प्रकार माँ अपना दूध पिलाकर बच्चों को पालती है उसी प्रकार धन–धान्य से परिपूर्ण भारत की धरती भी भारतवासियों का अन्न–फल–फूल के द्वारा पालन–पोषण करती है।

सोच–विचार के लिए

(क) 1. कोयल आम के बगीचों में रहती है।

2. मलय–पर्वत से बहकर आने वाली शीतल– सुगन्धित हवा हमारा तन–मन सँवारती है।

3. झरने ऊँचे–ऊँचे पर्वतों से झरते हैं।

4. श्रीकृष्ण ने बाँसुरी के अलावा गीता के उपदेश भी सुनाए थे।

5. गौतम ने भारत–भूमि का सुयश बढ़ाया था।

(ख) ● भारतभूमि में कदम–कदम पर छटा छहर रही है। भारत की पर्वत शृंखलाओं में गहरी घाटियों, घने जंगलों, उपजाऊ खेतों, बगीचों आदि में सर्वत्र प्राकृतिक छटा छहर रही है।

● गंगा और यमुना जैसी पवित्र नदियों का पानी छहर रहा है।

कविता की रचना

कविता की विशेषताएँ—

1. कविता में तुकांत शब्द और एक लय है।
2. बाँसुरी का संक्षिप्तीकरण करके वंशी शब्द प्रयोग किया गया है।
3. त्रिवेणी शब्द सरस्वती नदी का पर्यायवाची नहीं है, किन्तु उसके लिए प्रयोग किया गया है।
4. स्वर्ण का अर्थ है-सोना, किन्तु स्वर्ण-भूमि का एकदम भिन्न अर्थ हो जाता है— प्रचुर मात्रा में अनाज उत्पन्न करने वाली धरती।
5. युद्धभूमि एवं बुद्धभूमि एक-दूसरे के विरोधाभासी शब्द हैं जो कि भारत की धरती के लिए सुन्दरता से प्रयोग किए गए हैं।

मिलान

स्तम्भ 1	**स्तम्भ** 2
1. वह जन्मभूमि मेरी वह मातृभूमि मेरी।	2. मैंने उस भूमि पर जन्म लिया है। वह भूमि मेरी माँ समान है।
2. चिड़ियाँ चहक रही हैं, हो मस्त झाड़ियों में।	3. यहाँ की जलवायु इतनी सुखदायी है कि पक्षी पेड़-पौधों के बीच प्रसन्नता से गीत गा रहे हैं।
3. अमराइयाँ घनी हैं कोयल पुकारती है।	1. यहाँ आम के घने उद्यान हैं जिनमें कोयल आदि पक्षी चहचहा रहे हैं।

अनुमान या कल्पना से

(क) कोयल प्राकृतिक सुन्दरता पर मोहित होकर पुकार रही होगी। वह अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए साथियों को पुकार रही होगी। कोयल मधुर स्वर में कूक लगाकर पुकार रही होगी।

(ख) पवन समस्त प्राणियों का तन-मन सँवारती है। धीमी, ठण्डी-ठण्डी सुगन्धित हवा शरीर से टकराकर तन-मन सँवार देती है।

शब्दों के रूप

(क)
- घर-घर — हर घर में
- बाल-बाल — थोड़ा-सा, जरा-सा,
- साँस-साँस — हर साँस के साथ
- देश-देश — प्रत्येक देश, एक देश से दूसरे देश
- पर्वत-पर्वत — प्रत्येक पर्वत पर, एक पर्वत से दूसरे पर्वत तक

(ख) (i) **तप** + **भूमि** = तपोभूमि = वह स्थान जहाँ तपस्या की जाती है।

(ii) **देव** + **भूमि** = देवभूमि = वह स्थान जहाँ देवतागण वास करते हैं।

(iii) **भारत** + **भूमि** = भारतभूमि = भारत देश की समस्त धरती।

(iv) **जन्म** + **भूमि** = जन्मभूमि = जिस स्थान पर जन्म लिया हो

(v) **कर्म** + **भूमि** = कर्मभूमि = जिस स्थान पर आजीविका से संबंधित अथवा नियत कर्म किए जाते हों।

(vi) **कर्त्तव्य** + **भूमि** = कर्त्तव्यभूमि = वह स्थान जहाँ मनुष्य अपने कर्त्तव्य के पालन हेतु कर्म करता है।

(vii) **मरु** + **भूमि** = मरुभूमि = मरुस्थल, वह धरती जिस पर कोई वनस्पति नहीं उगती।

(viii) **मलय** + **भूमि** = मलयभूमि = मलय पर्वत, जहाँ से मलय पवन चलती है।

(ix) **मल्ल** + **भूमि** = मल्लभूमि = अखाड़ा, वह जगह जहाँ पहलवान कुश्ती करते हैं।

(x) **यज्ञ** + **भूमि** = यज्ञभूमि = वह स्थान जहाँ पर हवन किया जाता है।

(xii) **रंग** + **भूमि** = रंगभूमि = ऐसा स्थान जहाँ पर मनोरंजन के लिए खेल, नाटक आदि का आयोजन होता है।

(xii) **रण** + **भूमि** = रणभूमि = युद्ध का मैदान।

(xiii) **सिद्ध** + **भूमि** = सिद्धभूमि = वह स्थान जहाँ अनेक लोगों ने अपनी साधना में सिद्धि प्राप्त की हो।

थोड़ा भिन्न, थोड़ा समान

वंश-वंशी, घट-घाट, पंख-पंखा, कर-कार, साल-साला, नाक-नोक, कक्ष-कक्षा, भात-भीत, जल-जाल, माल-माला।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) मैं धौलपुर जिले के एक छोटे-से गाँव माँगरौल का निवासी हूँ।

प्रकृति—चम्बल नदी के तट पर बसा यह छोटा-सा गाँव चम्बल नदी के खारों से घिरा हुआ है। गाँव की प्राकृतिक सुषमा सभी का मन मोह लेती है। यहाँ के खुले प्राकृतिक वातावरण में नील-गाय, हिरन, सियार आदि जंगली जीव एवं अनेक स्थानीय पक्षियों के अलावा सर्दियों में आने वाले प्रवासी पक्षी सभी का मन मोह लेते हैं।

खान-पान— मेरे गाँव के अधिकांश लोग सभी बुराइयों से दूर सीधे-सादे हैं। सभी लोग शाकाहारी हैं। उनके भोजन में गाँव में ही पैदा होने वाली साग-सब्जियाँ तथा दूध, दही, छाछ की प्रधानता रहती है। मेरे गाँव के लोगों का पहनावा भी साधारण है। युवावर्ग को छोड़कर सभी लोग कुर्ता-धोती पहनते हैं। यहाँ की स्त्रियाँ भी पारम्परिक पोशाक घाघरा-चोली पहनना पसंद करती हैं।

जलवायु—मेरे गाँव की जलवायु मानसूनी है। यहाँ गर्मियों में भीषण गर्मी तो सर्दियों में हाड़ कँपाने वाली ठंड पड़ती है। पर्याप्त वर्षा होने के कारण यहाँ फसलें भी प्रचुर मात्रा में होती हैं। वर्षा ऋतु में चंबल नदी में जब बाढ़ आती है तो हमारा गाँव भी बाढ़ के पानी से घिर जाता है। इससे आवागमन में बहुत परेशानी का सामना करना पड़ता है।

प्रसिद्ध स्थान—मेरे गाँव के निकट ही राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य दर्शनीय स्थल है। इस अभयारण्य में स्थानीय तथा प्रवासी पक्षियों की लगभग 320 प्रजातियाँ निवास करती हैं। इंडियन स्कीमर, रूडी शेल्डक, रिवर टर्न, ब्लैक बेलीड टर्न जैसे अन्य अनेक प्रवासी पक्षियों की सुन्दरता पर्यटकों का मन मोह लेती है। सफेद बुज्जा पक्षी तो जिंदा साँपों तक को निगल जाता है। मेरे गाँव के निकट मगरमच्छ, घड़ियाल तथा डाल्फिन संरक्षण स्थल भी है। यह स्थान हजारों जल-जीवों की अठखेलियों के लिए प्रसिद्ध है। मुझे अपनी जन्मस्थली मेरे गाँव की सुन्दरता पर गर्व है।

नोट—*छात्र उपर्युक्त के आधार पर अपने गाँव या शहर का वर्णन करें।*

(ख) मेरा मित्र—मेरे अनेक मित्र हैं, लेकिन लक्ष्य मेरा सबसे प्यारा और पक्का मित्र है। वह पढ़ाई में औसत है, लेकिन सीखने का प्रयास करता रहता है।

मुझे अपने मित्र के शांत स्वभाव और उसके चेहरे पर हमेशा खेलने वाली मुस्कान बहुत अच्छी लगती है। वह बहुत कम, लेकिन मीठा बोलता है। लक्ष्य अनुशासनप्रिय छात्र है, इसलिए न तो वह कभी विलंब से विद्यालय आता है और न कभी अकारण कक्षा से अनुपस्थित रहता है। मुझे अपने मित्र की यह आदत बहुत अच्छी लगती है कि वह झगड़ा कर रहे छात्रों के बीच में तुरन्त कूद जाता है और उनका झगड़ा शांत करा देता है। उसका घर विद्यालय से दो किलोमीटर दूर है। स्कूल पहुँचने में विलंब न हो इसलिए वह अनेक बार घर से दौड़ लगाकर स्कूल पहुँचता है। नित्यप्रति के इस अभ्यास ने उसे अच्छा धावक बना दिया है, इसलिए वह अनेक बार दौड़ प्रतियोगिताएँ जीत चुका है। मुझे अपने मित्र की काम के प्रति लगन, समर्पण, उसके चेहरे की मधुर मुस्कान और दोस्तों के प्रति उसका प्रेम बहुत अच्छा लगता है।

वंशी–से

अलगोजा	
बीन	
बाँसुरी	
सींगी	
शहनाई	
नादस्वरम	
भंकोरा	
शंख	

आज की पहेली

2. हिमालय, 3. गंगा, 4. भारत, 5. लायक, 6. पवन।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ख), **2.** (घ), **3.** (क), **4.** (ग), **5.** (ख)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. अमराइयों, **2.** आकाश, **3.** बाँसुरी, **4.** झरने, **5.** सुयश।

सुमेलन

स्तंभ (अ)	स्तंभ (ब)
1. गीता का उपदेश दिया था	**(ब)** श्रीकृष्ण ने
2. रामचरितमानस लिखी थी	**(ब)** तुलसीदास ने
3. रामायण के लेखक	**(स)** महर्षि वाल्मीकि
4. जानकी का दूसरा नाम	**(द)** सीता जी
5. रघुपति कहा जाता है	**(य)** श्रीराम को

अतिलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. मातृभूमि कविता में भारत देश का गुणगान किया गया है।
2. मातृभूमि का दूसरा नाम जन्मभूमि हो सकता है।
3. यह कविता मन में देश-प्रेम का भाव जगाती है।
4. कविता में दया शब्द प्रेम और अहिंसा का प्रतीक है।
5. मलय शब्द चंदन का पर्यायवाची है।
6. हिमालय की चोटियाँ इतनी ऊँची हैं कि वे आकाश को चूमती हुई प्रतीत होती हैं।
7. इस कविता में दिया ज्ञान के प्रकाश का प्रतीक है।
8. इस कविता में कवि ने भारत की गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों का वर्णन किया है।
9. इस कविता के रचयिता का नाम सोहनलाल द्विवेदी है।
10. चिड़ियाँ भारत में पाए जाने वाली हरियाली तथा प्राकृतिक सौंदर्य में रहने के कारण मस्त हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. अमराइयाँ शब्द का अर्थ है आम के बगीचे। अमराइयों में, मधुर स्वर वाली कोयल निवास करती है। बसंत ऋतु में कोयल की कूक मन को मोह लेती है।

2. भारत की दक्षिण दिशा में हिन्द महासागर है, जिसे देखकर ऐसा लगता है जैसे वह अपने जल से भारत-माता के पैरों को धो रहा हो और उन्हें बार-बार प्रणाम कर रहा हो।

3. भारत में धर्म का बोलबाला है। यहाँ विभिन्न धर्मों के लोग मिल-जुलकर रहते हैं। कवि का मानना है कि यदि धर्म की स्थापना के लिए युद्ध भी करना पड़े तो उससे पीछे नहीं हटना चाहिए।

4. (अ) इस पंक्ति में कवि सोहनलाल द्विवेदी कहते हैं कि गौतम बुद्ध ने इस पवित्र धरती पर जन्म लेकर न केवल लोगों को सत्य, प्रेम और अहिंसा का पाठ पढ़ाया, बल्कि उनमें ज्ञान का प्रकाश भी फैलाया जिससे उनके अंधविश्वास और कुरीतियों पर रोक लग सकी।

(ब) कवि कहते हैं कि भारत की भूमि पर बहुत-सी नदियाँ बहती हैं। यहाँ बहुत-से झरने, झीलें तथा सरोवर हैं। पानी की उपलब्धता के कारण चारों ओर हरियाली तथा प्राकृतिक सौंदर्य बिखरा हुआ है। जिसे देखकर चिड़ियाँ मस्त होकर चहचहाती रहती हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत की दक्षिण दिशा में स्थित पहाड़ पर मलय अर्थात् चन्दन के अनगिनत वृक्ष हैं। इसलिए उस पर्वत को मलय पर्वत कहा जाता है। जब शीतल वायु उस पर्वत से होकर आती है तो उसमें चन्दन की सुगंध भी मिली होती है। इसलिए कवि ने वायु को मलय-पवन कहा है।

2. भारतभूमि पर अनेक धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं। सभी धर्मों की पूजा-पद्धति, रहन-सहन, खान-पान आदि भिन्न-भिन्न होते हुए भी सभी लोग प्रेम और सौहार्द के साथ मिल-जुलकर रहते हैं। इसके अलावा भिन्न-भिन्न धर्मों के महापुरुषों ने यहीं पर जन्म लिया था, इसलिए कवि भारत को धर्मभूमि कह रहा है।

**

2 गोल

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

मेरी समझ से

(क) (1) वे जानते थे कि खेल को सही भावना से खेलना चाहिए।

(2) उनके हॉकी खेलने के विशेष कौशल के कारण।

(ख) उपर्युक्त उत्तर चुनने के निम्नलिखित कारण हैं—

चर्चा **1.**—खेलों का उद्देश्य प्रेम, सौहार्द तथा सहयोग की भावना को बढ़ाना है; न कि क्रोध में किसी को हानि पहुँचाना। इसके अलावा हार-जीत खेलों का अभिन्न अंग है। आज हार है तो कल जीत भी होगी। हार पर शर्मिंदा होना तथा जीत पर खुशी से उछल पड़ना खेल भावना के विपरीत है।

चर्चा **2.**—मेजर ध्यानचंद जब गेंद लेकर विपक्षी गोल-पोस्ट की ओर बढ़ते थे तो विपक्षी टीम का कोई भी खिलाड़ी उनसे गेंद को छीन नहीं पाता था। दर्शकों को ऐसा लगता था कि मेजर ने जादू करके गेंद को स्टिक से चिपका लिया है। गेंद गोल-पोस्ट में पहुँचने के लिए या अन्य किसी साथी को पास देने के लिए ही मेजर से दूर जाती थी। इसलिए ही लोगों ने मेजर को हॉकी का जादूगर कहना शुरू कर दिया था।

मिलकर करें मिलान

मिलान

शब्द		अर्थ या संदर्भ
1. लांस नायक	2.	भारतीय सेना का एक पद (रैंक) है।
2. बर्लिन ओलंपिक	4.	वर्ष 1936 में जर्मनी के बर्लिन शहर में आयोजित ओलंपिक खेल प्रतियोगिता, जिसमें 49 देशों ने भाग लिया था।
3. पंजाब रेजिमेंट	5.	स्वतंत्रता से पहले अंग्रेजों की भारतीय सेना का एक दल।
4. सैंपर्स एंड माइनर्स टीम	6.	अंग्रेजों के समय का एक हॉकी दल।
5. सूबेदार	1.	स्वतंत्रता से पहले सूबेदार भारतीय सैन्य अधिकारियों का दूसरा सबसे बड़ा पद था।
6. छावनी	3.	सैनिकों के रहने का क्षेत्र।

पंक्तियों पर चर्चा

(क) हर व्यक्ति अपने काम की अच्छाई और बुराई के विषय में जानता है। अच्छा काम करने वाले आदमी को पता होता है कि उसके काम से किसी को चोट नहीं लगेगी, हानि नहीं होगी और किसी को दु:ख नहीं पहुँचेगा। इसलिए वह निडर और खुश रहता है। दूसरी ओर बुरा काम करने वाला आदमी अपने काम के परिणाम को जानता है। उसे मालूम होता है कि उसकी करनी से किसी दूसरे आदमी को नुकसान हुआ है और दु:ख पहुँचा है। इसलिए वह डरता रहता है कि जिस आदमी का नुकसान हुआ है वह कहीं बदला लेने के लिए उसे भी नुकसान न पहुँचाए या चोट न मारे। डर के मारे वह किसी भी काम में मन नहीं लगा पाता और जीवन में पिछड़ जाता है। इसलिए हमें कभी भी बुरा काम नहीं करना चाहिए।

(ख) खेल पारस्परिक मैत्री, सौहार्द और सहयोग को बढ़ावा देते हैं। खेलों के दौरान दिखाई जाने वाली मित्रता, प्रेम और आपसी सहयोग ही खेल भावना कहलाते हैं। खेलों में टीम-भावना व्यक्तिगत स्वार्थ के ऊपर होती है। इसी टीम-भावना के कारण खिलाड़ी साथी खिलाड़ियों को आगे

बढ़ाने के लिए सहयोग करते हैं, निर्देश देते हैं और अवसर उपलब्ध कराते हैं। यही कारण था कि मेजर ध्यानचंद खेल के समय स्वार्थी नहीं बनते थे। वे अपनी टीम की जीत को महत्व देते हुए गेंद लेकर आगे बढ़ते थे तथा गोल-पोस्ट के निकट पहुँचकर स्वयं गोल करने के बजाय साथी खिलाड़ी को गेंद सौंप देते थे। जिससे गोल सरलता से हो सके और साथी खिलाड़ी को भी गोल करने पर तारीफें मिल सकें। साथी खिलाड़ियों को श्रेय देने की उनकी यह आदत सभी को पसन्द आती थी। इस कारण से उनकी लोकप्रियता और भी बढ़ गयी थी।

सोच-विचार के लिए

(क) मेजर ध्यानचन्द की सफलता का रहस्य हॉकी के प्रति उनका लगाव था। वह अपने खेल के प्रति पूरी तरह से समर्पित थे। वे खेल भावना के साथ लगातार हॉकी खेलने का अभ्यास करते थे। मैदान में उनकी तेज दौड़ और गेंद पर नियंत्रण रखने के उनके कौशल ने उन्हें अद्वितीय खिलाड़ी बना दिया था। इसके अलावा गहन साधना उनकी सफलता का रहस्य था।

(ख) निम्नलिखित बातों से लगता है कि ध्यानचंद स्वयं से पहले दूसरों को रखते थे—

(i) पट्टी बँधवाकर जब ध्यानचंद मैदान में लौटे तो उन्होंने बिना कोई अपशब्द बोले विरोधी दल के खिलाड़ी की प्यार से पीठ थपथपाई थी।

(ii) वे गेंद को लेकर आगे बढ़ते थे तथा विरोधी टीम के गोल-पोस्ट के निकट पहुँचकर गेंद किसी अन्य साथी खिलाड़ी के पास पहुँचा देते थे, ताकि उसे भी गोल करने का मौका मिल सके। जब साथी खिलाड़ी गोल करते थे तो मेजर साहब को बहुत खुशी होती थी।

संस्मरण की रचना

मेजर ध्यानचंद के संस्मरणों की सूची—

(i) खेल के मैदान में नोंक-झोंक की घटनाएँ होती रहती हैं। जिन दिनों हम खेला करते थे, उन दिनों भी यह सब चलता था।"

(ii) "माइनर्स टीम के खिलाड़ी मुझसे गेंद छीनने की कोशिश करते, लेकिन उनकी हर कोशिश बेकार जाती।"

(iii) "इतने में एक खिलाड़ी ने गुस्से में आकर हॉकी-स्टिक मेरे सिर पर मार दी।"

(iv) "थोड़ी देर बाद मैं पट्टी बाँधकर मैदान में आ पहुँचा।"

(v) "मैंने उस खिलाड़ी की पीठ पर हाथ रखकर कहा, "तुम चिंता मत करो। मैं इसका बदला जरूर लूँगा।"

(vi) "मैंने एक के बाद एक झटपट छः गोल कर दिए।"

शब्दों के जोड़े, विभिन्न प्रकार के

(क) 1. ज्यों-ज्यों हम आगे बढ़ते गए, त्यों-त्यों चढ़ाई कठिन होती गई।

ज्यों-ज्यों, त्यों-त्यों।

2. जो-जो छात्र पिकनिक पर जाना चाहता है, वो-वो अपना नाम लिखवा दे।

जो-जो, वो-वो।

3. जहाँ-जहाँ हम गए, वहाँ-वहाँ परेशान हुए।

जहाँ-जहाँ, वहाँ-वहाँ।

4. जब-जब मैंने उसकी मदद की, तब-तब मुझे बुराई ही मिली।

जब-जब, तब-तब।

5. जिन-जिन छात्रों का मासिक शुल्क अभी तक जमा नहीं हुआ है, उन-उन को पाँच रुपये रोजाना के हिसाब से विलंब-शुल्क भी जमा करना पड़ेगा।

जिन-जिन, उन-उन।

(ख) 1. मित्रों के बीच में हास्य-विनोद तथा धौल-धप्पा तो पक्की मित्रता की निशानी है।

हास्य-विनोद, धौल-धप्पा

2. ये दोनों लड़के भी विचित्र हैं, जहाँ बैठे वहीं उठा-पटक शुरू कर देते हैं।

उठा-पटक

3. उस सड़क पर लोगों का आना-जाना बहुत कम है, इसलिए चोरी-डकैती आम बात है।

आना-जाना, चोरी-डकैती।

4. हमारी लाख मान-मनौवल के बावजूद फूफाजी रूठ कर चले गए।

मान-मनौवल।

5. सच-झूठ का तो पता नहीं, मगर मेरी नजर में तो तुम ही जात-पाँत को बढ़ावा दे रहे हो।

सच-झूठ, जात-पाँत।

(ग) योजक चिह्न का प्रयोग—

- ❖ अच्छा या बुरा — अच्छा-बुरा
- ❖ उत्तर और दक्षिण — उत्तर-दक्षिण
- ❖ छोटा या बड़ा — छोटा-बड़ा
- ❖ गुरु और शिष्य — गुरु-शिष्य
- ❖ अमीर और गरीब — अमीर-गरीब
- ❖ अमृत या विष — अमृत-विष

बात पर बल देना

1. *"खेल में तो यह सब चलता ही है।"*
   "खेल में यह सब चलता है।"
2. *"उन दिनों भी यह सब चलता था।"*
   "उन दिनों यह सब चलता था।"
3. *"मैं तुम्हें दो ही गोल से हराता।"*
   "मैं तुम्हें दो गोल से हराता।"
4. *"उसके साथ भी बुराई की जाएगी।"*
   "उसके साथ बुराई की जाएगी।"
5. *"मेरे पास सफलता का कोई गुरु-मंत्र तो है नहीं।"*
   "मेरे पास सफलता का कोई गुरु-मंत्र नहीं है।"
6. *"सारे गोल मैं ही करता था।"*
   "सारे गोल मैं करता था।"
7. *"मेरी तो हमेशा यह कोशिश रहती।"*
   "मेरी हमेशा यह कोशिश रहती।"

- तो, भी, ही, भी, तो ही तथा तो शब्द दूसरे वाक्य में कम हैं। इन शब्दों के न रहने पर वाक्य का विशेष प्रभाव कम हो जाता है।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) खेल को हमेशा खेल-भावना से ही खेलना चाहिए। ध्यानचंद एक महान खिलाड़ी के साथ-साथ सभ्य एवं धीर-गम्भीर आदमी थे। उनका चरित्र अनुकरणीय है। वह खेल में हार-जीत को समान भाव से लेते थे। खेलों में नोंक-झोंक प्रायः आम बात है, लेकिन हमला करने वाले खिलाड़ी ने खेल भावना का परिचय नहीं दिया था, यदि मैं मेजर ध्यानचंद के स्थान पर होता तो उस खिलाड़ी को माफ करते हुए खेल भावना का परिचय देता, साथ ही उसका जवाब अच्छा खेलते हुए गोल करके देता।

(ख) मुझे क्रिकेट, फुटबॉल तथा बैडमिंटन के खेल बहुत पसंद हैं।

क्रिकेट—क्रिकेट का खेल मुझे इसलिए पसन्द है, क्योंकि यह जेन्टिलमैन गेम (सभ्यजनों का खेल) कहलाता है। मेरी पसंद का दूसरा कारण यह है कि क्रिकेट की लोकप्रियता भारत में बहुत बढ़ गई है और इस खेल के द्वारा खिलाड़ी बहुत-सा पैसा कमा सकते हैं। यहाँ तक कि आई.पी.एल में खेल रहे छोटे-से-छोटे खिलाड़ी की आय भी लाखों में है। मुझे भारतीय क्रिकेट टीम का कप्तान रोहित शर्मा बहुत अच्छा लगता है।

रोहित शर्मा—हिटमैन के नाम से मशहूर भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने 2024 का टी-20 विश्वकप भारत के लिए जीता है। सन् 2007 में भारत के लिए क्रिकेट खेलने वाले रोहित लम्बे-लम्बे छक्के लगाने के लिए जाने जाते हैं। यह अभी तक अपने कैरियर में रिकॉर्ड 612 छक्कों से अधिक लगा चुके हैं।

इसके अलावा उनके नाम टी-20 अन्तर्राष्ट्रीय मैचों में सर्वाधिक पाँच शतक और 4231 रन बनाने का भी रिकार्ड है। अभी हाल में ही रोहित-शर्मा की शानदार कप्तानी की बदौलत भारत ने सत्रह साल बाद कोई अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता जीती है।

फुटबॉल—फुटबॉल संसार का सर्वाधिक लोकप्रिय खेल है। यह खेल मुझे इसलिए भी पसंद है क्योंकि इसके लिए दम-खम के अलावा अत्यधिक चुस्ती-फुर्ती की जरूरत होती है। यह खेल इसलिए भी पसंद किया जाता है क्योंकि इसका नतीजा केवल नब्बे मिनट में ही निकल आता है। इस खेल में खिलाड़ियों पर जैसे दौलत की बरसात होती है।

मैसी—मुझे ब्रिटिश की टीम में खेलने वाला लियोनेल मैसी सबसे अच्छा लगता है। खेल के मैदान में उसकी चुस्ती-फुर्ती और खेल-कौशल देखते ही बनता है। यह अन्तर्राष्ट्रीय फुटबॉल प्रतियोगिताओं में अब तक 108 गोल कर चुका है। इसकी वार्षिक आय 20.45 मिलियन डॉलर है।

बैडमिंटन—बैडमिंटन के खेल में अधिक पैसा तो नहीं है, लेकिन मुझे इसलिए पसन्द है क्योंकि इसके कोर्ट (मैदान) के लिए बहुत कम स्थान की आवश्यकता होती है। लगभग एक घंटे में समाप्त हो जाने वाले इस खेल के लिए ऊँचे दर्जे की चुस्ती-फुर्ती और चपलता की जरूरत होती है। बैडमिंटन में सायना नेहवाल, पी.वी सिन्धू तथा श्रीकांत किदांबी मेरे मनपसन्द खिलाड़ी हैं।

श्रीकांत किदांबी—श्रीकांत किदांबी भारत के लिए अनेक विश्वस्तरीय बैडमिंटन प्रतियोगिताएँ जीत चुके हैं। यह विश्व के नम्बर एक खिलाड़ी रह चुके हैं। इन्हें सन् 2018 में पद्म श्री तथा 2015 अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। किदांबी 2021 पुरुष एकल अनुशासन में विश्व चैम्पियनशिप के फाइनल में पहुँचकर रजत पदक जीता था। इन्होंने 2011 के कॉमन वेल्थ गेम्स में रजत पदक जीता था। इसके अलावा इन्होंने इंडिया जूनियर इंटरनेशनल बैडमिंटन चैम्पियनशिप में दो स्वर्ण पदक जीते थे। मुझे

श्रीकांत किदांबी इसलिए भी पसन्द हैं क्योंकि साधारण से परिवार में जन्म लेने के बाद और सुविधाओं के अभाव में भी यह बैडमिंटन के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच सके थे।

समाचार-पत्र से

(क)

वस्त्राकर के 'चौके' से भारत जीता

टी-20 सीरीज

चेन्नई। पूजा वस्त्राकर (13/4) और राधा यादव (6/3) के शानदार प्रदर्शन से भारत ने मंगलवार को तीसरे और अंतिम महिला टी-20 मैच में दक्षिण अफ्रीका को 55 गेंद शेष रहते हुए 10 विकेट से हरा दिया। इसी के साथ तीन मैच की सीरीज भी 1-1 से बराबर की।

तेज गेंदबाज वस्त्राकर ने कैरियर की सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी की। भारत ने टॉस जीत कर दक्षिण अफ्रीका को बल्लेबाजी का न्योता दिया। दक्षिण अफ्रीका की टीम 17.1 ओवर में 84 रन पर ढेर हो गई। भारत ने 10.5 ओवर में बिना किसी नुकसान के 88 रन बनाकर आसान जीत दर्ज की। स्मृति मंधाना 40 गेंद पर 54 रन और शेफाली वर्मा 25 गेंद पर 27 रन बनाकर नाबाद रही।

दक्षिण अफ्रीका ने पहला मैच 12 रन से जीता था, जबकि दूसरा मैच बारिश के कारण पूरा नहीं हो पाया था। भारत ने इससे पहले वनडे सीरीज में 3-0 से जीत दर्ज करने के अलावा एकमात्र टेस्ट मैच भी अपने नाम किया था। मंधाना ने आयोबांगा खाका पर दो चौके लगाकर पारी की शुरुआत की। इसके बाद दोनों भारतीय बल्लेबाजों ने सहजता से रन बटोरे। भारत ने पॉवर प्ले में 40 रन बनाए। मंधाना दक्षिण अफ्रीका की गेंदबाजों पर पूरी तरह हावी रहीं।

इससे पहले भारत की तरफ से वस्त्राकर और राधा के अलावा अरुंधति रेड्डी (14/1), श्रेयंका (19/1) और दीप्ति शर्मा (20/1) ने भी विकेट लिए। दक्षिण अफ्रीका की ओर से सलामी बल्लेबाज तेजमिन बिट्स (20) ही थोड़ी देर टिकीं। जिसके बाद टीम के कप्तान लॉरा वोलवार्ट (09) और मारिजेन (10) ने विकेट गँवाकर पॉवर प्ले में 39 रन जोड़े।

डायरी का प्रारम्भ

डायरी—मैं मयंक हूँ। मैं कक्षा 6 का छात्र हूँ।

1-12-2024 : भारत सरकार की RTE Yojana (शिक्षा का अधिकार) के अन्तर्गत मेरा दाखिला शहर के नामी-गिरामी english medium स्कूल में हो गया है।

4-4-2024 : आज स्कूल में मेरा पहला दिन था। स्कूल की विशाल बिल्डिंग, बड़े-बड़े अध्ययन-कक्ष, लाइब्रेरी और हरे-भरे बगीचे को देखकर मन प्रसन्न हो गया। मुझे बहुत खुशी है कि अब मुझे भी धनाढ्य तथा अधिकारी वर्ग के छात्रों के साथ पढने-लिखने, खेलने-कूदने का मौका मिलेगा।

7.4.2024 : सभी सहपाठियों को मालूम हो गया है कि मैं एक गरीब परिवार से आता हूँ। मेरा दाखिला भी शिक्षा के अधिकार योजना के अन्तर्गत हुआ है।

10-4-2024 : स्कूल के छात्र-छात्राएँ मेरे साथ घुलते-मिलते नहीं हैं। यहाँ के अध्यापक भी मेरे साथ सामान्य व्यवहार नहीं करते हैं। शायद यह सब मेरे गरीब होने के कारण से है।

15-4-2024 : मैं कठिन परिश्रम कर रहा हूँ, क्योंकि स्कूल में मेरा कोई दोस्त नहीं है। इसलिए मैं अपना पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगा रहा हूँ। मुझे बहुत आगे जाना है।

10-5-2024 : मैं कक्षा में होशियार छात्रों की श्रेणी में आ गया हूँ। जो बच्चे मुझसे दूर-दूर भागते थे, अब धीरे-धीरे मेरे दोस्त बन रहे हैं। अध्यापक भी मेरी तारीफ करने लगे हैं। मृदुला मैडम तो मुझसे बहुत ही प्रभावित हैं।

20-5-2024 : कल से हमारे स्कूल में ग्रीष्मकालीन अवकाश हो जाएँगे। अब तो मेरी कक्षा के अलावा दूसरी कक्षाओं के बच्चे भी मेरे दोस्त बन गए हैं। अब मुझे यहाँ बहुत अच्छा लगता है।

आज की पहेली

दाहिने ओर की खिलाड़ी द्वारा गोल किया जाएगा।

साझी समझ

गिट्टी-फोड़

ग्रामीण क्षेत्रों में खेला जाने वाला गिटटी-फोड़ अत्यन्त लोकप्रिय खेल है। शहरी क्षेत्रों में भी यह बच्चों द्वारा खूब खेला जाता है। इस खेल को खेलने के लिए बच्चों में सजगता, चुस्ती-फुर्ती एवं चपलता होनी जरूरी है। यह साधारण-सा खेल बच्चों के शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक विकास के लिए भी बहुत उपयोगी है। इस खेल के लिए किसी विशेष उपकरण की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए इसे गरीब बच्चों का खेल भी कहा जाता है।

खेल सामग्री

1. टेनिस या कोई और रबड़ की गेंद।
2. एक ओर से थोड़े से सपाट पत्थर या ईंट के टुकड़े एक-दूसरे के ऊपर रखकर पिरामिड को बनाने के लिए।

खेल के नियम

1. इस खेल को खेलने के लिए कम-से-कम दो खिलाड़ियों का होना आवश्यक है। वैसे बनाए गए दलों में जितने अधिक खिलाड़ी होते हैं, खेल का आनन्द उतना ही बढ़ जाता है।
2. इसमें मैदान के बीच में एक के उपर एक गिट्टी रखकर पिरामिड-सा बना दिया जाता है तथा एक ओर गिट्टियों से **5-6** मीटर दूर एक रेखा खींचकर पाला बना दिया जाता है।
3. सिक्का उछालकर टॉस किया जाता है। टॉस जीतने वाली टीम को पहले गिट्टी फोड़ने का मौका मिलता है।
4. अब टॉस जीतने वाली टीम का कोई सदस्य पाले के पीछे खडे होकर गेंद से गिट्टी फोड़ता है। विरोधी दल के सदस्य गिट्टियों के दूसरी ओर खड़े होकर गेंद को लपकने के लिए तैयार रहते हैं।
5. खिलाड़ी गेंद गिट्टियों पर मारता है। यदि गेंद गिट्टियों को नहीं फोड़ पाती तो टप्पा खाकर उछलती है। जिसे दूसरी टीम के सदस्य लपकने की कोशिश करते हैं। यदि लपक लेते हैं तो गिट्टी फोड़ने वाला खिलाड़ी आउट हो जाता है और तब दूसरे खिलाड़ी को यह मौका मिलता है। इस प्रकार टीम के प्रत्येक खिलाड़ी की बारी आती है।
6. यदि गेंद नहीं लपकी जाती है तो उसी खिलाड़ी को फिर से गिट्टी फोड़ने का अवसर दिया जाता है। गिट्टी फोड़ने में असफल खिलाड़ी को तीन अवसर मिलते हैं। तीनों बार असफल होने पर वह खुद-ब-खुद आउट हो जाता है।
7. यदि गेंद से गिट्टियों का ढेर गिर जाता है तो सभी खिलाडियों के बीच भगदड़ मच जाती है। गिटटी के ढेर को फोड़ने वाली टीम उसे फिर से लगाने की कोशिश करती है, जबकि विरोधी टीम उन खिलाड़ियों पर गेंद से निशाना लगाते हैं।
8. यदि गेंद किसी खिलाड़ी के लग जाती है तो पूरी टीम आउट हो जाती है, तब दूसरी टीम की गिट्टी फोड़ने की बारी आ जाती है। यदि गेंद लगने से पहले ही गिट्टी फोड़ने वाली टीम फिर से गिट्टियों को एक के ऊपर एक लगाकर पिरामिड बना देती है तो उसके खेल से आउट या मरे हुए खिलाड़ी भी जिन्दा हो जाते हैं और खेल में शामिल हो जाते हैं।
9. इस खेल में किसी भी टीम की हार-जीत नहीं होती बल्कि शुद्ध मनोरंजन होता है। हँसी-ठिठोली होती है। बाल-सुलभ आनन्द होता है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ग), **4.** (ख), **5.** (ग)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. प्रयाग, झाँसी, **2.** शॉर्ट कट, **3.** बर्लिन, **4.** हॉकी का जादूगर, **5.** तरक्की।

सुमेलन

स्तंभ (अ)		स्तंभ (ब)
1. सूबेदार मेजर तिवारी	**(द)**	ने ही ध्यानचंद को हॉकी खेलने के लिए प्रेरित किया था।
2. सेना में ध्यानचंद की नौकरी	**(स)**	साधारण सिपाही के पद पर लगी थी।
3. ध्यानचंद की सोच थी	**(ब)**	वह स्वयं के लिए नहीं अपितु अपने देश के लिए खेलते हैं और हार-जीत उनकी नहीं देश की होती है।
4. सफलता के लिए	**(य)**	लगन, साधना और खेल-भावना सबसे बड़े गुरु मंत्र हैं।
5. प्रारंभ में फर्स्ट ब्राह्मण रेजीमेंट में खेलते हुए	**(अ)**	ध्यानचंद एक नौसिखिया खिलाड़ी थे।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. हॉकी के प्रसिद्ध खिलाड़ी ध्यानचंद का जन्म सन् 1904 में हुआ था।
2. खेल के मैदान में धक्का-मुक्की और नोंक-झोंक की घटना होना आम बात है।
3. पाठ का शीर्षक 'गोल' पढ़कर हमारे दिमाग में क्रिकेट की गोल गेंद का चित्र सामने आता है।
4. भारत के सबसे प्रसिद्ध हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद हैं।
5. जिस मैच में मेजर के सिर में चोट लगी थी, उसे उनकी टीम ने छः गोल से जीता था।
6. पंजाब रेजिमेंट की ओर से लेखक सन् 1933 में खेला करते थे।
7. सैंपर्स एण्ड माइनर्स हॉकी टीम के खिलाड़ी ने लेखक के सिर पर अपनी हॉकी-स्टिक मार दी थी।
8. यदि सैंपर्स एण्ड माइनर्स के खिलाफ मैच में लेखक के सिर में चोट न लगती तो उनकी टीम केवल दो गोल से ही जीत पाती।
9. लोग लेखक से हॉकी में उनकी सफलता का राज जानना चाहते थे।
10. बर्लिन ओलंपिक खेलों के समय लेखक भारतीय सेना में लांस नायक के पद पर कार्यरत थे।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. ध्यानचंद का जन्म सन् 1904 में प्रयाग (प्रयागराज) इलाहाबाद के बहुत ही साधारण परिवार में हुआ था। आर्थिक परेशानियों के चलते बाद में उनका परिवार झाँसी में जाकर बस गया था।
2. लेखक जहाँ भी जाता था, वहाँ लोग उसे चारों ओर से इसलिए घेर लेते थे, क्योंकि उन्हें हर कोई पसंद करता था। इसके अलावा वे हॉकी में उनकी सफलता का राज भी जानना चाहते थे।
3. लेखक की दृष्टि में सफलता का मूल-मंत्र लगन, साधना तथा खेल-भावना है। उसके अलावा सफल होने के लिए निरंतर और अथक अभ्यास की भी जरूरत होती है।
4. हॉकी में लेखक की शानदार सफलता के लिए प्रेरणा स्रोत फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट के सूबेदार मेजर तिवारी थे। 16 वर्षीय ध्यानचंद को देखते ही वे उनके अन्दर छुपी प्रतिभा को पहचान गए थे। इसलिए उन्होंने लेखक को हॉकी खेलने के लिए उकसाया और आवश्यक साधन उपलब्ध करवाए।
5. कठोर अभ्यास के द्वारा लेखक शानदार हॉकी खिलाड़ी बन गए थे। उनके खेल-कौशल को सम्मान देते हुए सन् 1936 के बर्लिन ओलंपिक में उन्हें हॉकी टीम का कप्तान बना दिया गया। ओलंपिक खेलों में उनके मैच विजेता हॉकी कौशल को देखकर लोगों ने उन्हें हॉकी का जादूगर कहना शुरू कर दिया।
6. खेलते समय लेखक इस बात का ध्यान रखते थे कि हार या जीत उनकी नहीं, बल्कि पूरे देश की है। ऐसा इसलिए क्योंकि उनके अन्दर देशभक्ति कूट-कूट कर भरी थी। वह अपने से भी ऊपर अपने देश को रखते थे। वे देश के लिए खेलते थे और उसी के लिए जीतते थे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. 'गोल' पाठ के आधार पर कहा जा सकता है कि लेखक परिश्रमी, लगनशील, खेल-भावना से परिपूर्ण, अनुशासित एवं देशप्रेमी था।

(i) **परिश्रमी**—ध्यानचंद परिश्रमी थे। वे अपने काम को ईमानदारी से करते थे। उनका जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था, लेकिन अपनी मेहनत के बल पर वे लोकप्रियता की चोटी पर पहुँच गए थे।

(ii) **लगनशील**—प्रारम्भ में खेलों में उनकी विशेष रुचि नहीं थी। लेकिन जब सूबेदार मेजर तिवारी ने उन्हें हॉकी खेलने के लिए प्रोत्साहित किया तो वे हॉकी खेलने लगे। हॉकी के प्रति अपनी लगन के कारण वे हॉकी के जादूगर कहलाए।

(iii) **खेल-भावना से परिपूर्ण**—ध्यानचंद के अन्दर खेल-भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। इसी भावना के कारण उन्होंने हॉकी मारने वाले खिलाड़ी को हॉकी मारने की बजाय उसकी टीम पर एक के बाद एक छः गोल करके बदला लिया।

(iv) **अनुशासित**—ध्यानचंद हमेशा अनुशासन में रहकर ही आगे बढ़ने की कोशिश करते थे। इसी अनुशासित जीवन के कारण उनकी कभी किसी खिलाड़ी के साथ नोंक-झोंक नहीं हुई।

(v) देशप्रेमी—ध्यानचंद अपने देश से अत्यधिक प्रेम करते थे। यही कारण था कि वे खेलते समय यह ध्यान रखते थे कि हार या जीत उनकी नहीं अपितु देश की होती है। यहाँ तक कि देश प्रेम के कारण ही उन्होंने जर्मनी की सेना में उच्च पद भी ठुकरा दिया था।

(vi) मित्रवत् तथा सहयोगी—ध्यानचंद अपनी टीम के खिलाड़ियों को अपना पक्का मित्र समझते थे। वे गेंद को विरोधी टीम के गोल-पोस्ट तक ले जाकर, गेंद अन्य खिलाड़ियों को दे देते थे। इस प्रकार वे अन्य खिलाड़ियों को गोल करने में सहयोग करते थे।

2. ध्यानचंद का मानना था कि बुरा करने वाला आदमी हर समय इस बात से डरता है कि उसके साथ भी बुराई की जाएगी। इस कारण वह अपने काम में मन नहीं लगा पाता और वह पिछड़ता चला जाता है। यही कारण था कि ध्यानचंद बुराइयों से सदैव दूर रहना चाहते थे।

सैंपर्स एण्ड माइनर्स टीम के खिलाड़ी जब ध्यानचंद के कब्जे से गेंद छीनने में बार-बार असफल हो रहे थे तो झुँझलाहट तथा गुस्से में एक खिलाड़ी ने उनके सिर पर हॉकी-स्टिक मार दी थी। ध्यानचंद के सिर से खून बहने लगा और उन्हें मैदान से बाहर ले जाना पड़ा। वे चाहते तो बदले में उस खिलाड़ी के सिर पर अपनी हॉकी-स्टिक मार सकते थे लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने सैंपर्स एण्ड माइनर्स की टीम पर एक के बाद एक छः गोल दागकर अपना गुस्सा निकाला और अपना बदला ले लिया।

**

3 पहली बूँद

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

मेरी समझ से

(क) 1. अंकुर, 2. बादल।

(ख) *चर्चा*—**1.** *धरती के अन्तर में बीज निर्जीव-सा पड़ा रहता है। गर्मी के कारण सूखी हुई धरती में वह मरा हुआ-सा पड़ा रहता है, लेकिन जैसे ही धरती पर वर्षा की बूँदें पड़ती हैं, बीज को नव-जीवन मिल जाता है तथा उसमें से अंकुर फूटकर बाहर निकल आता है।*

2. कवि कल्पना लोक में विचरता है उसे नीला-नीला आसमान किसी सुन्दरी की नीली आँखों जैसा लगता है और आकाश में तैर रहे बादल उसे आँखों की सजल पुतलियों जैसे प्रतीत होते हैं।

मिलकर करें मिलान

कविता की पंक्तियाँ	भावार्थ
1. आसमान में उड़ता सागर, लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर	**2.** बादल
2. बजा नगाड़े जगा रहे हैं, बादल धरती की तरुणाई	**1.** मेघ गर्जना
3. नीले नयनों-सा यह अम्बर, काली पुतली-से ये जलधर।	**4.** आकाश
4. वसुंधरा की रोमावलि-सी, हरी दूब पुलकी-मुसकाई।	**3.** हरी दूब

पंक्तियों पर चर्चा

आसमान में ..... धरती की तरुणाई।

अर्थ—पहली बूँद कविता से ली गई इन पंक्तियों में कवि गोपाल कृष्ण कौल कहते हैं कि वर्षा की ऋतु आ गई है। आसमान में जल से भरे हुए बादल घुमड़ रहे हैं। बिजली चमक रही है। बादलों की गर्जन नगाड़ों के आवाज जैसी लग रही है। ऐसा लगता है कि बादल नगाड़े बजा-बजाकर सूखी धरती के यौवन (हरियाली) को फिर से जगा रहे हों।

नीले नयनों-सा ..... प्यास बुझाई।

अर्थ—पहली बूँद कविता से ली गई इन पंक्तियों में कवि गोपाल कृष्ण कौल कहते हैं कि नीला आसमान किसी सुन्दरी की नीली-नीली आँखों जैसा है और काले-काले बादल इन नीली आँखों की काली पुतली जैसे लग रहे हैं। ऐसा लगता है कि गर्मी की ऋतु में सूख चुकी धरती के दुखों से दु:खी होकर बादल वर्षा के रूप में आँसू बहा रहा हो। इस प्रकार धरती की प्यास बुझ जाती है और वह हरी-भरी हो जाती है।

सोच-विचार के लिए

(1) धरती के सूखे होठों पर बरसात की पहली बूँद अमृत के रूप में गिरती है। बूँद के गिरते ही ऐसा लगता है जैसे गर्मी से बेजान और सूखी पड़ी धरती को वर्षा की बूँदों से नया जीवन मिल गया हो। धरती में नया जीवन उग आई हरी-भरी दूब घास के रूप में साफ दिखाई देती है। इस प्रकार वर्षा की पहली बूँद से धरती की प्रसन्नता प्रकट होती है।

(2) कविता में नीले आकाश को किसी सुन्दरी की नीली-नीली आँखों के समान और काले बादल को उन नीली-नीली आँखों की काली-काली पुतलियों के समान बताया गया है।

कविता की रचना

(1) बजा नगाड़े जगा रहे हैं,
बादल धरती की तरुणाई।
(2) नीले नयनों सा यह अम्बर,
काली पुतली से ये जलधर।
(3) वसुंधरा की रोमावलि-सी,
हरी दूब पुलकी-मुसकाई।
(4) अंकुर फूट पड़ा धरती से,
नव-जीवन की ले अँगड़ाई।

चर्चा—*इन समस्त पंक्तियों में मानवीकरण अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया गया है। जब किसी बेजान वस्तु, भाव या विचार को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है, जैसे वह सजीव हो तो वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।*

यहाँ प्रथम पंक्ति में बादलों की गर्जन को नगाड़ों की आवाज तथा बादलों को नगाड़े बजाने वाले के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय पंक्तियों में नीले आकाश को किसी सुन्दरी की नीली आँखों के रूप में तथा बादलों को काली पुतली के रूप में मानवीकरण किया गया है।

तृतीय पंक्ति में कवि ने वर्षा के मौसम में धरती पर उग आई हरी-हरी दूब घास को वसुंधरा नामक युवती के वक्षस्थल पर दिखाई देने वाले सुनहरे रोओं की संज्ञा दी है।

बीज के अंकुर के धरती से बाहर निकलने का भी मानवीकरण किया गया है और कहा है कि मृत-सा पड़ा बीज वर्षा की बूँदों से नया जीवन पा गया है और अँगड़ाई लेकर धरती से बाहर निकल आया है।

शब्द एक अर्थ अनेक

'फूट' शब्द का प्रयोग करते हुए अनेक वाक्य—

1. **घड़ा फूटना—** हमने आज ही नया घड़ा खरीदा था, मगर गिरकर फूट गया।
2. **गुस्सा फूटना—** भारत में दिन-प्रतिदिन बढ़ती महँगाई को लेकर जल्दी ही लोगों का गुस्सा फूट पड़ेगा।
3. **सिर फूटना—** आन्दोलन कर रहे लोगों पर जब पुलिस ने लाठियाँ बरसाईं तो न जाने कितने लोगों के सिर फूट गए।
4. **किरण फूटना—** पहली किरण फूटते ही हम यात्रा के लिए निकल पड़ेंगे।
5. **फूट एक फल—** फूट केवल वर्षा ऋतु में मिलता है, लेकिन इस फल में न तो मिठास होती और न खटास।

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

धर शब्द से बने कुछ शब्द—

1. हलधर = हल को धारण करने वाला। बलराम, किसान।
2. विषधर = विष को धारण करने वाला। शिवजी, साँप।
3. धरणीधर = धरती को धारण करने वाला। शेषनाग, गाय।
4. गिरिधर = गिरि को धारण करने वाला। श्रीकृष्ण, हनुमानजी।
5. गदाधर = गदा को धारण करने वाला। भीम, हनुमानजी।
6. गंगाधर = गंगा को धारण करने वाला। शिवजी, भागीरथ।

शब्द पहेली

(क) नगाड़ा, **(ख)** नयन **(ग)** जलधर **(घ)** दूब **(ङ)** अश्रु **(च)** अंबर।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) बारिश आने पर मेरा मन प्रसन्नता से झूमने लगता है। मेरा मन कहता है कि वर्षा की बूँदों में भीगते हुए अपने दोस्तों के साथ हरे-भरे खेतों और जंगलों में कहीं निकल जाओ। धरती पर जमा हो गए वर्षा के पानी में छपाक-छपाक खूब अठखेलियाँ करूँ। खेतों में पीऊ-पीऊ करके खुशी में नाच रहे मोरों के साथ मैं भी नाचने लगूँ। मेरा मन करता है कि आकाश में उड़ रहे काले-काले बादलों पर बैठकर कहीं दूर सैर करने के लिए निकल जाऊँ। फूलों पर मँडरा रही तितलियों को अपना दोस्त बनाकर घर ले आऊँ, जिससे मेरा घर भी उनके पंखों की तरह रंग-बिरंगा हो जाए। आकाश में चमक रही बिजली को अपने छोटे घर में कैद कर लूँ ताकि मेरा घर भी जगमगाता रहे। वर्षा के पानी में भीगते हुए मेरा खूब धमाल करने का मन करता है, मगर मैं ऐसा कुछ भी नहीं कर पाता क्योंकि मेरी माँ मेरे बीमार पड़ जाने के डर से मुझे बरसात के समय कान पकड़कर घर बैठा लेती हैं। वे न तो मुझे घर से बाहर निकलने देती हैं और न छत पर ही जाने देती हैं। बस मैं मन मसोसकर रह जाता हूँ।

(ख) बारिश—मुझे सबसे अधिक वर्षा की ऋतु अच्छी लगती है क्योंकि बारिश पृथ्वी की जान है। पृथ्वी की सुन्दरता हमेशा बारिश पर निर्भर करती है। वर्षा ऋतु में वृक्ष, लता, बेल सभी हरे-भरे हो जाते हैं। धरती-तल पर चारों ओर हरी-भरी घास सभी का मन मोह लेती है। चारों ओर दूर-दूर तक फैली हरियाली सभी जीव-जन्तुओं का मन मोह लेती है। तरह-तरह के फूलों की खुशबू पूरे वातावरण को महका देती है। वातावरण शुद्ध हो जाता है, फूलों का रस चूसने के लिए उन पर मँडराती-तितलियाँ, भौंरे एवं मधुमक्खियों की गुंजन मन मोह लेती है। भीषण गर्मी के कारण अपने प्राण बचाने को मेढ़क और अन्य छोटे जीव बारिश का इशारा पाते ही बाहर निकलकर खुशी में टर्र-टर्र करके या अन्य आवाजें निकालकर अपनी खुशी व्यक्त करते हैं। रात के समय हवा में बार-बार चमक रहे जुगनुओं को देखकर ऐसा लगता है जैसे वे अपने साथियों को ढूँढ़ रहे हों। रात के सुनसान अँधेरे में मेढ़कों के टर्राने की आवाज तथा झींगुरों की तीखी आवाज वातावरण को रहस्यमय बना देती है।

वर्षा को देखकर किसानों के चेहरे भी खिल उठते हैं। वे भोर में शीघ्र उठकर अपने खेतों के लिए निकल पड़ते हैं। वे संसार का पेट भरने के लिए खेतों में अनाज उत्पन्न करने की जतन में लग जाते हैं। ऐसी मनभावन वर्षा किसको अच्छी नहीं लगेगी। मैं भी वर्षा का हमेशा इन्तजार करता हूँ ताकि बारिश की फुहारों में मैं अपने साथियों के साथ भीग सकूँ और मस्ती में झूम सकूँ।

समाचार माध्यमों से

भारी बारिश के कारण दिल्ली में हालात खराब

बाढ़ प्रभावित दिल्ली में मूसलाधार बारिश के चलते हालात और खराब हो गए। तेज बहाव और दबाव के कारण कई स्थानों पर तटबन्ध टूट गए हैं, इससे दिल्ली के शहरी इलाकों में पानी भरने लगा है। हालात इतने बदतर हो गये हैं कि हेलीकॉप्टर की मदद से लोगों को राशन सामग्री मुहैया करवाई जा रही है। देश की राजधानी दिल्ली के कुछ इलाकों में पिछले तीन दिनों से यमुना का पानी भरा हुआ है, नदी से सटे लाल किले, राजघाट, सिविल लाइन्स, कश्मीरी गेट जैसे इलाकों की सड़कें पानी से सराबोर हैं, सड़कों पर गाड़ियाँ रेंगती हुई नजर आ रही हैं। निचल इलाकों में बाढ़ जैसी स्थिति के चलते अभी तक 23 हजार से ज्यादा लोगों को वहाँ से निकाला जा चुका है।

इस बीच यमुना के जलस्तर में मामूली कमी आई है। हालांकि अभी भी खतरे के निशान (205.33 मीटर) से ऊपर बह रही है। 15 जुलाई की सुबह यमुना का जलस्तर 208.48 मीटर मापा गया। इससे पहले नदी के जलस्तर ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिये हैं। यह स्थिति तब बनी है, जब बीते दिनों हरियाणा स्थित हथिनी कुंड बैराज से भारी मात्रा में यमुना में पानी छोड़ा गया दिल्ली में जलभराव का आलम ये है कि अब तक पाँच लोग इसके चलते अपनी जान गँवा चुके हैं। तीन प्रमुख वाटर ट्रीटमेंट प्लांट बन्द हो चुके हैं। ऐसे में आशंका जताई गई है कि आने वाले दिनों में दिल्ली वालों को रोजमर्रा के प्रयोग में आने वाले पानी की कमी का संकट भी झेलना पड़ सकता है। कई इलाकों में स्कूल बन्द किए गए हैं। कुछ शमशान घाट भी बन्द हैं। दिल्ली की रफ्तार जैसे रुक-सी गई है।

सृजन

'वर्षा और धरा का सौंदर्य'।

इन्हें भी जानें

चर्चा—भारत त्योहारों का देश है। यहाँ हर महीने कोई न कोई त्योहार मनाया जाता है। इसलिए हम भारतीय स्वभाव से ही उत्सवप्रिय होते हैं और धूम-धाम से हर त्योहार

को मनाते हैं। भारत में विभिन्न उत्सवों पर भिन्न-भिन्न वाद्ययंत्र बजाए जाते हैं। इनमें शहनाई, बीन, तबला, तुरही आदि प्रमुख हैं। लेकिन जब तक त्योहारों पर ढोलक की थाप सुनाई न दे तब तक त्योहार अधूरा-सा लगता है।

ढोलक — ढोल, ढोलक या ढोलकी शुद्ध रूप से भारतीय वाद्ययंत्र है। ये हाथ या छड़ी से बजाए जाने वाले छोटे नगाड़े हैं जो मुख्य रूप से लोकगीत संगीत या भक्ति संगीत को ताल देने के काम आते हैं। होली के गीतों में तो ढोलक का जमकर प्रयोग किया जाता है। भारतीय समाज में विवाह-शादियों या जन्मोत्सव ढोलक की थाप पर जमकर नाच-गाना होना आम बात है। प्राचीनकाल में ढोलक का उपयोग पूजा-प्रार्थना में ही नहीं अपितु दुश्मनों पर हमला करने, खूँखार जंगली जानवरों को भगाने, समय बताने तथा चेतावनी देने के साधन के रूप में भी किया जाता था।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ग), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग), **5.** (ख)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. धरती, आसमान। **2.** समुद्र, बादल। **3.** बलराम, किसान। **4.** सूखी हुई, निष्क्रिय **5.** अश्रु।

सत्य-असत्य

1. असत्य **2.** सत्य **3.** सत्य **4.** असत्य **5.** सत्य।

सुमेलन

स्तंभ (अ)	स्तंभ (ब)
1. सभी को समान रूप से देखने वाला।	**4.** समदर्शी
2. दस वर्ष का समय।	**6.** दशक
3. जो व्यक्ति किसी का अहसान न मानता हो।	**5.** कृतघ्न
4. जिस बालक के माता-पिता दोनों ही न हों।	**3.** अनाथ
5. दूसरों पर उपकार करने वाला मनुष्य।	**1.** परोपकारी
6. बड़ा भाई।	**2.** अग्रज

अतिलघु/लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. धरती के सूखे होठों पर बारिश की बूँद अमृत के समान गिरती है। धरती पर बूँदों के गिरते ही उसे नया जीवन मिल जाता है। चारों ओर हरियाली छा जाती है। धरती पर छाई हुई हरियाली और फूटते अंकुर ही धरती की प्रसन्नता को प्रकट करते हैं।

2. वर्षा ऋतु में जल से भरे हुए बादल ऐसे दिखाई देते हैं जैसे धरती का सागर बिजलियों के सुनहरे पंख लगाकर आसमान में उड़ रहा है।

3. पहली बूँद कविता में नीले आकाश को नीली आँखों के समान और काले बादलों को उन नीली-नीली आँखों की पुतलियों के समान बताया गया है।

4. गर्मी के मौसम में भीषण गर्मी और जल के बिना धरती सूख चुकी है। वह उसी प्रकार से निस्तेज और निष्क्रिय हो चुकी है। जिस प्रकार बुढ़ापे में मनुष्य अपना तेज और सुन्दरता खो देता है। सूखी धरती अनुपजाऊ हो जाती है। इसलिए कवि उसे बूढ़ी धरती कहकर सम्बोधित कर रहा है।

5. गर्मी और पानी के अभाव में बूढ़ी हो चुकी पृथ्वी पुन: शस्य-श्यामला होने को आतुर है। बरसात का पानी ही उसे शस्य-श्यामला बना सकता है।

6. कवि गोपाल कृष्ण कौल द्वारा रचित कविता में पृथ्वी और जीव-जगत के लिए वर्षा के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। कवि कहता है कि जैसे ही सूख चुकी धरती पर वर्षा की बूँदें गिरती हैं, वह प्रसन्नता से खिल उठती है। पृथ्वी की यह प्रसन्नता चारों ओर फैली हुई हरियाली के रूप में साफ-साफ प्रकट होती है। वर्षा-जल के रूप में जब धरती पर अमृत बरसता है तो उसके सूखे शरीर में प्राण पड़ जाते हैं। उसके अन्तर में छिपे हुए बीज में से अंकुर फूट पड़ते हैं। चारों ओर सौंदर्य बिखर जाता है।

7.

शब्द	तत्सम रूप	शब्द	तत्सम रूप
रात	रात्रि	प्यास	पिपासा
दिन	दिवस	सूरज	सूर्य
सुनहला	स्वर्णिम	आँसू	अश्रु
किवाड़	कपाट	आम	आम्र
छाता	छत्र		

8.

अशुद्ध शब्द	**शुद्ध शब्द**
अमरित	अमृत
परिथ्वी	पृथ्वी
हिरदै	हृदय
किरसक	कृषक
रितु	ऋतु
रिचा	ऋचा
दरपन	दर्पण
आशीरवाद	आशीर्वाद
सरप	सर्प
सिच्छक	शिक्षक

9.

शब्द	**पर्यायवाची शब्द**
आसमान	गगन, नभ
माता	मातृ, जननी
भाई	भ्राता, सहोदर
कमल	जलज, नीरज
चन्द्रमा	रजनीश, सुधाकर
पुष्प	कुसुम, सुमन
आम	आम्र, रसाल
पक्षी	विहग, पखेरू
घर	निकेतन, सदन
वृक्ष	तरु, विटप

10.

शब्द	**अर्थ**
पावस	वर्षा ऋतु
अधर	धरती (आकाश के बीच का स्थान), नीचा, होंठ
वसुंधरा	पृथ्वी
रोमावलि	शरीर पर छोटे-छोटे, सुनहरे बालों (रोंयों) की पंक्ति
दूब	एक प्रकार की कोमल घास
स्वर्णिम	सुनहरा
तरुणाई	यौवन, जवानी
जलधर	जल को धारण करने वाला समुद्र, बादल
विगलित	पिछला हुआ
चिर प्यास	बहुत समय से प्यासी होने का भाव
शस्य	फसल
श्यामला	हरी-भरी

**

4 हार की जीत

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

मेरी समझ से

(क) **(1)** बाबा भारती के मन से चोरी का डर समाप्त हो गया।

(2) बाबा भारती ने डाकू को घमंड से घोड़ा दिखाया।

(ख) **(1)** बाबा भारती के पास केवल एक ही वस्तु थी, जिसे वे अत्यधिक प्रेम करते थे। उनका घोड़ा सुलतान उनके बेटे जैसा था। उसके अलावा उनके पास कुछ भी नहीं था। घोड़ा छीन लिए जाने के बाद उनके पास ऐसा कुछ नहीं बचा था, जिसके खोने का उन्हें डर हो।

(2) सामान्य मनुष्य जरा-सी शक्ति, धन या सफलता पाकर इतराने लगता है। वह स्वयं भी अपनी सफलता की तारीफें करने लगता है और चाहता है कि सभी लोग उसकी तारीफें करें। वह बड़े घमंड के साथ अपनी अच्छी वस्तुओं को दिखाता है और मुस्कराकर प्रशंसा सुनता है। इसलिए लेखक ने "बाबा भारती भी मनुष्य ही थे" के समर्थन में कहा है, "बाबा ने डाकू को घमंड से घोड़ा दिखाया।"

शीर्षक

(क) यह बाबा भारती और डाकू खड्गसिंह के मनोविज्ञान की कहानी है। डाकू खड्गसिंह अपंग व्यक्ति का वेश बनाकर बाबा को रास्ते में मिला और उसने बाबा की करुणा का लाभ उठाया तथा घोड़ा छीनकर ले गया। इस बिन्दु पर बाबा की हार और डाकू की जीत हो गई थी। किन्तु डाकू खड्गसिंह बाबा के विचारों से इतना प्रभावित हुआ कि उसका हृदय परिवर्तन हो गया। उसे इस सत्य का पता चल गया कि उस घोड़े से अधिक कीमती, असहाय और गरीबों की सेवा है। इसलिए उसने रात के अँधेरे में चुपचाप घोड़े

को यथास्थान बाँध दिया। यहाँ पर वह घोड़े को हारकर भी नैतिक रूप से जीत गया था। मेरे विचार से कहानी का 'हार की जीत शीर्षक' उचित है।

(ख) यदि मुझे इस कहानी को कोई अन्य नाम देना होगा तो मैं इसे 'मानवता की जीत' दूँगा। क्योंकि बाबा भारती की एक छोटी-सी शिक्षा ने डाकू खड्गसिंह का हृदय परिवर्तन कर दिया था। उसके दिल में मानवता की भावना जगा दी थी। इस भावना ने डाकू के अमानवीय गुणों को हरा दिया था और उसे बुरे आदमी से अच्छा आदमी बना दिया था।

(ग) बाबा भारती ने डाकू खड्गसिंह से वचन लिया कि वह उसके द्वारा छीन लिए गए घोड़े की घटना किसी को भी नहीं बताएगा।

पंक्तियों पर चर्चा

(1) "भगवत-भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। बाबा भारती अपने घोड़े को अत्यधिक प्रेम करते थे।

उनके जीवन में भगवान के भजन, सेवा और पूजा के पश्चात् यदि अन्य कोई महत्वपूर्ण काम था तो वह सुलतान की देखभाल करना था। उन्होंने गृहस्थ जीवन से संन्यास ले लिया था। यहाँ तक कि उन्हें शहर की भीड़-भाड़ वाली जिन्दगी से भी घृणा हो गई थी। वे अब पूरी तरह से भगवान की पूजा-सेवा में डूब चुके थे। भगवान की भक्ति के बाद जितना भी समय बचता था, उसे वे घोड़े की देखभाल में लगा देते थे।

(2) सुलतान जैसा सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट, शक्तिशाली घोड़ा उस इलाके में किसी के पास नहीं था। उसकी मतवाली चाल सभी का दिल जीत लेती थी। बाबा को अपने घोड़े की तारीफें सुनकर बहुत खुशी होती थी, इसलिए उन्होंने बड़े घमंड के साथ घोड़ा खड्गसिंह को दिखाया था। खड्गसिंह ने सैकड़ों घोड़े देखे थे, लेकिन सुलतान जैसा बढ़िया घोड़ा उसने कभी नहीं देखा था। इसलिए उसने घोड़े को बड़े आश्चर्य के साथ देखा था।

(3) वह डाकू था। उसके पास ताकत थी। उसके गिरोह में बहुत से डाकू थे। लूटपाट करना उसकी आदत थी। ताकतवर होने के कारण वह किसी की कोई भी वस्तु जबरदस्ती छीन सकता था। इसलिए उसे जो भी वस्तु पसन्द आ जाती थी, वह उस पर अपना ही अधिकार समझता था।

(4) बाबा भारती को घोड़ा छीन लिए जाने के दु:ख से अधिक इस बात की चिंता थी कि इस घटना के बाद लोग असहाय और दीन-दुखियों की सहायता करना छोड़ देंगे। अत: उन्होंने अपने मोह लगभग को तुरन्त नष्ट कर दिया। उन्होंने घोड़े के प्रति घृणा और चिंता प्रकट करती आँखों से देखा और यह कहकर कि "यह घोड़ा अब तुम्हारा हो चुका है," वहाँ से चले गए।

(5) बाबा भारती सुबह-अँधेरे में ही नहा-धोकर सबसे पहले अपने घोड़े के पास जाते थे। यह उनकी आदत बन चुकी थी। उस दिन भी वे सुबह जल्दी उठकर नहाए और आदतानुसार उनके कदम अस्तबल की ओर चल दिए। वे भूल गए थे कि उनका प्रिय घोड़ा उनसे छीन लिया गया है। किन्तु जैसे ही वे अस्तबल के फाटक पर पहुँचे उन्हें याद आ गया कि सुलतान अब उनके पास नहीं है। उसे खड्गसिंह द्वारा छीन लिया गया है। तब वे ठिठक गए और वापस आने को मुड़ गए।

सोच-विचार के लिए

(क) बाबा भारती एवं डाकू खड्गसिंह के आँसुओं का मेल हो गया था।

(ख) दोनों के आँसुओं में यह अन्तर था कि बाबा भारती के आँसुओं में प्रसन्नता का समावेश था। उन्हें इस बात की खुशी थी कि संसार में विश्वास जीवित रहेगा और अपाहिजों को मदद मिलती रहेगी। खड्गसिंह के आँसुओं में पश्चात्ताप भाव था। मगर उसे इस बात की खुशी भी थी कि उसके अमानवीय कृत्य से आपसी विश्वास मरते-मरते बच गया था।

दिनचर्या

(क) बाबा भारती की दिनचर्या: बाबा भारती सांसारिक जीवन से संन्यास ले चुके थे। उनके पास अपना कहने के लिए घोड़े सुलतान के अलावा कुछ नहीं था। शहर की भीड़-भाड़ से नफरत हो जाने के कारण वे शहर से दूर एकान्त स्थान पर एक मन्दिर में रहने लगे थे। उनके पास भगवत-भजन और घोड़े की देखभाल करने के अलावा करने को कोई भी काम नहीं था। वे सुबह जल्दी उठकर स्नान करने के पश्चात् भगवान की पूजा-सेवा करते होंगे। उनका भजन-कीर्तन करते होंगे। उसके पश्चात् वे अस्तबल में जाकर अपने घोड़े सुलतान को दाना खिलाते होंगे। उसे पानी पिलाते होंगे। फिर वे स्वयं, अपने हाथों से नाश्ता तैयार करके भगवान को भोग लगाकर, स्वयं नाश्ता करते होंगे। सुबह 10 बजे के आस-पास वे मन्दिर की सफाई आदि का कार्य करते होंगे। तत्पश्चात् अपने घोड़े को खरहरा करते होंगे। उसे घास आदि खाने को देते होंगे। दोपहर में वे भोजन बनाकर भगवान का भोग लगाकर स्वयं भी

खाना खाते होंगे। तीन बजे के आस-पास मन्दिर की सफाई करके, घोड़े को पानी पिलाते होंगे। शाम को भजन-पूजा करते होंगे। तत्पश्चात् सूर्यास्त के समय घोड़े पर सवार होकर घण्टे भर को घूमने जाते होंगे। वहाँ से लौटकर घोड़े को दाना-पानी देकर भगवान की आरती करते होंगे। तब भोजन करके खुद भी सो जाते होंगे।

(ख) मेरी दिनचर्या : मैं निधि कश्यप कक्षा छ: की छात्रा हूँ।

- मैं सुबह 6 बजे जागती हूँ।
- तैयार होकर थोड़ा-सा नाश्ता करके स्कूल जाती हूँ।
- दोपहर 2 बजे स्कूल से वापस घर लौटती हूँ। खाना खाकर होमवर्क पूरा करती हूँ।
- चार बजे के आस-पास थोड़ा आराम करने को लेटती हूँ। पाँच बजे ट्यूशन पढ़ाने के लिए मैम आ जाती हैं।
- होम ट्यूशन के बाद सामने वाले पार्क में अपने दोस्तों के साथ खेलने चली जाती हूँ।
- 7 बजे पापा के घर लौटने पर मैं भी घर आ जाती हूँ। फिर पापा के साथ मस्ती शुरू हो जाती है। मेरे पापा मुझे बहुत प्यार करते हैं। मैं भी अपने पापा को सबसे ज्यादा प्यार करती हूँ।
- 8:30 पर हम सब खाना खाते हैं, थोड़ा टी. वी. देखती हूँ।
- फिर पढ़ने बैठती हूँ। पढ़ने के बाद लगभग 9:30 पर मैं सो जाती हूँ।
- मेरी दिनचर्या में सिर्फ रविवार या अन्य किसी छुट्टी के दिन बदलाव आता है। अन्यथा मेरी दिनचर्या नियमित रहती है।

कहानी की रचना

(क) इस कहानी की मुझे निम्नलिखित बातें बहुत पसन्द आईं–

बाबा भारती सज्जन पुरुष हैं। उन्होंने संसार के प्रति मोह-माया को छोड़कर संन्यास ले लिया है। अब वे अपना समय भगवान की भक्ति में ही गुजारते हैं। सांसारिक सुविधाओं का परित्याग करके वे गाँव से दूर एक मन्दिर में रहते हैं। साधारण जीवन जीते हैं। श्रेष्ठ गुण होने के बावजूद वे मनुष्य हैं और उनमें मनुष्यों वाली कमजोरियाँ हैं तो श्रेष्ठ गुण भी हैं। अपने सुन्दर-सजीले घोड़े को लेकर उनमें घमण्ड कूट-कूट कर भरा है। उन्हे अपने घोड़े की तारीफ सुनना अच्छा लगता है। मगर समाज की भलाई के लिए पलभर में अपने परमप्रिय घोड़े सुलतान से नाता तोड़ देते हैं।

खड्गसिंह में लाख बुराइयाँ हैं। मगर वह सज्जन लोगों का सम्मान करता है। वह स्वयं को बाबा भारती का दास कहता है। वह निर्दयी है। वह लोगों को मारता-लूटता है। मगर उसके अन्दर भी समाज की भलाई करने की भावना छुपी है। इसी गुण के कारण वह अपनी करनी पर पश्चात्ताप करता है और बाबा को उनका घोड़ा लौटा देता है।

(ख) 'हार की जीत' कहानी के संवाद: हार की जीत कहानी के संवाद कहानी-कला की दृष्टि से खरे उतरते हैं। उस कहानी के संवाद छोटे-छोटे, सरल और चुटीले हैं:

खड्गसिंह, क्या हाल है?

खड्गसिंह ने उत्तर दिया, "आपकी दया है।"

"इधर कैसे आना हुआ?"

"सुलतान की चाह खींच लाई।"

इस कहानी के इन संवादों ने कहानी की गतिशीलता को बढ़ाया है। उसकी गति में रुकावट नहीं बने हैं। इन संवादों के द्वारा कहानी की मूल भावना उजागर हो जाती है।

"क्यों? तुम्हें क्या कष्ट है?"

"बाबा, मैं दुखियारा हूँ। मुझ पर दया करो।"

आदि संवाद कहानी में सजीवता और जीवंतता लाने का काम करते हैं।

मुहावरे कहानी से

कहानी से चुने गए कुछ मुहावरे और उनका वाक्य प्रयोग–

(1) लट्टू होना : मेरे पिताजी जयपुर शहर की सुन्दरता पर लट्टू हो गए और उन्होंने उसी शहर में बस जाने का निर्णय कर लिया।

(2) हृदय पर साँप लोटना : अपने मित्र की सफलता को देखकर मधुर के हृदय पर साँप लोट गए हैं।

(3) फूले न समाना : कक्षा में प्रथम आने पर सुयश फूला न समाया।

(4) मुँह मोड़ लेना : रानी ने रोते हुए कहा कि जरा-सा बुरा वक्त क्या आया, सभी मित्रों ने मुँह मोड़ लिया।

(5) मुँह खिल जाना : हमारे विद्यालय के दस छात्रों द्वारा दसवीं बोर्ड की परीक्षा योग्यता सूची में स्थान प्राप्त करने पर स्कूल के सभी विद्यार्थियों और अध्यापकों के खुशी से मुख खिल उठे।

(6) न्योछावर कर देना : भारतीय युवा देश पर अपनी जान न्योछावर करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।

अन्य मुहावरे—

(1) पाँव मन-मन भर भारी होना : अपनी असफलता के कारण दु:ख और निराशा में डूबा उत्सव अपने गाँव की ओर यों जा रहा था जैसे उसके पाँव मन-मन-भर भारी हो गए हों।

(2) मन मोह लेना : विद्यालय के वार्षिकोत्सव में एक छोटी-सी बच्ची के कविता पाठ ने सबका मन मोह लिया।

(3) छवि अंकित होना : उसकी सुन्दरता का क्या कहना, जो भी उसे देख लेता है हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।

(4) आँखों के सामने से गुजरना : मैंने अभी तक हजारों विद्यार्थियों को पढ़ाया है मगर तुम्हारे भाई जैसा मेधावी छात्र मेरी आँखों के सामने से कभी नहीं गुजरा।

(5) हृदय में हलचल होना : तीन दिन से लापता अपने छोटे-से बेटे के मिल जाने पर उसकी बेहाल माँ के हृदय में हलचल मच गई।

कैसे-कैसे पात्र

शब्द चित्रों की पूर्ति—

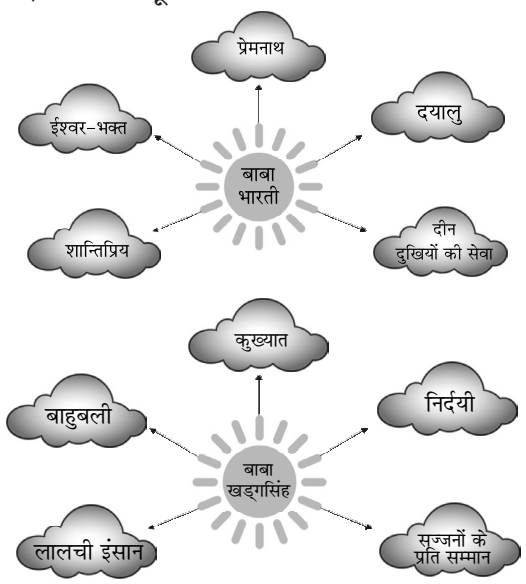

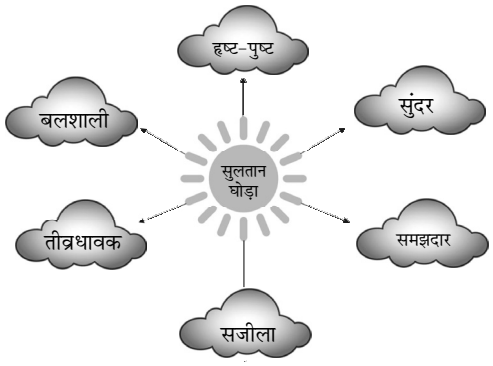

आपने जो शब्द लिखे हैं, वे किसी की विशेषता, गुण और प्रकृति के बारे में बताने के लिए उपयोग में लाए जाते हैं। ऐसे शब्दों को विशेषण कहते हैं।

पाठ से आगे

सुलतान की कहानी

सुलतान की कहानी—मेरा नाम सुलतान है। मैं एक घोड़ा हूँ। बाबा भारती मेरे स्वामी हैं। मैं काले रंग का, ऊँची कद-काठी वाला एवं बलशाली हूँ। मेरी चाल ऐसी मतवाली है, जैसे जंगल में कोई मोर नाच रहा हो। मेरी चाल में एक संगीत जैसी लय-ताल भी है। इसलिए जिसकी भी नजर मुझ पर पड़ती है मेरा दीवाना हो जाता है। मैं अपने मालिक के प्रति उसी प्रकार से वफादार हूँ जैसे कि अपनी संतान होती है। मैं अपने मालिक के हर संकेत को तुरन्त समझ लेता हूँ और उसी के अनुसार कार्य करता हूँ। मेरे मालिक मुझे अत्यधिक प्रेम करते हैं। मेरे जैसा घोड़ा आस-पास के इलाके में किसी के पास नहीं है। इसलिए बाबा भारती को मेरे ऊपर गर्व है। उन्हें अपने ऊपर इस बात का बहुत घमण्ड है कि मैं अद्वितीय घोड़ा हूँ। वैसे तो बाबा भारती भगवान के भजन और भक्ति में ही लगे रहते हैं, मगर उसके बाद अपना सारा समय मेरी देखभाल में ही गुजारते हैं। वे मुझे अपने हाथों से घास तथा दाना खिलाते हैं। वे अपने ही हाथों से मुझे पानी पिलाते हैं तथा खरहरा करते हैं। मुझे उनके हाथों से खरहरा (मालिश) करवाना बहुत भाता है। उनका मेरे अलावा इस दुनिया में कोई नहीं है, इसलिए वे सुबह उठते ही सबसे पहले मेरे पास ही आते हैं। मुझे प्यार से थपथपाते हैं, सहलाते हैं और कुछ खाने को भी देते हैं। उसके बाद ही वे भगवान की सेवा-पूजा करते हैं। शाम को भी जब तक वे मेरी पीठ पर सवार होकर **8-10** मील का चक्कर नहीं लगा लेते उन्हें चैन नहीं पड़ता। जब मैं उन्हें अपनी पीठ पर बैठाकर सरपट दौड़ता हूँ तो उनका

चेहरा खुशी के मारे खिल उठता है। मुझे भी उन्हें सैर कराने में दिली-खुशी होती है। मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे बाबा भारती जैसे स्वामी मिले हैं। जब डाकू खड्गसिंह ने मुझे उनसे छीन लिया था तो मैं बहुत परेशान और दुखी हो गया था। उस दिन मुझसे कुछ भी खाया-पिया नहीं गया था, इसलिए मैं भूखा-प्यासा रहा था। मगर भगवान की असीम कृपा है कि उन्होंने डाकू का हृदय परिवर्तन कर दिया और मुझे बाबाजी से पुनः मिला दिया।

मन के भाव

(क) 1. चकित—

(i) घोड़े की सुन्दरता को देखकर डाकू खड्गसिंह के अन्दर आश्चर्यचकित होने के भाव आए थे।

(ii) जब डाकू खड्गसिंह ने घोड़े की मस्त चाल देखी थी तब भी वह चकित रह गया था।

(iii) आशा के विपरीत अपने घोड़े सुलतान को पुनः अस्तबल में पाकर बाबा भारती भी आश्चर्यचकित रह गए थे।

2. प्रसन्नता— जब सुलतान बाबा भारती के पैरों की आहट को पहचान कर जोर से हिनहिनाया तो बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से भर उठे थे।

3. अधीर— (i) सुलतान की कीर्ति को सुनकर डाकू खड्गसिंह उसे देखने को अधीर हो उठा था।

(ii) डाकू खड्गसिंह ने सुलतान के सुन्दर एवं सुडौल शरीर को देखने के पश्चात् उसकी चाल को देखने के लिए बच्चों जैसी अधीरता दिखाई थी।

(iii) बाबा भारती भी मनुष्य थे। वे भी अपनी चीज की प्रशंसा सुनना चाहते थे। इसलिए उनमें भी अपने घोड़े की चाल खड्गसिंह को दिखाने की अधीरता थी।

4. करुणा— सहायता माँग रहे उस अपाहिज की पुकार सुनकर बाबा भारती करुणा से भर उठे थे।

5. डर— खड्गसिंह की धमकी से बाबा भारती डर गए थे।

6. निराशा— बाबा भारती को अपनी आदत के अनुसार अस्तबल की ओर जाते समय जब याद आया कि सुलतान तो उनसे छीन लिया गया था तो निराशा के कारण उनके पाँव मन-मन-भर के भारी हो गए थे।

(ख) (1) चकित— बरसों से बिछुड़े हुए किसी घनिष्ठ मित्र के अचानक बाजार में मिल जाने पर, वार्षिक परीक्षा में आशा से अधिक अंक प्राप्त होने पर, आकाश में अनेक बार बन रहे तीन-तीन इन्द्रधनुषों की सुन्दरता देखकर हम चकित रह जाते हैं।

(2) प्रसन्नता— लगभग हारे हुए क्रिकेट मैच को अन्तिम क्षणों में भारत द्वारा जीत जाने पर, जाते समय घर आए मेहमानों द्वारा दिए गए रुपयों को देखकर और विदेश से चाचाजी के घर लौटने पर मैं प्रसन्नता से खिल उठती हूँ।

(3) अधीर— गर्मी की छुट्टियों में नानी के घर जाने के लिए, स्टेशन पर गाड़ी के इन्तजार में और वार्षिक परीक्षाफल देखने के लिए मैं अधीर रहता हूँ।

(4) करुणा— दुर्घटना में घायल व्यक्ति को तड़पता देखकर, किसी लाचार मनुष्य को भीख माँगते हुए देखकर तथा गरीब बच्चों को कूड़े में से खाना ढूँढ़ता हुए देखकर मेरा हृदय करुणा से भर जाता है।

(5) डर— होमवर्क न होने पर पिटाई का डर, स्कूल जाने के समय बारिश होने का डर, सुनसान रास्ते में अकेले जाने पर डर का अनुभव करते हैं।

(6) निराशा— किसी शादी में जाने का कार्यक्रम अचानक रद्द हो जाने पर, परीक्षा में आशा के विपरीत बहुत कम अंक प्राप्त होने पर तथा इंडिया के मैच हार जाने पर मुझे निराशा घेर लेती है।

साझी समझ

चर्चा– इस कविता में कवि कहता है कि हवा अदृश्य है, उसे हम देख नहीं पाते किन्तु अनुभव कर सकते हैं। केवल पेड़ों के पत्ते ही उसे बहते हुए देख पाते हैं इसलिए वे मिल-मिल कर, हिल-हिल कर खुशी मनाते हैं। यदि हम भी उसे देख पाते तो पत्तों की तरह खुशियाँ मनाते।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क), **2.** (घ), **3.** (घ), **4.** (क), **5.** (ख)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. आनन्द, लहलहाती। **2.** कीर्ति, अधीर। **3.** तीन, रामावाला **4.** विचित्र, प्रसन्न **5.** डाकू खड्गसिंह, आदमी थे।

सुमेलन

सुमेलन

स्तंभ (अ)	स्तंभ (ब)
1. बाबा भारती के घोड़े सुलतान की चाल	**(स)** घटा को देखकर नाचते मोर सरीखी सुन्दर थी।

2.	अपने आप को कंगला कहने वाला वास्तव में	**(य)** डाकू खड्गसिंह ही था।
3.	बाबा भारती को सुलतान को देखकर इतना आनन्द मिलता था	**(ब)** जितना माँ को अपने पुत्र को देखकर मिलता है।
4.	यदि घोड़ा छीन लिए जाने का पता लोगों को लग जाएगा	**(अ)** तो संसार में कोई किसी अपंग की मदद नहीं करेगा।
5.	अस्तबल से लौटते हुए बाबा भारती के आँसू वहाँ गिरे थे	**(द)** जहाँ पर खड़ा होकर खड्गसिंह रोया था।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. बाबा भारती को धोखा देने के लिए डाकू खड्गसिंह अपाहिज का ढोंग करते हुए मार्ग में लेट गया था और उसने बाबाजी से मदद माँगी थी।

2. खड्गसिंह ने स्वयं को मशहूर वैद्य दुर्गादत्त का सौतेला भाई बताया था।

3. "विचित्र जानवर है, देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।" ये शब्द बाबा भारती ने डाकू खड्गसिंह से कहे थे।

4. बाबा भारती को यह गलत-फहमी हो गई थी कि अपने घोड़े सुलतान से बिछुड़ने के पश्चात् वे जीवित नहीं रह सकेंगे।

5. अपने घोड़े सुलतान को देखकर बाबा भारती को असीम आनन्द के भाव का अनुभव होता था।

6. 'तुम इस घटना को किसी के आगे प्रकट न करना', यह कहकर बाबा भारती ने घोड़े की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उससे उनका कोई सम्बन्ध ही न हो।

7. बाबा भारती ने खड्गसिंह से प्रार्थना की थी कि अपाहिज का ढोंग बनाकर घोड़ा लूट ले जाने की घटना को किसी के सामने प्रकट मत करना।

8. बदनामी हमेशा बुरा काम करने वाले की ही होती है। उसे ही सजा भी मिलती है। घोड़ा लूट लिए जाने पर बाबाजी के चरित्र पर कोई आँच नहीं आने वाली थी, इसलिए खड्गसिंह ने यह बात कही।

9. बाबा भारती के कथन का डाकू खड्गसिंह पर यह प्रभाव पड़ा कि उसका हृदय परिवर्तन हो गया। उसे बाबा भारती देवता के समान लगने लगे।

10. इस पंक्ति का यह अर्थ है कि बाबा भारती की शिक्षा से प्रभावित होकर डाकू खड्गसिंह ने भविष्य में बुराई के काम छोड़कर नेक राह पर चलने का प्रण कर लिया था।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बाबा भारती के पास भगवान की भक्ति के पश्चात् जो भी समय बचता था, वह घोड़े की सेवा में अर्पण हो जाता था। वे प्रतिदिन अपने हाथ से घोड़े के शरीर पर खरहरा करते, खुद उसे दाना और घास खिलाते और उसको सहलाने एवं पीठ थपथपाने में प्रसन्नता का अनुभव करते। वे ऐसी लगन, प्यार और स्नेह से सुलतान की देखभाल करते थे मानो वह उनका ही पुत्र हो। उन्होंने भगवान के भजन और घोड़े के लिए संसार की समस्त सुख-सुविधाओं का त्याग कर दिया था और गाँव के बाहर एक मन्दिर में रहने लगे थे।

2. बाबा भारती ने दया करके जिस अपंग आदमी की मदद की थी और उसे उसके गाँव तक पहुँचाने के लिए अपने घोड़े पर बैठाया था, वह डाकू खड्गसिंह ही था। घोड़े पर सवार होकर वह कुछ दूर चला फिर उसने घोड़े की लगाम बाबा के हाथ से छीन ली। तनकर बैठ गया और घोड़े को सरपट दौडाने लगा। इस बदलाव पर बाबा हक्के-बक्के रह गए। थोड़ी देर तक उनकी समझ में कुछ नहीं आया। किन्तु शीघ्र ही उन्होंने स्वयं को संभाल लिया और सामान्य अवस्था में आ गए।

3. यह कथन बाबा भारती का है। इससे यह प्रकट होता है कि वे किसी भी प्रकार से अपने मन की एक इच्छा खड्गसिंह से मनवाना चाहते थे। यादि उनकी यह इच्छा पूरी नहीं की जाती तो उन्हें अत्यधिक कष्ट होता। इसलिए उन्होंने खड्गसिंह से प्रार्थना की थी। जबकि वे आज्ञा भी देते तो वह डाकू मान जाता। वह पहले ही उनसे कह चुका था, "मैं आपका दास हूँ।"

4. घोड़े को अस्तबल में पुन: बँधा हुआ पाकर बाबा भारती पर दो प्रतिक्रियाएँ हुईं। एक तो उन्हें बिछुड़े हुए प्रिय घोड़े को फिर से पाकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। घोड़े को देखकर इतने भाव-विह्वल हो गए कि उससे लिपटकर फूट-फूट कर रोने लगे। उन्हें दूसरी खुशी इस बात की हुई थी कि खड्गसिंह जैसे दुर्दान्त डाकू ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली थी, उन्हें इस बात से बहुत ही आनन्द हुआ था कि समाज में आपसी विश्वास कायम रहेगा। अपाहिज तथा गरीब सहायता से वंचित नहीं रहेंगे।

5. बाबा भारती भगवान की सेवा-पूजा में लगे रहते थे। उन्हें आम लोगों की तरह सांसारिक सुखों से कोई मोह नहीं था। उन्होंने सांसारिक सुखों तथा भौतिक वस्तुओं का त्याग कर दिया था। उनके मन में दीन-दुखियों के प्रति प्रेम तथा सहानुभूति थी। यही कारण था कि मार्ग में पेड़ के नीचे कंगला के वेश में पड़े खड्गसिंह को घोड़े पर बैठाकर उसके गाँव पहुँचाने के लिए चल दिए थे। यहाँ तक कि उन्होंने डाकू खड्गसिंह से उस घटना को छुपाए रखने की केवल इसलिए प्रार्थना की थी, क्योंकि उस घटना का पता लगने पर लोग गरीबों तथा असहायों की सहायता करना बन्द कर देंगे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. एक दिन दोपहर के समय डाकू खड्गसिंह बाबा भारती के पास गया और उनका अभिवादन कर के बैठ गया। बाबा भारती आने वाले को पहले से ही जानते थे। इसलिए सबसे पहले उन्होंने अतिथि का हालचाल पूछा और उसका आने का कारण पूछा। उत्तर में खड्गसिंह ने अत्यन्त नम्रता से यह कहकर हालचाल बताए कि उस पर उनका आशीर्वाद है। उसके बाद उसने उनसे कहा कि सुलतान की प्रसिद्धि सुनकर उसको देखने की इच्छा उसे वहाँ तक खींच लाई है। बाबा भारती घोड़े की प्रसिद्धि की बात सुनकर बहुत खुश हुए और उसकी तारीफ करते हुए बोले कि सुलतान विचित्र घोड़ा है। उसे देखकर प्रसन्न हो जाओगे। खड्गसिंह सुलतान की कद-काठी, रंग-रूप तथा स्वस्थ शरीर को देखकर इतना प्रभावित हुआ कि उसने तुरन्त ही उसकी चाल देखने की इच्छा प्रकट की। बाबा भारती घोड़े की तारीफ सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और तुरन्त ही घोड़े को अस्तबल से बाहर निकाल लाए, उसे सहलाया और थपथपाया। जैसे ही वे उचककर घोड़े पर सवार हुए, वह हवा से बातें करने लगा।

डाकू खड्गसिंह घोड़े की चाल को देखकर मन-ही-मन सोचने लगा कि इस घोड़े का इस बाबा के पास क्या काम? यह तो मेरे जैसे बलशाली आदमी के पास होना चाहिए। वह घोड़े पर इस कदर मोहित था कि उसने सुलतान को हथियाने का निश्चय कर लिया। तब उसने बाबा को घूरते हुए कहा कि वह सुलतान को उनके पास नहीं रहने देगा और वहाँ से चला गया।

2. बाबा भारती 'हार की जीत' कहानी के प्रमुख पात्र हैं। उनके अन्दर अनेक विशेषताएँ दिखाई देती हैं–

(i) वे ईश्वर के सच्चे भक्त थे तथा भगवत-भजन में लगे रहते थे।

(ii) उनको संसार की सुख-सुविधाओं के प्रति कोई मोह नहीं था, इसलिए उन्होंने धन-दौलत तथा गृहस्थ जीवन तक का त्याग कर दिया था।

(iii) वे शान्तिप्रिय थे इसलिए वे गाँव से बाहर एक मन्दिर में रहकर अपना जीवन गुजार रहे थे।

(iv) वे अपने घोड़े से अत्यन्त प्रेम करते थे, इसलिए भगवान के भजन के बाद अपना सारा समय उसी के साथ गुजारते थे।

(v) बाबा भारती के मन में गरीबों के प्रति करुणा तथा प्रेम था, इसलिए जब अपाहिज बने खड्गसिंह ने उनसे मदद माँगी तो वे तुरन्त तैयार हो गए।

(vi) उन्हें विश्वास था कि यह संसार आपस के विश्वास पर ही चल रहा है। यदि इसमें से विश्वास खत्म हो गया तो बहुत-सी समस्याएँ खड़ी हो जाएँगी। इसलिए उन्होंने खड्गसिंह से घोड़ा छीनने की घटना को छुपाए रखने की प्रार्थना की थी।

(vii) वे मानव की भलाई के आगे सब कुछ तुच्छ समझते थे, इसलिए उन्होंने अन्त में घोड़े को नफरत की निगाह से देखा।

(viii) उनकी भाषा अत्यन्त प्रभावपूर्ण थी। इसी प्रभाव के कारण खड्गसिंह का हृदय परिवर्तन हो गया और वह लुटेरे से सज्जन बन गया।

(ix) इतना सब कुछ होने पर भी वे साधारण मनुष्य ही थे। उन्हें अपनी और घोड़े की प्रशंसा सुनना अच्छा लगता था। इसी घमण्ड के कारण वे घोड़े की चाल दिखाने को तुरन्त तैयार हो गए।

3. हार की जीत कहानी में लेखक ने जीवन में प्रेम के महत्व पर प्रकाश डाला है। इस कहानी का आधार प्रेम की भावना ही है। यहाँ स्पष्ट किया गया है कि प्रेम की भावना मनुष्य से मनुष्य तक ही सीमित नहीं अपितु समस्त जीव-जन्तुओं से भी प्रेम करना चाहिए। सुलतान के प्रति बाबा भारती का प्रेम इस बात का उदाहरण है। इसी प्रेम के कारण वे अपने घोड़े से बिछुड़ने मात्र की कल्पना से

परेशान हो जाते थे। इतना ही नहीं खड्गसिंह जैसा निर्दयी डाकू तक सुलतान को देखते ही उस पर मोहित गया था। उसके प्रेम में पड़कर ही उसने बाबा को धमकी दी थी कि वह सुलतान को उनके पास नहीं रहने देगा।

ईश्वर के प्रेम में रहकर जीवन गुजार रहे बाबा दीन-दरिद्रों से भी अत्यन्त प्रेम करते थे। इसी भावना के कारण उन्होंने उस अपाहिज को स्वयं उठाकर घोड़े की पीठ पर बैठाया था और खुद घोड़े की लगाम पकड़कर धीरे-धीरे उसके गाँव की ओर चल दिए थे। दीनों के प्रति उनके इसी प्रेमभाव ने डाकू खड्गसिंह का हृदय परिवर्तन कर दिया था। उसे हिंसक लुटेरे से अच्छा इंसान बना दिया था और उसने श्रद्धा के साथ अपना सिर झुका कर भविष्य में कभी बुरे काम ना करने का निश्चय कर लिया था।

**

5 रहीम के दोहे

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

मेरी समझ से

(क) 1. सोच-समझकर बोलना चाहिए।

2. हर छोटी-बड़ी चीज का अपना महत्व होता है।

(ख) *कक्षा में चर्चा–*

1. यह हमारी जीभ ही है जिसकी बोली गई बात से हमारा मान बढ़ भी सकता है और दुष्ट भाषा से हमारा अपमान भी हो सकता है। हमारे गले में फूलों की माला भी डाली जा सकती है और गलत बोलने पर सिर पर जूते भी पड़ सकते हैं। इसलिए हमें हमेशा सोच-समझकर बोलना चाहिए। बोलते समय हमारी वाणी में मधुरता होनी चाहिए। मधुर वाणी हमारे संस्कारों को प्रकट करती है और हमें नम्रता सिखाती है। धीरे-धीरे बोलने से त्रुटियाँ कम होती हैं। भाषा का प्रभाव बढ़ जाता है। सदा सच बोलने से हम निर्भय हो जाते हैं। झूठ बोलने पर हमें अक्सर अपमानित होना पड़ता है।

2. इस दोहे का भाव यह है कि हर छोटी-बड़ी चीज का अपना महत्व होता है। सुई का प्रयोग कपड़ा सिलने के लिए किया जाता है। उसी प्रकार तलवार आत्मरक्षा के लिए प्रयोग की जाती है। कपड़ा सिलने के लिए सुई आवश्यक हो जाती है। तलवार व्यर्थ होकर रह जाती है। उसी प्रकार आत्मरक्षा के लिए सुई का उपयोग नहीं हो सकता मगर तलवार उपयोगी होती है।

इसी प्रकार समाज में छोटा-बड़ा हर व्यक्ति महत्वपूर्ण होता है। अत: बड़े लोगों से मित्रता हो जाने पर हमें छोटे लोगों की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

मिलकर करें मिलान

स्तंभ (1)	स्तंभ (2)
1. रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय। टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।।	3. प्रेम या रिश्तों को सहेजकर रखना चाहिए।
2. कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत। बिपति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत।।	2. सच्चे मित्र विपत्ति या विपदा में भी साथ रहते हैं।
3. तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहि न पान। कहि रहीम पर काज हित, संपत्ति सँचहि सुजान।।	1. सज्जन परहित के लिए ही संपत्ति संचित करते हैं।

पंक्तियों पर चर्चा

सामूहिक चर्चा

(क) तबस्सुम : कितनी अच्छी बात कही है कवि ने। अक्षत आपकी समझ में इसका अर्थ आया?

अक्षत : इसका अर्थ है– विपत्ति यदि थोड़े समय की हो तो वह भी अच्छी होती है, क्योंकि बुरे समय में ही इस बात का पता चल पाता है कि संसार में कौन हमारा भला चाहने वाला है और कौन नहीं है।

गुरुप्रीत : सही बात है। मेरे पापा जी की बीमारी के कारण नौकरी छूट गई थी। हम बहुत परेशानी में थे। तब हमारे कई रिश्तेदारों ने आना-जाना तो दूर फोन पर बात करना भी बन्द कर दिया था।

मैरी : मेरे एक चाचा बहुत गरीब हो गए हैं। वे कभी हमारे घर आते हैं तो पापा-मम्मी सोचते हैं जल्दी-से-जल्दी चले जाएँ।

तबस्सुम : हमारे यहाँ भी यही हाल है। एक अंकल जी पहले हमारे घर अक्सर आया करते थे। मगर अब जब भी आते हैं तो पापा मना करवा देते हैं कि वे घर पर नहीं हैं।

अक्षत : कितनी गलत बात है न। क्या हमें ऐसा करना चाहिए?

सभी मिलकर : नहीं कभी नहीं। हम कभी ऐसा नहीं करेंगे।

(ख) मयंक : जुनैद क्या तुम्हें इस दोहे का अर्थ पता है।

जुनैद : नहीं, आप बताएँ?

भूमिका : इस दोहे का अर्थ है—इस पगली जीभ का क्या किया जाए। यह उल्टी-सीधी बातें बोलती रहती है। यह स्वर्ग और पाताल तक की बकवास कर जाती है। खुद तो मुँह के अन्दर हो जाती है और बेचारे सिर को जूतियाँ खानी पड़ती हैं।

सभ्या : अब समझ में आया जुनैद की चाहे जब पिटाई क्यों हो जाती है। (सभी हँस पड़ते हैं)

सानिया : बेचारा जुनैद! इसके बेकसूर सिर को इसकी जीभ की सजा मिलती है।

जुनैद : अब से कसम खाता हूँ कि खूब सोच-समझकर बोलूँगा। लो कान पकड़ता हूँ।

मयंक : तब तो तेरा सिर गंजा होने से बच जाएगा। (*सभी ठहाका लगाते हैं।*)

सोच-विचार के लिए

(1) **(क)** जब केवल धागे की बात आती है तो वह टूटते समय चटक कर अलग हो जाता है तथा धागों को जोड़ा जाता है, ना कि मिलाया जाता है। अत: यहाँ चटकाय टूटने की आवाज के कारण चटकाय और जोड़ने के लिए जुड़े शब्द दोनों ही सही हैं।

किन्तु प्रेम सम्बन्धों की बात आती है तो बिना ध्वनि किए वे छिटककर अलग हो जाते हैं और फिर वे धागा होने के कारण जोड़े नहीं जाते अपितु मिलते हैं। इसलिए इसी दोहे में छिटकाय और मिले दोनों ही शब्द मनुष्यों के लिए सही हैं।

रहीमदास जी ने अपनी रचनाओं में अवधी के साथ-साथ ब्रजभाषा का प्रयोग भी किया है। उनकी रचनाओं में अनेक बार भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। डारि ब्रजभाषा का शब्द है तो अवधी में यही डार हो जाता है। उसी प्रकार तलवार का तद्भव शब्द तरवार है। अत: कविता छन्द की दृष्टि से ये शब्द सार्थक हैं।

इसी प्रकार चौथे दोहे में मनुष्य का तद्भव शब्द मानुष और मानुष का अपभ्रंश मानस है जो कि आमतौर पर ब्रजभाषा में बोला जाता है।

(ख) धागा दो वस्त्रों या अन्य किन्हीं दो वस्तुओं को एक-दूसरे से जोड़ता है। बीच का जुड़ाव बने इस धागे के चटककर टूट जाने पर दोनों वस्तुएँ अलग हो जाती हैं। फिर से जोड़ने पर धागे में गाँठ पड़ जाती है। उसी प्रकार प्रेम भी दो व्यक्तियों को एक दूसरे से भावनात्मक रूप से मिलता है, उन्हें जोड़ता है। प्रेम के टूटने से मिले हुए व्यक्ति फिर से दूर-दूर हो जाते है। पुन: मिलने को तो मिल जाते हैं लेकिन पहले जैसी स्वाभाविकता नहीं रह जाती। कहीं-न-कहीं अविश्वास (गाँठ) का भाव आ जाता है।

अत: प्रेम के उदाहरण के लिए धागे का दृष्टांत श्रेष्ठ है। इसके अलावा पेड़ों से अलग हुए पत्तों या कच्चे मटके का भी उदाहरण दिया जा सकता है।

(2) इस दोहे में प्रकति के माध्यम से मनुष्य के परोपकार जैसे सर्वश्रेष्ठ मानवीय गुण की बात की गई है।

प्रकृति हमें बहुत कुछ सिखाती है। बीज अंकुरित होते हैं, वे पेड़ बनते हैं। उन पर फूल लगते हैं। फूल फलों में परिवर्तित हो जाते हैं। हमको ये सब सिखाते हैं कि विकास एवं परिवर्तन में जल्दबाजी नहीं की जा सकती। इससे हमें

धैर्य बनाए रखने की सीख मिलती है। सूर्य हमें निष्काम भाव से सेवा करना सिखाता है। वही सम्पूर्ण जीव-जगत को ऊर्जा प्रदान करता है। पर्वत की चढ़ाई हमें कठोर परिश्रम के द्वारा सफलता प्राप्त करने का मन्त्र देती है। फूल स्वयं महकता है और फिर जगत को महकाकर अपना क्षणिक जीवन सफल कर लेता है।

शब्दों की बात

कविता में आए शब्द	मातृभाषा में समानार्थक शब्द
तरुवर	पेड़
बिपति	विपदा, विपत्ति
छिटकाय	छिटक कर
सुजान	सज्जन
सरवर	सरोवर
साँचे	सच्चे, सत्य
कपाल	खोपड़ी, सिर

शब्द एक अर्थ अनेक

शब्द — अनेक अर्थ

कल – मशीन, चैन, आने वाला या बीता हुआ कल

पत्र – पत्ता, चिट्ठी, पृष्ठ

कर – हाल, किरण, सूँड

फल – लाभ, नतीजा, भाले की नोंक

पाठ से आगे

आपकी बात

दोहा: *कदली, सीप, भुजंग मुख, स्वाति एक गुन तीन।*
जैसी संगत बैठिए, तैसोई फल दीन।।

दोहे का भाव— हमें हमेशा अच्छी संगत में रहना चाहिए। सदा अच्छे लोगों से ही मित्रता करनी चाहिए। क्योंकि मनुष्य जैसी संगत में उठता-बैठता है, उसमें वैसे ही गुण उत्पन्न हो जाते हैं। यदि हम अच्छे मित्रों के साथ रहेंगे तो हमारे अन्दर अच्छे गुण आएँगे और यदि हम बुरे लोगों के साथ में रहेंगे तो हमारे अन्दर बुराइयाँ आ जाएँगी। इस सत्य को स्वाति नक्षत्र की बूँद के उदाहरण से भली प्रकार समझा जा सकता है। स्वाति नक्षत्र में गिरी बूँद तो एक ही होती है, मगर उसके अन्दर तीन अलग-अलग गुण आ जाते हैं। यदि वह केले के फूल में जाकर गिरती है अर्थात् उसका साथ पकड़ती है तो वह कपूर बन जाती है। यदि वह किसी सीप में जाकर गिरती है तो मोती बन जाती है। यदि वह साँप के मुख में जाकर गिरती है तो जहर बन जाती है। उस बूँद में संगति के अनुसार ही भिन्न-भिन्न गुण उत्पन्न होते हैं।

आज की पहेली

1. चना
2. माचिस, दियासलाई।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ख), 2. (ग), 3. (क), 4. (घ), 5. (क)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. तरुवर, सरवर। 2. रहीम, बहुत। 3. सज्जन, संचय। 4. धागा प्रेम, छिटकाय। 5. तलवार, सुई।

सत्य/असत्य

1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✗)

सुमेलन

उत्तर: **सुमेलन**

	स्तंभ (अ)		स्तंभ (ब)
1.	परोपकारी मनुष्य सज्जन कहलाते हैं।	**3.**	तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान। कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान।।

2.	पारस्परिक सम्बन्धों को बनाए रखने की सदा कोशिश करनी चाहिए।	**4.**	रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय। टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।।
3.	मित्रों को विपत्ति की कसौटी पर खरा उतरना चाहिए।	**5.**	रहिमन बिपदाहू भली, जो थोरे दिन होय। हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय।।
4.	मनुष्य को हमेशा अपनी वाणी पर संयम रखना चाहिए।	**2.**	रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल। आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल।।
5.	पानी के बिना मनुष्य, मोती तथा चून व्यर्थ होकर रह जाते हैं।	**1.**	रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून। पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून।।

अतिलघु एवं लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. दोहों के आधार पर बेइज्जती होने से बचने के लिए हमें खूब सोच-समझ कर बोलना चाहिए।

2. प्रेम सम्बन्ध के लिए गाँठ शब्द का अर्थ हो सकता है कि प्रेम संबन्ध एक बार टूट जाते हैं तो फिर उनमें स्वाभाविकता नहीं रह पाती।

3. 'जूती खात कपाल' से कवि का अभिप्राय बेइज्जती का सामना करना है।

4. कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
यहाँ बनत बहुत बहु रीत में अनुप्रास अलंकार है।

5. आम के दो अन्य अर्थ हैं– सर्वसाधारण, सामान्य।

6. धरती तथा आकाश के बीच का स्थान एवं 'नीचा' के अर्थ को भी अधर कहा जाता है।

7. पानी शब्द के अन्य दो पर्यायवाची– नीर तथा तोय हैं।

8. घर शब्द के तीन पर्यायवाची शब्द हैं– सदन, कुटीर, निकेतन।

9.

शब्द	**तत्सम शब्द**
सूरज	सूर्य
पिता	पितृ
पत्ता	पत्र
छत	क्षत्र
कान	कर्ण

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. रहीमदास जी अपने दोहों में निम्नलिखित संदेश देना चाहते हैं–

(क) संसार की प्रत्येक छोटी-बड़ी वस्तु का अपना एक अलग महत्व होता है, इसलिए हमें किसी को भी किसी से कम नहीं समझना चाहिए।

(ख) जिस प्रकार वृक्ष एवं नदी दूसरों की भलाई के कामों में लगे रहते हैं, उसी प्रकार मनुष्य को अपनी बचत को परोपकार के कार्यों में खर्च करना चाहिए।

(ग) प्रेम की स्वाभाविकता बनाए रखने के लिए सम्बन्धों को कभी नहीं तोड़ना चाहिए।

(घ) पानी के बिना जीवन सूना है, अतः उसका संरक्षण करना चाहिए।

(ङ) कुछ समय के लिए जीवन में आई परेशानियाँ भी अच्छी होती हैं।

(च) आत्म-सम्मान बनाए रखने के लिए हमेशा सोच-समझकर ही बोलना चाहिए।

(छ) धन-दौलत पास होने पर बनते जा रहे सभी संबन्धों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

2. हमारे समाज में अमीर-गरीब, छोटे-बड़े आदि सभी वर्गों के लोग होते हैं। लेकिन यह देखा जाता है कि अमीरों को अत्यधिक सम्मान दिया जाता है। उन्हें समाज के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। छोटे वर्ग के लोगों को न तो अधिक महत्व दिया जाता है और न ही सम्मान दिया जाता है। जबकि वास्तविकता यह है कि समाज में सभी लोगों का बराबर महत्व होता है। समाज के निर्माण में सभी लोगों को समान रूप से स्थान दिया जाता है। समाज के तुच्छ माने जाने वाले सभी काम इन गरीबों या छोटे लोगों के द्वारा ही किए जाते हैं। सफाई, धुलाई, वस्तुओं एवं मशीनों की देखभाल तथा मरम्मत, चौकीदारी के अलावा

आवागमन के साधनों रिक्शा, ताँगा, नाव आदि के चालक गरीब वर्ग के लोग होते हैं। इनके ऊपर मूलभूत कामों के संचालन की जिम्मेदारी होती है। फिर भी बड़े लोगों की तुलना में उन्हें वह सम्मान नहीं दिया जाता। यदि ये लोग अपनी-अपनी जिम्मेदारी के निर्वहन से पीछे हट जाएँ, तो समाज नारकीय स्थिति में पहुँच जाएगा। इसलिए इन्हें भी पूरा-पूरा सम्मान दिया जाना चाहिए। क्योंकि सुई की तरह जो काम ये कर सकते हैं वे तलवार रूपी बड़े लोग कभी नहीं कर सकते हैं।

**

6 मेरी माँ

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

मेरी समझ से

(क) 1. अपनी माँ की जीवनपर्यन्त सेवा करने की ।
2. कभी किसी के प्राण न लेना ।

(ख) मित्रों के साथ तर्कपूर्ण चर्चा:

1. रवीश : हर बेटे की इच्छा होती है कि वह जन्म देने वाली तथा पालन-पोषण करने वाली अपनी माँ की उम्रभर सेवा करे। रामप्रसाद बिस्मिल के हृदय में तो यह इच्छा और भी अधिक थी।

श्याम : सही बात है। बिस्मिल तो अपनी पढ़ाई पूरी करते-करते ही स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े थे। बचपन के अलावा उन्हें अपनी माँ का साथ कभी नसीब ही नहीं हुआ था।

सलोनी : लेकिन एक बात तो है कि उनकी माँ ने ही उन्हें अच्छे-अच्छे संस्कार दिये थे। बुरे वक्त में भी दृढ़ता बनाए रखने की सीख दी थी।

सतिन्दर : उनकी माँ ने ही उन्हें एक सत्यनिष्ठ योद्धा बना दिया था।

सलमा : उनका ज्यादातर समय तो पुलिस से आँख-मिचौली खेलने में तथा फरारी में ही बीत गया था। बाकी का जेल में। उन्हें अपनी माँ की सेवा करने का मौका ही कहाँ मिल सका।

जोसेफ : हाँ, तीस वर्ष की उम्र में तो उन्हें फाँसी पर ही चढ़ा दिया गया था। तभी तो वे अपनी माँ की सेवा करने को तरसते रहे।

2. बिस्मिल की माँ धर्म-कर्म में विश्वास करती थीं। उनका अहिंसा में भी अटल विश्वास था। वे कुलीन घराने की बेटी और बहू थीं। वे संस्कारों से परिपूर्ण नारी थीं। वे सत्य, प्रेम और अहिंसा की प्रेरणा स्रोत थीं। इसलिए उन्होंने अपने पुत्र रामप्रसाद बिस्मिल से वचन लिया था कि कैसी भी स्थिति हो अपना संयम बनाए रखना है। उनका ही अपने पुत्र के लिए कठोर आदेश था कि संयम से काम लेते हुए किसी भी व्यक्ति को तो क्या अपने शत्रु तक को प्राण दण्ड नहीं देना है।

पंक्तियों पर चर्चा

(क) इन पंक्तियों में लेखक का कथन है कि उनके व्यक्तित्व के निर्माण में उनकी माँ का सबसे बड़ा योगदान था। उन्होंने अपने पुत्र की शादी का विरोध किया था। वरना तो उनके पिताजी और दादीजी ने तो उनके विवाह का दृढ़-निश्चय कर लिया था। यदि उनकी माँ नहीं होतीं तो उनकी शादी हो गयी होती। तब वे भी अति साधारण मनुष्य बनकर रह गए होते और घर-गृहस्थी का भार उठाते हुए किसी तरह गुजर-बसर कर रहे होते।

(ख) उनकी माँ का बिस्मिल के लिए एक ही आदेश था कि उन्हें किसी भी हालत में किसी की हत्या नहीं करनी है। इस आदेश से पहले ही की बात है कि कुछ लोगों ने बिस्मिल पर हमला करके उनकी जान लेने की कोशिश की थी, लेकिन वे किसी तरह बच गए थे। तब बिस्मिल ने अपने ऊपर हमला करने वालों से बदला लेने की प्रतिज्ञा करली

थी। बाद में दो-तीन मौके ऐसे आए जब बिस्मिल अपने शत्रुओं से बदला लेकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर सकते थे, लेकिन केवल माँ के आदेश के कारण उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा को भंग कर दिया था।

मिलकर करें मिलान

शब्द	अर्थ या संदर्भ
1. देवनागरी	**4.** भारत की एक भाषा-लिपि, जिसमें हिंदी, संस्कृत, मराठी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं।
2. आर्यसमाज	**3.** महर्षि दयानंद द्वारा स्थापित एक संस्था।
3. मेजिनी	**2.** इटली के गुप्त राष्ट्रवादी दल का सेनापति; इटली का मसीहा था जिसने लोगों को एक सूत्र में बाँधा।
4. गोबिंद सिंह	**1.** सिखों के दसवें और अंतिम गुरु थे। उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना की।

सोच-विचार के लिए

1. (क) ग्यारह वर्ष की अल्पायु में ही बिस्मिल की माँ का विवाह हो गया था। उस समय वे नितान्त अशिक्षित एवं ग्रामीण परिवेश में पली-बढ़ी बालिका थीं। उन्हें घर-गृहस्थी के विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं था। ऐसे में बिस्मिल की दादीजी ने अपनी छोटी बहन को शाहजहाँपुर बुला लिया था। उन्हीं के मार्गदर्शन में उन्होंने घर-गृहस्थी का सारा काम-काज सीखा और स्वयं को परिवार के अनुकूल ढाला।

(ख) बिस्मिल की माताजी के अन्दर शिक्षा प्राप्त करने की बड़ी इच्छा थी। इसके लिए उन्होंने घर पर आने वाली अपनी पढ़ी-लिखी सहेलियों तथा पास-पड़ोस की स्त्रियों का सहारा लिया। उनसे उन्होंने देवनागरी लिपि का अक्षर ज्ञान प्राप्त किया और फिर घर का कामकाज निपटाने के पश्चात् अपना अधिकांश समय हिन्दी भाषा की पुस्तकें पढ़कर गुजारती रहीं। धीरे-धीरे उन्होंने अपनी इच्छाशक्ति और लगन के द्वारा स्वयं को शिक्षित कर लिया।

2. बिस्मिल की माताजी बिस्मिल को जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करती थीं। प्रारम्भ में स्वयं निरक्षर होते हुए भी वे शिक्षा के महत्व को समझती थीं। इसलिए वे बिस्मिल को शिक्षा प्राप्त करने के लिए बढ़ावा देती थीं। उन्हें साहसी बनाने के लिए माँ ने छोटी आयु में ही लखनऊ कांग्रेस में भेज दिया था। इसके अलावा उन्होंने उन्हें सेवा समिति में प्रवेश दिलाने में भी बड़ी भूमिका निभाई थी। सेवा समिति में सेवा करते हुए बिस्मिल के अन्दर देशप्रेम, साहस, संघर्ष करने की क्षमता जैसे श्रेष्ठ गुण विकसित हुए थे।

3. ग्यारह वर्ष की आयु में जब बिस्मिल की माँ ब्याह कर शाहजहाँपुर आई थीं तब वे अनपढ़, सीधी-सादी, ग्रामीण लड़की थीं। अपनी ससुराल के पढ़े-लिखे परिवार से प्रेरणा लेकर उन्होंने भी शिक्षा प्राप्त करने का दृढ़-निश्चय किया और स्वयं कठोर परिश्रम करके पढ़ना-लिखना सीखा। उस समय स्त्रियों की पढ़ाई-लिखाई पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता था। लेकिन उन्होंने अपनी बेटियों को स्वयं ही पढ़ाना शुरू कर दिया। वे बिस्मिल की शादी का विरोध करती थीं। क्योंकि उनका मानना था कि इंसान को अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए फिर शादी करनी चाहिए।

4. बिस्मिल की माँ एक स्वतन्त्र विचारों वाली महिला थीं। उस समय स्त्री शिक्षा को आवश्यक नहीं माना जाता था, मगर वे संघर्ष करते हुए खुद पढ़ीं और फिर अपनी बेटियों को भी पढ़ाया। लखनऊ कांग्रेस में जाने का पिताजी और दादीजी के भारी विरोध के बावजूद उन्होंने बिस्मिल को वहाँ भेजा, उन्हें खर्च के लिए पैसे भी दिए। बिस्मिल के सेवा समिति में प्रवेश को लेकर भी भारी विरोध था। यहाँ भी उन्होंने अपने बेटे का साथ दिया। बिस्मिल के पिताजी और दादीजी उनका विवाह करना चाहते थे मगर उनकी माँ का विचार था कि मनुष्य को आत्मनिर्भर बनने के बाद ही विवाह करना चाहिए। इसलिए उन्होंने विरोध किया और बिस्मिल का विवाह नहीं होने दिया।

आत्मकथा की रचना

(क) पंक्तियों की सूची: 1. लखनऊ कांग्रेस में जाने की मेरी बड़ी इच्छा थी। 2. मैं बड़े उत्साह से सेवा समिति में सहयोग देता था। 3. माताजी मेरा उत्साह भंग नहीं होने देती थीं। 4. वास्तव में मेरी माताजी देवी हैं। 5. मुझमें जो कुछ जीवन तथा साहस आया, वह मेरी माताजी तथा गुरुदेव श्री सोमदेव जी की कृपा का ही परिणाम है। 6. मैंने तुरन्त उत्तर दिया कि यह तो धर्म-विरुद्ध होगा। 7. जब से मैंने आर्यसमाज में प्रवेश किया, माताजी से खूब वार्ता होती थी। 8. यदि मुझे ऐसी माता न मिलती तो मैं भी अति साधारण

मनुष्यों की भाँति संसार चक्र में फँसकर जीवन निर्वाह करता। 9. माताजी का सबसे बड़ा आदेश मेरे लिए यही था कि किसी की प्राण हानि न हो। 10. मजबूरन एक दो बार मुझे अपनी प्रतिज्ञा-भंग करनी पड़ी। 11. जन्मदात्री जननी! इस जीवन में तो तुम्हारा ऋण उतारने का प्रयत्न करने का अवसर भी नहीं मिला। 12. जो कुछ शिक्षा मैंने ग्रहण की उसका भी श्रेय तुम्हीं को है। 13. तुम्हें यदि ताड़ना भी देनी हुई, तो स्नेह से हर बात को समझाया। 14. इस संसार में मेरी किसी भी भोग-विलास तथा ऐश्वर्य की इच्छा नहीं। 15. जन्मदात्री! वर दो कि अन्तिम समय भी मेरा हृदय किसी प्रकार विचलित न हो और तुम्हारे चरण कमलों को प्रणाम कर मैं परमात्मा का स्मरण करता हुआ शरीर त्यागूँ।

(ख) छात्र स्वयं करें।

शब्द-प्रयोग तरह-तरह के

(क) संक्षेपीकरण के पश्चात्, उनके अर्थ सहित शब्दों की सूची—

1. सेवा समिति – सेवा के लिए बनायी गई समिति या संगठन।
2. डाँट-फटकार – डाँटना और फटकारना
3. धर्म-विरुद्ध – धर्म के विरुद्ध काम
4. काम-काज – हर दिन की गतिविधियाँ या काम
5. संसार चक्र – संसार का जंजाल या झंझट
6. जीवन निर्वाह – किसी प्रकार गुजारा करना
7. प्रतिज्ञा भंग – कसम तोड़ना, प्रतिज्ञा को तोड़ना
8. तुच्छ जीवन – महत्वहीन जिन्दगी
9. देश सेवा – देश की सेवा में जुटना
10. धार्मिक जीवन – धर्म का पालन करते हुए जीवन गुजारना।
11. मंगलमयी मूर्ति – सदा कल्याण करने वाली सूरत
12. पालन-पोषण – सभी प्रकार की देखभाल, पालन और भोजन आदि
13. जन्म-जन्मान्तर – एक जन्म के बाद दूसरे जन्म में
14. प्रेम भरी – प्रेम से परिपूर्ण
15. भोग-विलास – समस्त सांसारिक सुख-सुविधाएँ
16. बलि देवी – वह देवी जिस पर बलि चढ़ाई जाती है।
17. उज्ज्वल अक्षर – चमकदार अक्षर, सुनहरे अक्षर
18. धर्म-रक्षार्थ – धर्म की रक्षा के लिए

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) रामप्रसाद 'बिस्मिल' के मित्रों के नाम— रामप्रसाद बिस्मिल के अधिक मित्र तो नहीं बन सके थे क्योंकि छोटी आयु में उन्हें प्राणदण्ड दे दिया गया था।

1. भगत सिंह : इनका नाम क्रांतिकारियों की सूची में सबसे ऊपर है। इन्होंने अंग्रेज पुलिस अधिकारी जॉन सांडर्स की गोली मारकर हत्या के अलावा सेंट्रल असेंबली हॉल पर बमबारी भी की थी। इन दोनों मामलों में उन्हें 23 साल की उम्र में फाँसी पर चढ़ा दिया गया था।

2. राजगुरु : शिवराम हरि राजगुरु का निशाना अचूक था। इन्होंने पुलिस अधिकारी जॉन सांडर्स को गोली मारने में भगत सिंह का साथ दिया था। इन्हें भी भगत सिंह और सुखदेव के साथ ही फाँसी पर चढ़ा दिया गया था।

3. अशफाक उल्लाह खान : बिस्मिल ब्राह्मण थे और अशफाक उल्लाह मुसलमान फिर भी दोनों में पक्की दोस्ती थी। अशफाक उल्लाह खान ने काकोरी कांड की घटना को अंजाम दिया था। रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, राजेन्द्र लाहिड़ी और रोशन सिंह के साथ हथियार खरीदने के लिए लखनऊ से ट्रेन में जा रहे खजाने को लूट लिया गया।

इनके अलावा रामप्रसाद्र बिस्मिल के अन्य मित्र राजेन्द्र लाहिड़ी और रोशन सिंह भी थे।

(ख) मेरी माँ के साथ मेरा वार्तालाप

मैं : माँ आपको बचपन में किस नाम से पुकारा जाता था?

माँ : मेरे नाम मालती को छोटा करके सभी लोग मुझे मालो कहते थे।

मैं : आप भी तो बचपन में खूब धमाल मचाती होंगी? कौन-सा खेल खेला करती थीं आप?

माँ : बचपन में सभी धमाल मचाते हैं। लेकिन हमारे गाँव में आज के खेलों क्रिकेट, बैडमिंटन आदि

खेलों को कोई नहीं जानता था।

मैं : तो फिर ?

माँ : हम गाँव में प्राकृतिक वातावरण में पले-बढ़े थे। वैसे ही खेल जैसे पेड़ों पर चढ़ना, नहर, तालाब में तैरना, गुटके आदि खेल ही हम खेला करते थे।

मैं : आप पढ़ने में कैसी थीं ?

माँ : बहुत अच्छी थी। स्कूल में हमेशा प्रथम आती थी।

मैं : फिर आप आगे क्यों नहीं पढ़ीं ?

माँ : उन दिनों गाँवों में शिक्षा का इतना प्रसार-प्रचार नहीं था। हमारे गाँव में एक ही स्कूल था जहाँ दसवीं तक पढ़ाई होती थी। बस दसवीं के बाद ही पढ़ाई छोड़नी पड़ी।

मैं : आपको आगे भी पढ़ना चाहिए था।

माँ : मगर आगे की पढ़ाई के लिए स्कूल बहुत दूर था। उन दिनों आवागमन के साधन भी तो नहीं थे।

मैं : अभी तो आपको लाल रंग अच्छा लगता है, बचपन में कौन-सा रंग पसंद था ?

माँ : बचपन में तो मुझे बसन्ती रंग बहुत अच्छा लगता था।

मैं : और फल-फूल ?

माँ : और फल-फूल भी मुझे पीले रंग वाले ही पसंद थे। आम, सन्तरा आदि फल मुझे बहुत भाते थे।

मैं : उन दिनों आपकी प्रिय पुस्तक कौन सी थी ?

माँ : अरे, घर और खेतों के इतने काम रहते थे कि पाठ्यपुस्तकों के अलावा कोई और पुस्तक पढ़ने का समय ही नहीं मिलता था। फिर भी पंचतन्त्र की कहानियाँ बहुत अच्छी लगती थीं।

मैं : बहुत ही अच्छा बचपन था आपका।

माँ : हाँ, वास्तव में, आज भी उसकी बहुत याद आती है।

पुस्तकालय या इंटरनेट से

छात्र स्वयं करें।

शब्दों की बात

माँ के पर्यायवाची शब्द :

भाषा	**माँ का पर्यायवाची**
पंजाबी	बेबे
मराठी	आई, माई
तमिल	अम्मा
तेलगू, हिन्दी	माँ
कन्नड़	ताई
राजस्थान, मालवा	बाई
उर्दू	अम्मी
अरबी	उम्म, वालिदा
भोजपुरी	माई
संस्कृत	मातृ

आज की पहेली

वर्ग-पहेली में दिए गए विशेषण :

1. मंगलमयी, 2. प्रत्येक, 3. छोटी, 4. ग्यारह, 5. खूब, 6. साधारण, 7. दुखभरी, 8. महान, 9. स्वाधीन, 10. कम, 11. मनोहर, 12. बड़ा।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग), **2.** (ख), **3.** (क), **4.** (घ), **5.** (ग), **6.** (क)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. समय, पढ़ना-लिखना। **2.** आर्यसमाज, बातचीत, **3.** पिताजी और दादी जी, विवाह, **4.** आत्मनिर्भर, रामप्रसाद बिस्मिल, **5.** वकालतनामा, धर्म-विरुद्ध।

सुमेलन

स्तंभ (अ)		स्तंभ (ब)
1. बिस्मिल के जीवन में	**5.**	साहस का संचार उनकी माताजी तथा गुरु सोमदेव ने किया था।
2. पिताजी और दादीजी को	**4.**	बिस्मिल द्वारा किए जा रहे समाज-सेवा के कार्य अच्छे नहीं लगते थे।
3. माताजी के प्रोत्साहन तथा सद्व्यवहार ने	**2.**	उनके अन्दर दृढ़ता उत्पन्न कर दी थी।
4. बड़े से बड़ा संकट आने पर भी	**1.**	बिस्मिल ने अपने संकल्प को नहीं त्यागा।
5. बिस्मिल किसी भी हाल में	**3.**	सत्य बात ही बोलते थे।

सत्य/असत्य

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. बिस्मिल के पिता एवं दादीजी को उनका सेवा समिति के कार्यों में सहायता करना पसन्द नहीं था।

2. रामप्रसाद बिस्मिल अपने जीवन में आए साहस और दृढ़ता को अपनी माताजी और अपने गुरु सोमदेव के आशीर्वाद का फल मानते थे।

3. बिस्मिल की दादीजी की छोटी बहन ने शाहजहाँपुर आकर उनकी माँ को घर के काम करना और प्रबन्धन सिखाया था।

4. बिस्मिल के अनुसार वे अपनी माताजी की दया से ही देश-सेवा के कार्यों की ओर आकर्षित हुए थे।

5. बिस्मिल को जब भी उन्हें उपदेश देती अपनी माँ का सुन्दर रूप याद आ जाता था, तो उनका सिर उस मंगलमयी मूर्ति के सामने झुक जाता था।

6. रामप्रसाद हमेशा यही चाहते थे कि भगवान हर जन्म में उन्हें यही माँ दे।

7. जब भी बिस्मिल परेशान होते थे तो उनकी माँ प्रेम भरी वाणी में उन्हें सांत्वना देती थीं।

8. बिस्मिल अपने देश भारत को माताओं की भी माता मानते थे।

9. बिस्मिल ने भावुकता में अपनी माँ को जन्मदात्री जननी कह कर सम्बोधित किया है।

10. जब गुरु गोबिन्द सिंह की पत्नी ने सुना कि उनके दोनों पुत्र धर्म की रक्षा के लिए शहीद हो गए हैं तो वे बहुत प्रसन्न हुईं और मिठाइयाँ बाँटीं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बिस्मिल की माँ बहुत समझदार थीं। वे शिक्षा को जीवन का आवश्यक अंग मानती थीं। वे जानती थीं कि यदि घर की माताएँ पढ़ी-लिखी होंगी तो वे घर के वातावरण को सुन्दर और सुखद बना सकती हैं। वे अपने बच्चों की पढ़ाई-लिखाई में योगदान दे सकती हैं। इसलिए उन्होंने स्वयं अनपढ़ होते हुए भी शिक्षा को इतना महत्व दिया था।

2. बिस्मिल की माँ प्रेम और अहिंसा में विश्वास रखती थीं। उन्हें खूनखराबा बिल्कुल भी पसन्द नहीं था। इसलिए उन्होंने अपने बेटे को आदेश दिया था कि कैसी भी परिस्थिति आ जाए किसी की हत्या न करना, किसी को प्राणदण्ड मत देना।

3. ग्यारह वर्ष की आयु में बिस्मिल की माताजी की शादी हो गयी थी। जब वे शाहजहाँपुर आयीं तो एकदम निरक्षर थीं उनके मन में पढ़ने-लिखने की बहुत इच्छा थी। इसलिए जब भी उनकी कोई पढ़ी-लिखी सहेली या अन्य कोई शिक्षित महिला उनके घर आती थीं तो वे उनसे अक्षर ज्ञान प्राप्त करने लगीं। बाद में घर का सारा काम निपटाने के बाद वह हिन्दी पढ़ने-लिखने का अभ्यास करती थीं।

4. बिस्मिल ने अपने जीवन के अन्तिम समय में अपनी माँ से यह वरदान माँगा था,कि जब उनको फाँसी पर चढ़ाया जाए तो मृत्यु को सामने देखकर भी उनका मन भय से डगमगाए नहीं। वे ईश्वर का स्मरण करते-करते अपने जीवन की अन्तिम साँस लें।

5. आर्यसमाज में प्रवेश लेने के बाद रामप्रसाद बिस्मिल ने अनुभव किया था कि अब उनकी माँ के विचार

पहले की अपेक्षा कुछ उदार हो गए थे। उस दौरान उनकी अपनी माँ से खूब बातचीत होती थी, जिसमें अधिक कठोर निर्देश नहीं हुआ करते थे। उनकी वाणी में भी अपेक्षाकृत कोमलता आ गयी थी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. एक बार बिस्मिल के पिताजी ने किसी व्यक्ति के विरुद्ध सम्पत्ति के विवाद का मुकदमा अदालत में चलाया था। उस समय उन्होंने वकील को निर्देश दिए थे कि मुकदमे से सम्बन्धित किसी काम की जरूरत आ पड़े तो उसे उनके पुत्र रामप्रसाद से मिलकर करवा लें। वकील बिस्मिल के घर पहुँचा और उनसे वकालतनामा पर पिताजी के हस्ताक्षर बनाने को कहा। लेकिन बिस्मिल ने ऐसा करने से साफ इनकार कर दिया। वकील ने उन्हें बहुत समझाया। यहाँ तक कहा कि यदि उन्होंने हस्ताक्षर नहीं किए तो बहुत नुकसान हो जाएगा। अदालत में मुकदमे के लिए दिया गया उनके पिताजी का प्रार्थना पत्र निरस्त हो जाएगा। लेकिन बिस्मिल अपने निर्णय पर अटल रहे क्योंकि वे सत्यनिष्ठ थे। बिस्मिल में अच्छे गुण थे। उन्हें झूठ और छल-फरेब से घृणा थी। इसके अलावा वे धार्मिक व्यक्ति होने के कारण कोई भी अधर्म का कार्य नहीं करना चाहते थे।

2. रामप्रसाद बिस्मिल के घर का वातावरण आम भारतीय परिवारों जैसा था। बड़ी होने के कारण घर की मुखिया उनकी दादी ही थीं। घर में उन्हीं का आदेश चलता था। जब बिस्मिल की माँ ग्यारह वर्ष की आयु में ससुराल आईं तो वे गाँव के वातावरण में पली बढ़ी नादान लड़की थीं। इतनी छोटी उम्र में उनके ऊपर घर के सारे काम-काज का भार डाल दिया गया। यहाँ तक कि वे जल्दी-से-जल्दी सीख जाएँ इसलिए दादीजी ने अपनी छोटी बहन को शाहजहाँपुर बुला लिया था। बिस्मिल के पिताजी भी अपनी माँ का साथ देते थे। घर में कलह न हो इसलिए बिस्मिल की माताजी शांत और गंभीर बनी रहती थीं। उनको पढ़ाई के लिए भी कोई अतिरिक्त समय नहीं दिया जाता था। पिताजी और दादीजी को अपने पुत्र बिस्मिल को प्रोत्साहित करना भी अच्छा नहीं लगता था। इसके लिए उन्हें अक्सर डाँट-फटकार मिलती थी। बिस्मिल के विवाह को लेकर भी घर में कहा-सुनी होती रहती थी। पिताजी और दादीजी जल्द-से-जल्द बिस्मिल की शादी कर देना चाहते थे। उनकी माँ का मानना था कि मनुष्य को शिक्षा पूरी करके अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए तब विवाह के बारे में सोचना चाहिए।

3. बिस्मिल के पिताजी और उनकी दादीजी को उनका समाज सेवा के कार्यों में भाग लेना बिल्कुल भी पसन्द नहीं था। वे नहीं चाहते थे कि बिस्मिल स्वतन्त्रता आन्दोलन के किसी भी कार्य में भाग लें। बिस्मिल जब उनकी बात नहीं मानते थे तो उनके साथ-साथ उनकी माताजी को भी डाँटा-फटकारा जाता था। ये माँ ही थीं जो अपने उपदेशों से साहस, देशप्रेम, धर्म जैसे सद्‌गुणों का विकास करती थीं। बिस्मिल के पिताजी, दादीजी और अन्य शुभचिन्तक उनका विवाह करके उन्हें गृहस्थी के बन्धन में बाँधकर उनकी देश एवं समाज के कल्याण के लिए चल रही गतिविधियों पर अंकुश लगाना चाहते थे। केवल माताजी ही थीं जो उनका विवाह नहीं चाहती थीं। उनके विवाह का विरोध करती थीं। माताजी के उपदेशों के कारण ही वे एक आदर्श व्यक्ति बन सके थे। इसलिए जब भी उन्हें अपनी माँ की याद आती थी तभी उनके प्रति श्रद्धा से उनका सिर झुक जाता था।

4. रामप्रसाद बिस्मिल की माँ अच्छे कामों को करने के लिए उन्हें हमेशा प्रेरित करती थीं। अपने उपदेशों तथा शिक्षा से उनका मनोबल बढ़ाती थीं। उनके अन्दर साहस तथा वीरता का संचार करती थीं। लेकिन बालसुलभ चंचलता के कारण जब कभी बिस्मिल ढीठता दिखाते थे। उनकी बात नहीं मानते थे। जिद पर अड़े रहकर मनमानी करते थे। उस समय भी उनकी माताजी तनिक क्रोध और झुँझलाहट के साथ यही कहती थीं कि "तुम्हें जो अच्छा लगे वही करो। ऐसा करना ठीक नहीं है। इसका परिणाम अच्छा न होगा।" इस झुँझलाहठ और क्रोध में भी कहीं-न-कहीं उनका असीम प्रेम छिपा होता था। बिस्मिल का मानना था कि माँ ने उनको जन्म देकर सिर्फ पालन-पोषण ही नहीं किया, बल्कि उनकी आत्मिक, धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति में भी बहुत सहायता की।

**

7 जलाते चलो

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास–प्रश्नोत्तर

पाठ से

मेरी समझ से

(क) **(1)** भलाई के कार्य करते रहना।

(2) मनुष्यों से।

(ख) *चर्चा–*

(1) ज्ञान के दीपक जलाकर पृथ्वी से अज्ञानतारूपी अन्धकार को दूर करना एक भलाई का काम है। इस कविता में स्पष्ट किया गया है कि आदिकाल से समाज में भलाई के कार्य होते रहे हैं और भविष्य में भी होते ही रहेंगे। बुराईरूपी तूफान कुछ क्षण के लिए किसी एक दिये को तो बुझा सकता है लेकिन सभी दीपकों को नहीं बुझा सकता। यदि पृथ्वी पर एक भी ज्ञानवान पुरुष जीवित रहेगा तो भलाई के कार्य कभी रुक नहीं सकेंगे।

(2) प्रारम्भ में समस्त पृथ्वी पर अज्ञानता का अँधेरा फैला हुआ था। मनुष्य अज्ञानता के अंधकार से इस तरह से ग्रस्त था कि उसमें और किसी जंगली जानवर में कुछ भी अन्तर नहीं था। किन्तु तभी मनुष्यों ने ज्ञान का दीपक जला दिया और उसके प्रकाश में समाज की अज्ञानता नष्ट होती गई। जैसे–जैसे एक दीपक से दूसरा दीपक जलता गया वैसे–वैसे मनुष्य सभ्य होता चला गया।

मिलकर करें मिलान

	शब्द		अर्थ या संदर्भ
1.	अमावस	1.	अमावस्या, जिस रात आकाश में चंद्रमा दिखाई नहीं देता।
2.	पूर्णिमा	2.	पूर्णमासी, वह तिथि जिस रात चंद्रमा पूरा दिखाई देता है।
3.	विद्युत–दिये	3.	विद्युत दिये अर्थात बिजली से जलने वाले दीपक, बल्ब आदि उपकरण।
4.	युग	4.	समय, काल, युग संख्या में चार माने गए हैं– सत्ययुग (सतयुग), त्रेता युग, द्वापर युग और कलियुग।

पंक्तियों पर चर्चा

इन पंक्तियों का यह अर्थ है कि संसार में सदा–सदा से अच्छाई और बुराई, ज्ञान और अज्ञान साथ–साथ चले आ रहे हैं। बुराइयाँ हमेशा किसी तूफान की तरह अच्छाई (दीपक) को बुझाकर उसे नष्ट करने की कोशिश करती रही हैं। लेकिन ज्ञान का जो दीपक पहली बार जलाया गया था, वह लगातार आज भी जल रहा है। उस दीपक की लौ सोने की तरह आज भी चमक रही है। यदि पृथ्वी पर एक भी ज्ञानरूपी दीपक जलता रहा तो एक दिन निश्चित ही समाज में अज्ञानता के कारण फैली सभी बुराइयाँ दूर हो जाएँगी और एक नये सवेरे का आरम्भ होगा।

सोच–विचार के लिए

(क) कविता में अँधेरे या तिमिर के लिए अज्ञानता, बुराइयाँ, जल, समुद्र, पत्थर, समाज आदि वस्तुओं के उदाहरण दिए गए हैं।

(ख) इस कविता में आशा की गई है कि ज्ञानरूपी दीपक की लौ कभी मन्द नहीं होगी और एक दिन ऐसा अवश्य आएगा जब समाज में फैली समस्त बुराइयाँ, अज्ञानता, घृणा आदि समाप्त हो जाएँगी। यह आशा इसलिए की गई है क्योंकि इन्हीं बुराइयों का अन्त हो जाने पर समाज में सुख, शान्ति और प्रेम की स्थापना होगी।

(ग) कविता में ज्ञान, विश्वास, प्रेम, सौहार्द आदि के दीपक को जलाए रखने तथा सामाजिक बुराइयों के दीपक को बुझा देने की बात की गई है।

कविता की रचना

(क) **1.** अच्छाई के लिए पूर्णिमा और बुराई के लिए अमावस जैसे शब्दों का प्रयोग किया है।

2. विज्ञान में बेशक बहुत शक्ति है, किन्तु इसने सामाजिक बुराइयों को भी जन्म दिया है।

3. तिमिर या अँधेरा, घृणा, द्वेष, स्वार्थ आदि बुराइयों के लिए तथा दीपक को अच्छाई तथा ज्ञान के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है।

4. तूफान तथा पवन को अलग-अलग भाव में रखते हैं, मगर इन्हें एक भाव में प्रयोग किया गया है।

(ख) छात्र स्वयं करें।

मिलान

स्तंभ 1		स्तंभ 2	
1.	कभी तो तिमिर का किनारा मिलेगा	3.	विश्व की समस्याओं से एक न एक दिन छुटकारा अवश्य मिलेगा।
2.	जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर।	4.	दूसरों के सुख-चैन के लिए प्रयास करते रहिए।
3.	मगर विश्व पर आज क्यों दिवस ही में घिरी आ रही है अमावस निशा-सी।	2.	विश्व में सुख-शांति क्यों कम होती जा रही है?
4.	बिना स्नेह विद्युत-दिये जल रहे जो बुझाओ इन्हें, यों न पथ मिल सकेगा।	1.	विश्व की भलाई का ध्यान रखे बिना प्रगति करने से कोई लाभ नहीं होगा।

अनुमान या कल्पना से

(क) प्रारम्भ से ही तूफ़ान के रूप में चलने वाली तेज हवाएँ, प्रकाश फैला रहे दीपकों को बुझाकर अँधेरा कर देती हैं, फिर कोई आगे आता है और दिये जलाकर चारों ओर रोशनी फैला देता है। आज भी तूफ़ान यही काम कर रहे हैं। भविष्य में भी यही कहानी चलने वाली है।

लेकिन इन पंक्तियों की कहानी यह है कि संसार में अच्छाइयाँ हैं, नेकी है, प्रेम है और सहानुभूति है। लेकिन अचानक कुछ बुरे लोग तूफान की तरह जन्म लेते हैं और समाज में प्रेम, नेकी और सहानुभूति के दियों को बुझा देते हैं। उस खास स्थान पर घृणारूपी अन्धकार छा जाता है। युद्ध होते हैं। समाज को कष्ट होता है। मगर फिर कोई शान्ति का दिया जलाकर वहाँ प्रकाश फैला देता है।

(ख) दिये की यह स्वर्ण जैसी लौ पृथ्वी पर मनुष्यों के मध्य प्रेम, सहिष्णुता, सौहार्द तथा सहयोग की हो सकती है, जो अपने प्रकाश से संसार को प्रकाशित कर रही है। सुख, शान्ति की स्थापना कर रही है।

शब्दों के रूप

(1) दिया = दीया **(2)** उजेला = उजाला

(3) अनगिन = अनगिनत **(4)** सी = जैसी

(5) सरित = सरिता **(6)** दीप = दीपक

अर्थ की बात

(क) इस पंक्ति में 'चलो' शब्द का व्यापक अर्थ है। 'चलो' शब्द गतिशीलता की ओर संकेत कर रहा है अर्थात् कवि आह्वान कर रहा है कि हमें किसी एक स्थान पर ही ज्ञान-विज्ञान के प्रकाश को नहीं फैलाना है। उसके स्थान पर हमें चलते रहना है। हमें आगे बढ़ते हुए सारे संसार को रोशनी से जगमगाना है। इसमें विश्व-बन्धुत्व की भावना निहित है। यदि 'चलो' के स्थान पर 'रहो' शब्द आ जाता है तो वह स्थिरता की ओर संकेत करता। एक ही स्थान की ओर संकेत करता। ज्ञान और प्रेम के प्रकाश की सभी जगह आवश्यकता है। 'रहो' शब्द से स्वार्थ झलकता है।

(ख) **(1)** *बहाते चलो नौका तुम निरन्तर*
कभी तो तिमिर का तट मिलेगा।

(2) रहेगा भूमि पर दिया एक भी यदि
कभी तो निशा को प्रात: मिलेगा।

(3) जला दीप पहला तुम्हीं ने अँधेरे की
चुनौती पहली बार स्वीकार की थी।

प्रतीक

(क)

शब्द	सम्भावित अर्थ
निशा	अँधेरा, अज्ञान, बुराई, घृणा, द्वेष आदि।
सवेरा	ज्ञान, प्रकाश, अच्छाई, प्रेम आदि।

(ख)

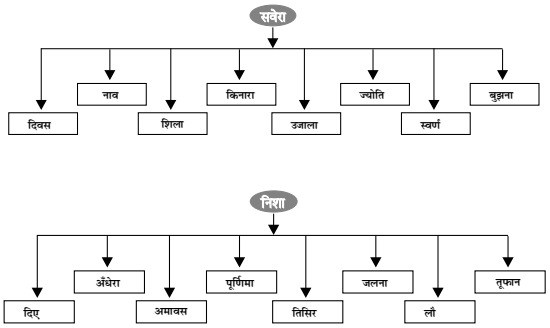

(ग) **निशा:** चन्द्रमा, तारे, जुगनू, कीटों की आवाज, उल्लू, चमगादड़ आदि।

सवेरा: चमकती धूप, सूर्य, फूल, तितलियाँ, भौंरे, खेतों में काम करते किसान, पक्षियों की चहचहाहट।

पंक्ति से पंक्ति

(1) *बहाते चलो नाव तुम वह निरंतर।*

वाक्य : तुम वह नाव निरंतर बहाते चलो।

(2) *जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर।*

वाक्य : ये दिये स्नेह से भर-भर कर जलाते चलो।

(3) *बुझाओ इन्हें, यों न पथ मिल सकेगा।*

वाक्य : पथ यों न मिल सकेगा, इन्हें बुझाओ।

(4) *मगर विश्व पर आज क्यों दिवस ही में घिरी आ रही है अमावस निशा-सी।*

वाक्य : मगर विश्व पर आज दिवस में ही निशा-सी अमावस क्यों घिरी आ रही है?

सा/सी/से का प्रयोग

(1) **उदासी-सी**—आज जम्मू में भारतीय जवानों पर आक्रमण की खबर सुनकर पूरे भारत में उदासी-सी छा गई।

(2) **बाढ़-सा**—सड़कों पर बह रहा वर्षा का पानी बाढ़-सा दृश्य उत्पन्न कर रहा था।

(3) **जवान-से**—मोटापा कम करके तो उसके दादाजी जवान-से लग रहे थे।

(4) **घुटन-सी**—चलो, बगीचे में बैठेंगे। यहाँ तो घुटन-सी महसूस हो रही है।

(5) **विद्वान-सा**—वह देखने में तो विद्वान-सा लगता है, मगर है निरा मूर्ख।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) *अच्छे कार्यों की सूची:*

(1) सुबह जल्दी जागकर, छत पर पक्षियों के लिए रखे गए बर्तन में पानी डालता हूँ।

(2) अपनी छत पर कबूतरों के खाने के लिए बाजरा भी तभी डाल देता हूँ।

(3) घर से स्कूल के लिए निकलते समय मैं गाय की रोटी, फल, सब्जियों के छिलके आदि ले लेता हूँ। रास्ते में मिली किसी भी गाय को खिला देता हूँ।

(4) रिक्शेवाले भैया को पसीने से लथपथ देखकर मैं उन्हें अपनी बोतल से पानी पिला देता हूँ।

(5) रास्ते में पड़े केले के छिलकों, पत्थर, काँटों को देखकर मैं उन्हें उठाकर सड़क के बिल्कुल किनारे पर रख देता हूँ, जिससे किसी को चोट न लगे।

(6) स्कूल में यदि कोई सहपाठी लंच-बॉक्स नहीं लाता है, तो मैं उसके साथ अपना खाना मिल-बाँटकर खाता हूँ।

(ख) मनुष्य के असफल होने या अन्य कोई दुर्घटना होने पर स्वाभाविक रूप से वह उदास और दुखी हो जाता है। यदि मेरे किसी मित्र के साथ ऐसा होता है तो मैं अपने मित्र को गले लगाऊँगा। उसकी पीठ थपथपाऊँगा। उससे कहूँगा कि सफलता-असफलता तो जीवन में चलती रहती है। जीवन इसी के साथ तो खत्म नहीं हो जाता। थोड़ी-सी और मेहनत तथा लगन जीवन में फिर से सफलता लाएगी। निराश होने से कुछ नहीं होगा। हिम्मत और ताकत जुटाओ और फिर से जुट जाओ।

(ग) एक बार शार्ट-सर्किट के कारण हमारे घर में आग लग गई थी। सारा सामान जलकर राख हो गया था। घर के सभी लोग बहुत ही दुखी और निराश थे। किसी की कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें? ऐसे समय में गाँव से हमारे ताऊ जी आए थे। उन्होंने हम सबको बहुत

समझाया था, ढाढ़स बँधाया था। कहा था कि जीवन बच गया यही बहुत है। जीवन है तो जला हुआ सामान फिर से खरीद लिया जाएगा। वैसे भी सारा सामान पुराना तो हो ही गया था, कुछ दिन बाद नया खरीदना पड़ता सो अब खरीद लेंगे। जो हो गया है उसे लौटाया नहीं जा सकता है। लेकिन जो होना है उसे सँवारा तो जा सकता है। निराशा छोड़ो और कल की सोचो। ऐसा कहकर उन्होंने पिताजी को बहुत सारे पैसे भी दिए थे।

अमावस्या और पूर्णिमा

दिए गए चित्र में पहले पन्द्रह चन्द्रमा कृष्ण पक्ष की ओर संकेत कर रहे हैं। क्योंकि इसमें चंद्रमा की कला (चमकदार भाग) हर दिन कम होता जा रहा है तथा कालिमा बढ़ रही है। इसके पश्चात इसका उल्टा होता है। कला बढ़ती जाती है और यह शुक्ल पक्ष कहलाता है।

तिथिपत्र

(क) दिए गए महीने में जनवरी में कुल 31 दिन हैं।

(ख) पूर्णिमा 6 जनवरी शुक्रवार को और अमावस्या 21 जनवरी शनिवार को पड़ रही है।

(ग) कृष्ण पक्ष की सप्तमी और शुक्ल पक्ष की सप्तमी में 14 दिनों का अन्तर है।

(घ) इस महीने के कृष्ण पक्ष में कुल 15 दिन हैं।

(ङ) वसंत पंचमी की तारीख 26 जनवरी तथा तिथि शुक्ल पक्ष की पंचमी है।

आज की पहेली

पवन–अनिल, समीर, बयार, वायु, मारुत, वात, हवा आदि।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ख), **5.** (घ)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. प्रथम बार, लौ, **2.** धरा, निशा, **3.** तिमिर, अनगिनत **4.** शब्द, हवा **5.** सरिता, दीप।

सत्य/असत्य

1. असत्य, **2.** सत्य, **3.** सत्य, **4.** असत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

स्तंभ (अ)	स्तंभ (ब)
1. हिन्दी मास में	5. दो पक्ष और सामान्यतः 30 दिन होते हैं।
2. फरवरी के महीने में	4. 28 अथवा 29 दिन होते हैं।
3. अमावस्या की रात को	2. चन्द्रमा नहीं दिखाई देता।
4. युग	3. चार माने गए हैं।
5. पक्ष	1. दो होते हैं–कृष्ण और शुक्ल।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. कवि इस कविता में स्नेह के दीपक जलाने की बात कर रहा है।

2. मनुष्य ने पहली बार तिमिर अर्थात् अन्धकार को दूर करने के लिए पहला दीपक जलाने की चुनौती स्वीकार की थी।

3. तूफान द्वारा दीपकों को बुझाने की कहानी युगों-युगों से चली आ रही है और हमेशा चलती रहेगी।

4. इस कविता का मुख्य उद्देश्य विश्व में शांति, सद्भाव, प्रेम और परोपकार की भावना की स्थापना करना है।

5. धरती पर चारों ओर फैले हुए अँधेरे को दूर करने के लिए कवि हमसे स्नेहरूपी तेल से भरे हुए दीपक जलाने को कह रहे हैं।

6. अंधकार की सरिता को पार करने के लिए मनुष्य द्वारा दीपकों को ही नाव के रूप में चलाया गया था।

7. समय इस बात का साक्षी है कि मनुष्य ने अपने बल पर पहाड़ों के ऊपर चढ़कर अंधकाररूपी चट्टानों पर भी दिया जलाया था।

8. कवि को दीपक की लौ से यह आशा है वह सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित करती रहेगी।
9. इस कविता 'जलाते चलो' के रचयिता 'द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी' हैं। इनका जन्म आगरा के रोहता गाँव में हुआ था।
10. द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी को 'बच्चों का गांधी' कहकर भी पुकार जाता है।

लघु एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सम्पूर्ण कविता के माध्यम से कवि विश्वास व्यक्त कर रहा है कि संसार में व्याप्त बुराइयों का एक दिन अवश्य ही अन्त होगा। मनुष्यों के सामने तूफान के रूप में परेशानियाँ तो खड़ी होती रहेंगी। लेकिन अपनी सूझबूझ, प्रेम और सहयोग के द्वारा वे उसका समाधान ढूँढ़ते रहेंगे और एक-न-एक दिन समाज में शांति तथा सम्पन्नता की स्थापना हो जाएगी।
2. भारत में एक पूजा पद्धति है, जिसे दीपदान कहते हैं। दीपदान में लोग किसी नदी या जलाशय में सूर्यास्त के तुरन्त पश्चात् जलते हुए दीपकों को किसी पत्ते या दौने में रखकर धीरे से छोड़ देते हैं। जलते हुए दीपकों का प्रतिबिम्ब धीमे प्रकाश में जब जल में पड़ता है तो बहुत ही सुन्दर दृश्य उत्पन्न हो जाता है। ये दीपक पानी की लहरों तथा हवा के हल्के झोंकों से दूसरे किनारे की ओर बढ़ते हैं।
3. हिन्दू कैलेंडर को विक्रम सम्वत् कहते हैं। अंग्रेजी कैलेंडर की तरह इसमें भी 12 मास (महीने) होते हैं। इसका पहला मास चैत्र और अन्तिम मास फाल्गुन होता है। हर मास में तीस दिन हो जाते हैं। मास को सप्ताह के स्थान पर पक्षों में बाँटा गया है। मास में 15-15 दिन के दो पक्ष होते हैं— कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष। कृष्ण पक्ष का अन्तिम दिन अमावस्या और शुक्ल पक्ष का अन्तिम दिन पूर्णिमा होती है। मास का प्रारम्भ पूर्णिमा से होता है।
4. इस कविता का सारांश यह है कि आँखों को चकाचौंध कर देने वाली रोशनी में मनुष्य को उसके लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होगी। मंजिल को प्राप्त करने के लिए कृत्रिमता को छोड़कर वास्तविकता के धरातल पर खड़ा होना होगा। धरती पर चारों ओर फैले अज्ञानता के अँधेरे को दूर करने के लिए मनुष्य को स्नेह और प्रेम से भरे हुए दीपक जलाने होंगे। कवि कहता है कि संसार में कठिनाइयों के तूफान तो आते रहे हैं और आते रहेंगे, मगर मनुष्य अपनी लगन और संघर्ष-क्षमता के द्वारा उन पर विजय प्राप्त करता रहेगा।
5. स्नेह शब्द का प्रयोग चिकनाई या तेल के अर्थों में भी किया जाता रहा है। दीपक में बिना स्नेह (तेल) भरे किसी भी प्रकार से उसे जलाया नहीं जा सकता है। उसी प्रकार यदि हमें संसार में सुख-शांति का प्रकाश फैलाना है तो हमें परस्पर स्नेह, प्रेम और सौहार्द की आवश्यकता होगी। बिना स्नेह के विश्व में किसी भी प्रकार की उन्नति नहीं हो सकती है।
6. इस पंक्ति में कवि का मानना है कि मनुष्य प्रारम्भ से ही परिश्रमी और संघर्षशील रहा है। वह सदा-सदा से रोमांचप्रिय होने के कारण खतरों से खेलता रहा है। वह पहाड़ों की ऊँची-ऊँची चोटियों पर चढ़ने में भी सफल रहा है। उसने अँधेरे में डूबी हुई (अँधेरे की) चट्टानों पर पहुँचकर इसलिए दीपक जलाए ताकि वहाँ का अन्धेरा तो दूर हो ही जाए बल्कि उन दीपकों का प्रकाश सारे संसार में फैल सके।

**

8 सत्रिया और बिहू नृत्य

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

(क) 1. वे असम के जीवन के बारे में बहुत कुछ जानती थीं।

2. दोनों की आयु एक समान थी।

(ख) (1) उत्तर चुनने का कारण : इस उत्तर को चुनने का कारण यह है कि ब्रिटिश अकादमी को यह जानकारी थी कि एलेसेंड्रा को असम के जनजीवन के विषय में ज्ञान था, तभी उन्होंने उन्हें सत्रिया एवं बिहू नृत्य पर डॉक्यूमेंट्री

फिल्म बनाने का काम उन्हें सौंपा था। दूसरे हवाई यात्रा के दौरान अपनी बेटी एंजेला को असम की सुन्दरता के विषय में बहुत-सी बातें बताती रही थीं।

(2) इस उत्तर का प्रमुख कारण यह है कि हर व्यक्ति अपनी आयु के व्यक्ति के साथ मित्रता करना, समय बिताना, खेलना-कूदना चाहता है। एंजेला और अनु समान आयु की थीं। वे दोनों एक-दूसरे के विषय में जानना चाहती थीं। इसलिए उन्होंने तुरन्त एक-दूसरे की ओर देखा था।

मिलकर करें मिलान

स्तंभ 1		स्तंभ 2
1. सत्र	6.	ये असम के मठ हैं। इनकी संख्या पाँच सौ से भी ज्यादा है। ये पूजा-पाठ और धार्मिक गतिविधियों के स्थान हैं। सत्रिया नृत्य की उत्पत्ति इन्हीं सत्रों में हुई है।
2. बोहाग बिहू	4.	असम में मनाया जाने वाला एक त्योहार। यह असम में नए साल की शुरुआत और बसंत के आगमन का प्रतीक है।
3. लंदन	2.	'यूनाइटेड किंगडम' और 'इंग्लैंड' की राजधानी।
4. गुवाहाटी	5.	भारत के असम राज्य का एक प्राचीन और सबसे बड़ा नगर है।
5. ब्रिटिश अकादमी	3.	'यूनाइटेड किंगडम' देश की एक सरकारी संस्था।
6. बीसवीं शताब्दी	1.	ग्रेगरी कैलेंडर के अनुसार 1 जनवरी 1901 से 31 दिसंबर 2000 तक का समय।

पंक्तियों पर चर्चा

(क) असम भारत का एक राज्य है। यह राज्य भारत की उत्तर-पूर्व दिशा में स्थित है। असम के एक बड़े भाग में वन पाए जाते हैं। इन वनों में विभिन्न प्रकार के वन्य-जीव और वनस्पति पाई जाती हैं। असम अपने रेशम और चाय के बागानों के लिए भी दुनियाभर में प्रसिद्ध है। इसके अलावा असम में नृत्य की अपनी एक सफल और सुन्दर परम्परा है, जो असम की पहचान है।

(ख) मनुष्य ने वस्त्र पहनना बाद में सीखा। भाषा भी उसने बाद में सीखी। सबसे पहले मनुष्य ने अपनी भावनाओं को नृत्य के द्वारा व्यक्त करना सीखा। इसलिए आज भी संसार की सभी संस्कृतियों में लोग अपनी भावनाओं को प्रकट करने के लिए नृत्य-संगीत का ही सहारा लेते हैं। हर आनन्दोत्सव पर वे झूमते हैं, नाचते हैं और गाते हैं।

सोच-विचार के लिए

(क) एंजेला को बिहू नृत्य बहुत ही अच्छा लगा था। अत: उसके मन में उसी को लेकर विचार चल रहे होंगे। वह सोच रही होगी कि इतने सारे लोग एक ही स्थान पर कैसे एकत्रित हो जाते हैं। वहाँ लंदन में नृत्य-संगीत के कार्यक्रम क्यों नहीं होते? वह भी इन लोगों के साथ नाच-गा सकती तो कितना मजा आता। क्या यहाँ साल भर ऐसे ही नाच-गाना होता है।

(ख) भारत में बिहू ही एक ऐसा त्योहार है जो साल में तीन बार मनाया जाता है। पहली बार तब, जब किसान अपने खेतों में बीज बोते हैं। दूसरी बार तब, जब वे धान के तैयार पौधों को खेतों में रोपते हैं। तीसरी बार तब, जब उनके खेतों में अनाज तैयार हो जाता है। इसलिए बिहू एक कृषि आधारित त्योहार है।

(ग) ऐसा लगता है कि भारत से जाने के बाद भी एंजेला के मन में असम ही छाया हुआ था।

कारण :

1. वापस लौटने के बाद भी वह चलने, खाना खाने और यहाँ तक कि खेलने के दौरान नृत्य करती थी।

2. वह बार-बार उन सभी रिकॉर्डिंग्स को देखती थी जो उस की माँ ने भारत में रिकॉर्ड की थीं।

3. वह हमेशा असम की नृत्य परम्परा को याद करके आनंदित होती थी।

(घ) प्राचीनकाल में सत्र के अन्दर ही साधुओं द्वारा सत्रिया नृत्य किया जाता था। बीसवीं शताब्दी के मध्य में कुछ युवा साधु नियमों को तोड़ते हुए सत्रों के बाहर जाकर अन्य लोगों को यह नृत्य सिखाने लगे थे। इसका जबरदस्त विरोध हुआ और उन साधुओं को सम्बन्धित सत्रों से बाहर निकाल दिया गया। अब आधुनिक काल में साधुओं के अलावा सामान्य स्त्री-पुरुष भी सत्रिया नृत्य करने लगे हैं। अब महिला नृत्यांगनाएँ, आकर्षक भाव-भंगिमा के साथ सत्रिया नृत्यों का मंच पर प्रदर्शन करती हैं।

निबंध की रचना

इस पाठ की विशेषताएँ–

1. अपने परिवार में अकेली संतान एंजेला अपना अकेलापन दूर करने के लिए अपने मित्रों जेम्स और

कीरा के साथ काल्पनिक यात्रा करते हुए संसार के प्रसिद्ध स्थानों ताजमहल, एफिल टॉवर आदि देखा करती थी।

2. उसकी माँ एलेसेंड्रा को असम की नृत्य परंपरा पर एक डाक्यूमेंट्री फिल्म बनाने के लिए पैसा मिला तो वे अपनी पुत्री एंजेला तथा पति के साथ तुरन्त भारत के लिए चल दीं। क्योंकि उन्हें इस काम के लिए सिर्फ एक महीने का समय ही दिया गया था।
3. लंदन से नयी दिल्ली होते हुए गुवाहाटी की यात्रा में माँ ने एंजेला को असम की सुन्दरता, वहाँ का वन्य-जीवन और कृषि के बारे में बहुत-सी बातें बतायीं। उन्होंने उसे बताया कि वर्ष में तीन बार मनाया जाने वाला बिहू एक कृषि आधारित त्योहार है।
4. होटल में थकान उतारने के बाद वे उसी शाम मलंग गाँव पहुँचे। वहाँ माँ ने उसे बताया कि भारत एक कृषि प्रधान देश है इसलिए यहाँ की बड़ी जनसंख्या किसान हैं।
5. मलंग गाँव में खुले आसमान और एक बरगद के पेड़ के नीचे लोगों की भीड़ देखकर एंजेला आश्चर्य में पड़ गई क्योंकि उसने एक साथ इसने लोगों को पहले कभी नहीं देखा था।
6. मलंग गाँव में बिहू देखकर एंजेला का मन भी उनके साथ नाचने-गाने के लिए हो रहा था।
7. एंजेला ने महसूस किया कि भारत के तथा लंदन के जीवन में बहुत अन्तर है। भारत के लोग उत्सवप्रिय, मेहमानों का स्वागत करने वाले और मिलनसार हैं।
8. सत्र में अनु, एंजेला की दोस्त बन गई। एंजेला और अनु फिर साथ-साथ ही रहीं।
9. सत्रिया नृत्य मठों में केवल साधुओं द्वारा ही किया जाता था लेकिन अब महिला नर्तकियाँ भी इसे करने लगी हैं। उन्होंने दो महिलाओं प्रिया और रीता का नृत्य देखा था। उन्होंने स्वर्ग के द्वारपालों जय-विजय का अभिनय किया था जो अनु तथा एंजेला को इतना अच्छा लगा कि वे बाद में हाथ में तलवार लेकर सत्रिया नृत्य करती थीं। प्रिया और रीता ने उन्हें सत्रिया नृत्य-संगीत की कुछ खास बातें और हाव-भाव भी सिखाए थे।
10. लंदन वापस लौट जाने के बाद एंजेला ने अपनी कक्षा में सत्रिया नृत्य का प्रदर्शन किया था, जो उसके सहपाठियों और शिक्षकों को बहुत पसन्द आया था।
11. एंजेला के ऊपर सत्रिया नृत्य इस कदर छाया हुआ था कि वह लंदन वापस लौटने पर चलते, खाना खाते यहाँ तक कि खेलते समय भी नृत्य करती रहती थी।

अनुमान या कल्पना से

कक्षा में चर्चा:

(क) एंजेला और उसका परिवार बिहू नृत्य और उसके उत्सव को देखकर इसलिए अचंभित हो उठा क्योंकि उन्होंने रंग-बिरंगी पोशाक पहने इतने सारे लोगों को एक ही स्थान पर इकट्ठा पहले कभी नहीं देखा था। बिहू एक सामूहिक नृत्य है इसकी लय-गति और ताल मनमोहक थी। इसके अलावा यहाँ के पकवानों के स्वाद के कारण भी आश्चर्यचकित थे क्योंकि उन्होंने ऐसा स्वादिष्ट भोजन पहली बार किया था।

(ख) एंजेला और उसकी माँ एलेसेंड्रा भारत की यात्रा के लिए समय के अभाव के कारण कुछ खास तैयारियाँ नहीं कर पाए होंगे। उन्होंने एंजेला के स्कूल में एक सप्ताह का अवकाश मंजूर करवा लिया। उन्होंने भारत यात्रा के दौरान कुछ नए कपड़े तथा अन्य सामान खरीदा होगा। उन्होंने अपने साथ ले जाने के लिए बिस्कुट, चाकलेट, ड्राई फ्रूट्स भी साथ में रख लिए होंगे, जिससे अनजान स्थान पर उन्हें भोजन की परेशानी न हो।

(ग) भारत गाँवों का देश है। वे बिहू उत्सव में शामिल होने के लिए एक गाँव मलंग में गए थे। गाँवों में सामान्य तौर पर ऐसा कोई भवन या हॉल नहीं होता जहाँ बहुत सारे लोग बैठ सकें। इसलिए बिहू नृत्य के लिए एक विशाल बरगद के पेड़ के नीचे मंच बनाया गया था। इसके अलावा बिहू बसंत और कृषि से सम्बन्धित है। अत: इसे प्राकृतिक वातावरण में मनाया जाता होगा।

शब्दों की बात

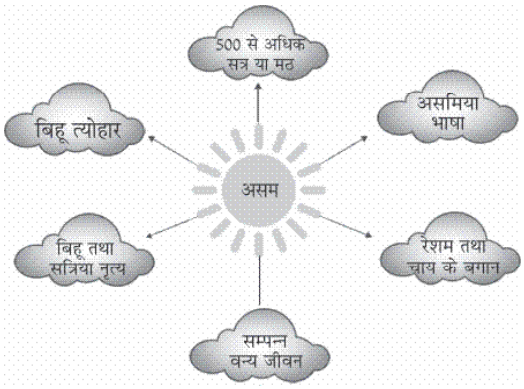

तीन बिहू

(क) एंजेला और उसकी माँ एलेसेंड्रा रोगाली या बोहाग बिहू के अवसर पर भारत आए थे, क्योंकि इसी समय बैसाख माह में भारत में बसंत ऋतु होती है। किसान, खेतों में बीज बोते हैं।

(ख) 1. रोंगाली या बोहाग बिहू– रोंगाली या बोहाग बिहू के समय किसान अपने-अपने खेतों में बीज बोते हैं। अपने-अपने पशुओं को नदी में ले जाते हैं। उन्हें वहाँ नहलाते हैं। उनके शरीर पर हल्दी लगाते हैं। उन्हें नयी रस्सियों से बाँधते हैं। वे अपने शरीर पर भी हल्दी लगाते है।

2. कोंगाली या काटी बिहू– इस बिहू के समय किसान अपने खेतों में धान के पौधों को रोपते हैं। अच्छी फसल के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

3. भोगाली या माघ बिहू– इस बिहू के अवसर पर किसान अपने खेतों की फसल को काटते हैं। अगली फसल के लिए अच्छी वर्षा की भगवान से प्रार्थना करते हैं। अनाज घर आने पर आनन्द का प्रदर्शन नाच-गाकर करते हैं।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) मेरा नाम तूलिका है और मैं तीन भाई-बहनों में सबसे छोटी हूँ। मेरी माँ मुझे प्यार से छुटकी, पिताजी तितली या बिट्टी, और मेरे भाई तथा दोस्त तुल्ली कहकर पुकारते हैं।

(ख) मेरे नाम का अर्थ, "चित्रकारी में प्रयोग किया जाने वाला ब्रश" है। यह नाम मेरे चित्रकार दादीजी ने रखा था।

(ग) मैं अति सामान्य परिवार की सदस्य होने के कारण वे खेल नहीं खेल पाती, जिन पर पैसा खर्च करना पड़ता है। मैं अपनी चुस्ती-फुर्ती बनाए रखने के लिए कबड्डी, खो-खो, दौड़, तैराकी जैसे खेल-खेलती हूँ।

(घ) मेरे प्रदेश विभिन्न परंपरा वाले लोग रहते हैं। भारत में मनाए जाने वाले त्योहार भी सभी मिल-जुलकर मनाते हैं। विभिन्न त्योहारों पर विभिन्न नृत्य होते हैं। जैस– डांडिया, चरकुला, घूमर, भाँगड़ा, काल-बेलिया आदि। मुझे डांडिया नृत्य पसंद है।

टाइम मशीन

(क) यदि मुझे कभी टाइम-मशीन मिली तो मैं उसमें बैठकर अपने गाँव के वातावरण में गुजरे अपने बचपन के दिनों में जाना चाहूँगा, क्योंकि वहाँ मुझे मेरे दादाजी मिलेंगे जो मुझे दूर खेतों में कन्धे पर बैठाकर ले जाया करते थे। मेरी दादीजी मिलेंगी जो मुझे प्यार से गोद में उठाकर कहानी सुनाती थीं। मुझे अपने नन्हे-मुन्ने दोस्तों के अलावा मेरी कजरी गाय भी मिल जाएगी, जिसे मैं बहुत प्यार करता था।

(ख) यदि मुझे ऐसी मशीन बनाने का अवसर मिलेगा तो मैं अपने पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त कर देने वाली मशीन बनाऊँगा, क्योंकि पृथ्वी पर जीवन के लिए प्रदूषण सबसे बड़ी समस्या बन गया है। मनुष्य का दम घुट रहा है। हमें न तो शुद्ध भोजन मिल रहा है, और न पीने को स्वच्छ जल न साँस लेने को शुद्ध वायु। मैं मशीन से प्रदूषण से मुक्त करके धरती को स्वर्ग जैसा सुन्दर बना देना चाहता हूँ।

(ग) मैंने राजकीय संग्रहालय लखनऊ का भ्रमण किया है। यह बनारसी बाग में स्थित है। इस संग्रहालय में पहुँचने के बाद मुझे ऐसा लगा जैसे मैं हजारों साल पहले की दुनिया में पहुँच गया हूँ। यहाँ पर भगवान बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित बहुत सारी वस्तुएँ रखी हैं। इस संग्रहालय में प्राचीनकाल में युद्धों में प्रयोग किए गए हथियारों के अलावा बहुत से चित्रादि भी रखे हुए हैं। यहाँ परिसर में एक हवाई जहाज भी रखा हुआ है, जो बच्चों के लिए एक बहुत बड़ा आकर्षण है। यहाँ ऐसी तस्वीरें हैं जो प्राचीन काल में बनाई गई थीं। मुझे वास्तव में लखनऊ का यह संग्रहालय बहुत अच्छा लगा।

खिलौने विभिन्न प्रकार के

(क) लंदन में एंजेला के खिलौने अच्छी क्वालिटी के होंगे। उसके अधिकांश खिलौने बिजली या बैटरी से चलने वाले होंगे। उनमें कारें, डबल डेकर बसें, रेलगाड़ी के खिलौने आदि होंगे। ज्यादातर खिलौने प्लास्टिक, रबड़ या अन्य रासायनिक पदार्थ से निर्मित होंगे। उन खिलौना में पेप्पा पिग, जम्बी जिराफ, ब्लैक भालू आदि भी होंगे। मम्मा मंकी तो अवश्य ही होगा।

(ख) मैं अपनी सहेलियों के साथ मिलकर जिन खिलौनों से खेलती हूँ वे हैं– रसोई के बर्तन का पूरा सेट, चाबी से नाचने वाली गुड़िया, चाबी से ढोल बजाने वाला भालू, पलक झपकाने वाली गुड़िया आदि।

(ग) बच्चे जिन खिलौनों से खेलते हैं, उनमें मिट्टी के खिलौने ज्यादा होते हैं। मिट्टी के खिलौने हाथ से ही बनाए जाते हैं। इसके अलावा लकड़ी के खिलौने गुलेल, बन्दूक आदि हाथ से ही बनाए जाते हैं। बच्चों के लिए हाथ से निर्मित खिलौने हैं– गुड्डा-गुड़िया, तरह-तरह के जानवर और पक्षी, कुछ मानव आकृतियाँ; जैसे–सिपाही, डाकिया, चिकित्सक आदि।

(घ) हम गाँव में अक्सर हॉकी खेलते हैं। हम पेड़ से तोड़ी गई टहनियों को हॉकी की तरह प्रयोग करते हैं। गेंद भी हम हाथ से ही बना लेते हैं। इसके लिए हम एक गोलाकार पत्थर

या ईंट का टुकड़ा लेकर उसके चारों ओर सुतली लपेटकर उस पर अच्छी तरह से लेई लगाकर सुखा लेते हैं। सूख जाने पर उसके ऊपर फटा-पुराना कपड़ा अच्छी तरह चढ़ा कर मजबूती से सिलाई कर दिया करते हैं। लो हो गई गेंद तैयार। उस गेंद से हम कैच पकड़ने का अभ्यास करने के अलावा क्रिकेट भी खेलते हैं। क्रिकेट के बैट की जगह हम कपड़ा धोने के काम आने वाली थपारी का प्रयोग करते हैं।

पत्र

(क) भोपाल- भारत
23-03-20__
प्रिय सखी अनु
सप्रेम नमस्ते।

लंदन लौटने के पश्चात् मुझे आपकी बहुत याद आ रही है। आपके साथ हँसते-खेलते वह एक महीना कैसे गुजर गया पता ही नहीं चला। सच आपके साथ हाथ में झूठ-मूठ की तलवार लेकर सत्रिया खेलने का आनन्द ही कुछ और था। मुझे प्रिया और रीता की भी बहुत याद आती है, जिन्होंने हमें बिहू और सत्रिया की गुप्त बातें बतायी थीं। उस रोमांच को तो मैं भूल ही नहीं सकती जब हमने खुले आसमान के नीचे उत्सव में भाग लिया था। माँ को प्रणाम कहना।

आपकी अभिन्न मित्र
एंजेला

(ख) छात्र स्वयं करें।

(ग) मुझे इनमें सबसे अधिक सन्त कबीरदास पर जारी किया गया डाक-टिकट अच्छा लगा क्योंकि कबीरदास भारत में जन्मे एक श्रेष्ठ कवि और समाज सुधारक थे। उन्होंने अनपढ़ होते हुए भी देश में व्याप्त रूढ़ियों और अंधविश्वासों का विरोध किया और इस तरह समाज को एक नयी दिशा दी।

● लेखकों पर जारी डाक-टिकटों में केवल उनके नाम के अलावा कोई विशेष जानकारी नहीं दी जाती है। किसी-किसी पर लेखक के समयावधि की जानकारी भी दी जाती है।

साझी समझ

मुझे इस लेख में बिहू पर्व की जानकारी सबसे अच्छी लगी। यही पर्व ऐसा है जो एक साल में तीन बार मनाया जाता है। बिहू पर्व आपसी प्रेम, सौहार्द, सद्भावना तथा भाईचारे का त्योहार है। यह त्योहार स्पष्ट करता है कि असम के लोग स्वभाव से ही उत्सवप्रिय होते हैं। बिहू पर्व दर्शाता है कि असमी किसान अपने पालतू पशुओं को भी स्वजनों की भाँति प्रेम करते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग), **2.** (क), **3.** (क), **4.** (ख), **5.** (ग)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. ग्यारह, अनु, **2**. बिहू, सत्रिया, **3**. ब्रिटिश, जनजीवन पर, **4**. डाक्यूमेंन्ट्री, जनजीवन, **5**. बसंत, असमी

सुमेलन

स्तंभ अ		स्तंभ ब
1. एफिल टॉवर	5.	फ्रांस में स्थित लोहे से बना एक सुन्दर स्थल।
2. ताजमहल	3.	भारत में स्थित एक खूबसूरत इमारत।
3. सत्रिया	6.	असम के सत्रों में की जाने वाली नृत्य नाटिका।
4. प्रिया तथा रीता	2.	सत्रिया नर्तकी, जिनके नृत्य ने एंजेला और अनु का मन मोह लिया था।
5. अनु की माँ	4.	दक्षिणापथ निवासी रीता सेन।
6. केंजिंग्टन	1.	लंदन का एक शानदार इलाका जहाँ एंजेला रहती थी।

सत्य/असत्य

1. ×, **2.** ✓, **3.** ×, **4.** ✓, **5.** ×।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. एलेसेंड्रा अप्रैल के महीने में भारत आई थीं।
2. एलेसेंड्रा को वृत्तचित्र के फिल्मांकन के लिए केवल एक महीने का समय दिया गया था।
3. एलेसेंड्रा ने अपनी पुत्री के स्कूल से उसकी बसंत की छुट्टियाँ एक सप्ताह बढ़ाने की अनुमति ली थी।

4. एंजेला अचानक बनी भारत यात्रा का कारण नहीं समझ पायी थी।

5. एंजेला अपने माता-पिता के साथ गुवाहाटी से उसी शाम को निकट ही स्थित मलंग नामक गाँव गई थी।

6. मलंग गाँव में एंजेला को लोगों के साथ खुले आसमान के नीचे बैठकर ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी टाइम-मशीन में बैठी हो।

7. बिहू नृत्य और इसके उत्सव के बाद उन लोगों ने वहीं पर भोजन किया था। भोजन में उन्हें अत्यन्त स्वादिष्ट पकवान खाने के लिए परोसे गए थे।

8. असम के बिहू नृत्य की एक विशेषता यह है कि वह ग्रामीण जनजीवन के साथ-साथ फसल लगाने से लेकर बसंत के आगमन तक से जुड़ा हुआ है।

9. एंजेला को अपनी माँ पर इसलिए गर्व हुआ क्योंकि वह एक वैज्ञानिक कहानीकार की तरह थीं जो अपनी फिल्मों के द्वारा बहुत-सी चीजें एक साथ दिखाते हैं।

10. दक्षिणापथ पहुँचने पर उनकी भेंट असम की प्रसिद्ध लेखिका रीना सेन के साथ हुई थी।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. एंजेला के माता-पिता का नाम एलेसेंड्रा एवं ब्रायन था। दस वर्षीय एंजेला घर में अकेली संतान थी। उसके दो मित्र जेम्स और कीरा थे। वह समय व्यतीत करने के लिए अपने दोस्तों के साथ मिलकर काल्पनिक खेल खेला करती थी। उसे ऐसी कहानियों के किसी पात्र का चरित्र निभाने में बड़ा ही आनन्द आता था, जिसमें दूर-दूर के स्थानों का वर्णन होता हो। एंजेला को ताजमहल, एफिल टॉवर या कोलोजियम की यात्रा से सम्बन्धित कहानियाँ बहुत अच्छी लगती थीं।

2. एंजेला की माँ एलेसेंड्रा का व्यवसाय डॉक्यूमेंट्री फिल्मों का निर्माण करना था। उसे ब्रिटिश अकादमी द्वारा असम की नृत्य परम्परा पर एक वृत्तचित्र बनाने का नया काम मिला था। इसके लिए उन्हें अग्रिम पैसा भी दिया गया था। इस काम में सबसे बड़ी कठिनाई समय की कमी थी। उसे इस काम को केवल एक महीने में ही पूरा करना था।

3. एंजेला, परिवार में अकेली पुत्री थी। वह स्कूल में पढ़ती थी। एलेसेंड्रा को फिल्मांकन के लिए एक सहयोगी की आवश्यकता थी। वह अपने पति ब्रायन को सहयोगी के रूप में अपने साथ ले जाना चाहती थी। यदि वह ऐसा करती तो उसे एंजेला को अकेला छोड़ना पड़ता, जो कि वह नहीं चाहती थी। इसलिए वह एंजेला को अपने साथ भारत लेकर गई थी।

4. मलंग गाँव पहुँचने पर एंजेला को माँ ने बताया कि बिहू का त्योहार कृषि पर आधारित है। भारत एक कृषि प्रधान देश है इसलिए यहाँ की जनसंख्या का एक बड़ा भाग किसान है। किसान बिहू का त्योहार एक वर्ष में तीन बार मनाते हैं। असम में बिहू उत्सव तथा नृत्य दोनों का ही नाम है।

5. एंजेला भारत में रहकर महसूस कर रही थी कि यहाँ का जन-जीवन लंदन के जन-जीवन से एकदम अलग है। भारत के लोग वहाँ के लोगों की अपेक्षा अधिक मित्रवत, सौहार्दपूर्ण एवं मिलनसार हैं। यहाँ के लोग उत्सवप्रिय हैं। वहाँ के लोग उमंग और उल्लास के साथ सामूहिक रूप से त्योहार मनाते हैं जबकि लंदन में ऐसा नहीं है।

6. एंजेला दक्षिणापथ में अनु के घर पर ही रुकी थी। अनु भी उसकी तरह दस साल की थी। अनु अंग्रेजी बोल और समझ सकती थी। एंजेला को यहाँ पर किसी ऐसे दोस्त की कमी महसूस हो रही थी जो उसकी बात को समझ सके और भारत के विषय में उसे कुछ समझा सके। इन्हीं सब कारणों से अनु एवं एंजेला में तुरन्त ही दोस्ती हो गयी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. एलेसेंड्रा असम के बारे में निम्नलिखित बातें पहले से ही जानती थीं:

(i) असम भारत का अत्यन्त सुन्दर राज्य है।

(ii) यह भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में स्थित है।

(iii) असम का वन्य-जीवन बहुत ही आकर्षक है। यहाँ घने वनों में तरह-तरह के जीव-जन्तु पाए जाते हैं।

(iv) असम रेशम और चाय के बागानों के लिए प्रसिद्ध है।

(v) यहाँ की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा कृषि करता है।

(vi) यह राज्य अपनी नृत्य परंपरा के लिए जाना जाता है।

(vii) असमी लोग उत्सवप्रिय होते हैं। वे सामूहिक रूप से उल्लास के साथ त्योहार मनाते हैं।

(viii) बिहू और सत्रिया यहाँ के प्रसिद्ध नृत्य संगीत हैं।

2. बिहू का उत्सव मनाने के लिए मलंग गाँव में एक

बरगद के पेड़ के नीचे एक मंच बनाया गया था, जिस पर युवक-युवतियों द्वारा नृत्य करना था। मंच के चारों ओर खुले आसमान के नीचे बहुत से लोग जमा थे। एंजेला ने एक साथ इतने सारे लोगों को एक जगह पर कभी नहीं देखा था। मंच पर लड़के और लड़कियाँ जोश, आनन्द और उल्लास में डूबकर नाच रहे थे। इस त्योहार का आयोजन बसंत के आगमन के उपलक्ष्य में किया गया था। नृत्य कर रहे लड़कों के हाथों में बाजे थे। लड़कियाँ लाल और बादामी रंग की डिजाइन वाली सुन्दर-सुन्दर पोशाकें पहने हुई थीं। वे सभी नृत्य की मस्ती में डूबे हुए थे। उनकी हाथ-पैरों की थिरकन, शरीर की हलचल से साफ दिखाई दे रहा था कि वे सभी आनन्द में डूबे हुए हैं। उन्हें उस समय नाच-गाने के अलावा कुछ भी नहीं सूझ रहा था। उनके नृत्य में कुछ ऐसा आकर्षण था कि दर्शक भी संगीत की ताल पर थिरक उठे थे।

3. बिहू असम का सबसे लोकप्रिय त्योहार है। इसे ग्रामीण असमिया जीवन में कृषि का सम्मान करने के लिए मनाया जाता है। यह त्योहार साल में तीन बार मनाया जाता है, जो असम की मूल धान की खेती के तीन अलग-अलग चरणों को दर्शाता है।

(i) रोंगाली या बोहाग बिहू—यह बिहू सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इसे असमिया कैलेंडर के पहले महीने बोहाग (बैसाख, सामान्यत: अप्रैल) में मनाया जाता है। यह असमिया नव-वर्ष के आगमन का प्रतीक है। इसलिए इसे बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। इस समय खेतों में बीज बोए जाते हैं। इस समय बसंत ऋतु होने के कारण प्रकृति फूलों से सज जाती है, इसलिए इसे रोंगाली बिहू भी कहते हैं।

(ii) काटी या कोंगाली बिहू—यह कार्तिक मास सामान्यत: अक्टूबर के महीने में मनाया जाता है। इस समय धान के पौधों की खेतों में रोपाई का काम किया जाता है।

(iii) भोगाली या माघ बिहू—यह माघ, सामान्यत: जनवरी के महीने में मनाया जाता है। यह वह समय होता है जब धान की फसल की कटाई की जाती है।

परंपरागत रूप से बिहू को लोकनृत्य और गीतों के साथ मनाया जाता है, जो प्रेम और उत्साह तथा सहयोग के संसार का प्रतीक है। बिहू उत्सव जाति, धर्म, पंथ से परे अत्यधिक उमंग और आनन्द के साथ मनाया जाता है।

4. दस वर्षीय एंजेला अपने परिवार में इकलौती संतान थी। उसके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(i) कल्पनाशील—एंजेला ने अपनी एक काल्पनिक दुनिया बसाई हुई है। वह काल्पनिक कहानियों के पात्रों के रूप में खुद को देखती है।

(ii) मित्रतापूर्ण व्यवहार—उसे मित्र बनाना और उनके साथ खेल-कूद कर समय बिताना बहुत अच्छा लगता है। 'लंदन' में जेम्स और कीरा उसके मित्र हैं। उनसे वह खूब प्रेम करती है तथा अपना समय आनंद से व्यतीत करती है। भारत आने पर वह अनु को अपनी सहेली बनाकर बहुत खुश होती है।

(iii) यात्रा करने का शौक— एंजेला छोटी-सी लड़की है, किन्तु उसे यात्रा करने का बहुत शौक है। यहाँ तक कि वह ऐसी कहानियाँ पसन्द करती है जिनमें दूर-दूर के स्थानों की यात्रा करनी हो। भारत जाने की बात सुनकर वह बहुत खुश हो जाती है।

(iv) नृत्य-संगीत की शौकीन— एंजेला को नाचना-गाना बहुत अच्छा लगता है। भारत में बिहू तथा सत्रिया नृत्य का कार्यक्रम देखते समय उसका भी उनके साथ नाचने-गाने का मन करता है। लंदन लौटकर भी वह हर समय नाचती रहती है।

(v) मिलनसार— एंजेला बहुत मिलनसार है। उसे लोगों से मिलना-जुलना और बातें करना बहुत अच्छा लगता है। जब वह प्रिया और रीता से मिलती है तो उनके साथ तुरन्त घुल-मिल जाती है और उनसे नृत्य की कुछ खास बातें सीखती है।

5. सत्रिया नृत्य करते समय महिला-नृत्यांगनाओं के दो द्वारपालों जय और विजय की कहानी को नाटक के रूप में प्रस्तुत किया था। वे दोनों स्वर्ग के दरबान थे। एक बार विष्णु भगवान क्षीरसागर में विश्राम कर रहे थे। तभी कुछ ऋषि-मुनि उनसे मिलने के लिए वहाँ पहुँच जाते हैं। जय-विजय द्वार पर खड़े थे और द्वार की रखवाली कर रहे थे। उन्होंने उन ऋषि-मुनियों को स्वर्ग में प्रवेश नहीं करने दिया। वे नहीं चाहते थे कि भगवान की नींद में बाधा आए। स्वर्ग के द्वार पर ही रोक लिए जाने पर ऋषि-मुनि क्रोधित हो गए। उन्होंने जय-विजय को तुरंत असुर बन जाने का शाप दे दिया। जबकि वे दोनों तो अपने कर्तव्य का पालन कर रहे थे। उनका कोई दोष नहीं था। जब भगवान विष्णु नींद से जागे तो उन्हें उस घटना का पता चला। उन्हें बहुत दुख हुआ कि उनके द्वारपालों को बेकसूर होने पर भी ऋषि-मुनियों ने दैत्य बना दिया है। भगवान ने जय-विजय को श्राप से मुक्त करने का निश्चय कर लिया। उन्होंने श्राप से मुक्त करने के लिए पहले

तो उन्हें मार डाला। इस प्रकार उनका दैत्य जीवन समाप्त हो गया। तदुपरांत नए जन्म में उन्हें अपना द्वारपाल बना लिया।

6. निम्नलिखित बातों और घटनाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि एंजेला को नृत्य-संगीत बहुत अच्छा लगता था—

(i) मलंग गाँव में बिहू त्योहार के दौरान वह बिहू नृत्य में खोकर रह गयी थी। उस समय उसका मन भी वैसे ही रंग-बिरंगे सुन्दर वस्त्र पहनकर नाचने को हो रहा था।

(ii) जब अनु लकड़ी के तीर-कमान लेकर राम का अभिनय करते हुए नाच-कूद करने लगी तो वह भी रावण के स्वरूप में उसका साथ देने लगी।

(iii) एंजेला को सत्रिया नृत्य भी बहुत पसंद आया था। जब वह और अनु सत्रिया नृत्य देखकर वापस लौटीं तो वे स्वर्ग के द्वारपालों जय-विजय का अभिनय करते हुए हाथों में तलवार और दूसरे हथियार लेकर नाचती-गाती थीं।

(iv) एंजेला का नृत्य के प्रति आकर्षण इस बात से भी चलता है कि जब उसे प्रिया और रीता से मिलवाया गया तो उसने इस मौके का लाभ उठाते हुए नृत्य से सम्बन्धित बहुत-सी बातें उनसे सीख लीं।

(v) एंजेला जब लंदन वापस गई तो वह खेलते, खाते, चलते समय भी नाचती ही रहती थी। इसके अलावा उसने सीखे हुए नृत्य का प्रदर्शन अपने स्कूल में भी किया था।

**

9 मैया मैं नहिं माखन खायो

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

मेरी समझ से

(क) 1. मेरे छोटे-छोटे हाथ छीके तक कैसे जा सकते हैं।

2. माखन खा रहे थे।

(ख) *उत्तर चुनने के कारण:*

1. तारों या रस्सियों से बना छीका एक ऐसा साधन होता है, जिसे माखन आदि श्रेष्ठ खाद्य पदार्थ रखकर छत या दीवार में लगी खूँटी से लटका दिया जाता है जिससे उसे कुत्ते, बिल्ली आदि जानवरों से सुरक्षित रखा जा सके। हमने यह उत्तर इसलिए चुना कि छीका इतनी ऊँचाई पर होता है कि उस तक छोटा बालक नहीं पहुँच सकता।

2. इस उत्तर को चुनने का कारण यह है कि जब माता यशोदा ने उन्हें देखा तब उनके मुँह पर माखन लगा हुआ था।

मिलकर करें मिलान

शब्द	अर्थ या संदर्भ
1. जसोदा	4. यशोदा, श्रीकृष्ण की माँ, जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था।
2. पहर	1. समय मापने की एक इकाई (तीन घंटे का एक पहर होता है। एक दिवस में आठ पहर होते हैं।)
3. लकुटि कमरिया	8. लाठी और छोटा कंबल, कमली (मान्यता है कि श्रीकृष्ण लकुटि-कमरिया लेकर गाय चराने जाया करते थे।)
4. बंसीवट	2. एक वट वृक्ष (मान्यता है कि श्रीकृष्ण जब गाय चराया करते थे, तब वे इसी वृक्ष के ऊपर चढ़कर वंशी की ध्वनि से गायों को पुकारकर उन्हें एकत्रित करते।)

5. मधुबन	7. मथुरा के पास यमुना के किनारे का एक वन।
6. छीको	3. गोल पात्र के आकार का रस्सियों का बुना हुआ जाल जो छत या ऊँची जगह पर लटकाया जाता है, ताकि उसमें रखी हुई खाने-पीने की चीज़ों (जैसे– दूध, दही आदि) को कुत्ते, बिल्ली आदि न पा सकें।
7. माता	5. जन्म देने वाली, उत्पन्न करने वाली, जननी, माँ।
8. ग्वाल-बाल	6. गाय पालने वालों के बच्चे, श्रीकृष्ण के संगी-साथी।

पंक्तियों पर चर्चा

(क) इस पंक्ति में श्रीकृष्ण माता यशोदा से कह रहे हैं कि सवेरा होते ही तू मुझे गायों को चराने के लिए उनके पीछे-पीछे मधुबन को भेज देती है।

(ख) यशोदा मैया को श्रीकृष्ण की बातों को सुनकर एकदम से हँसी आ गई और उन्होंने श्रीकृष्ण को उठाकर गले से लगा लिया।

सोच–विचार के लिए

(क) श्रीकृष्ण ने अपने बारे में बताया है कि वे अभी छोटे से बालक हैं। उनके छोटे-छोटे हाथ हैं जो छीके तक पहुँच ही नहीं सकते हैं, इसलिए उन्होंने मक्खन नहीं खाया है।

(ख) माता यशोदा श्रीकृष्ण द्वारा बोले गए सफेद झूठ को समझ रही थीं। वे उनकी भोली बातों को सुनकर एकदम से हँस पड़ीं। उन्होंने श्रीकृष्ण को मनाने के लिए अपने गले से लगा लिया।

कविता की रचना

(क) *कविता की कुछ विशेषताएँ:*

1. प्रथम पंक्ति के साथ ही प्रत्येक पंक्ति में तुकबंदी की गई है।
2. ब्रजभाषा का सुन्दर प्रयोग है।
3. रँगे हाथों पकड़े जाने पर भी श्रीकृष्ण मक्खन खाने की बात को स्वीकार नहीं कर रहे हैं।
4. श्रीकृष्ण माखन खाने की बात स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। उन्होंने अपने सखाओं पर दोष लगाते हुए उन्हें अपना विरोधी बता दिया है।
5. वे यशोदा माता को दोष लगाने से भी पीछे नहीं हटे हैं और कह दिया कि वे श्रीकृष्ण को अपना बेटा नहीं मानती हैं।
6. श्रीकृष्ण माता यशोदा को धमकी देने से भी पीछे नहीं हटे हैं।

(ख) छात्र कक्षा में स्वयं करें।

अनुमान या कल्पना से

(क) श्रीकृष्ण स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने के लिए माता यशोदा को तर्क दे रहे हैं। इन तर्कों के द्वारा वह सिद्ध करना चाहते हैं कि उन्होंने माखन नहीं खाया है।

(ख) जब माता यशोदा ने श्रीकृष्ण को गले से लगा लिया, तब श्रीकृष्ण प्रसन्न हो गए होंगे और इसी प्रसन्नता में वे माता यशोदा के सीने से चिपक गए होंगे।

शब्दों के रूप

(क)

⋆	परे	पड़ने पर
⋆	कछु	कुछ
⋆	छोटो	छोटा
⋆	लै	ले लो, ले लीजिए
⋆	बिधि	प्रकार से, तरीके से
⋆	नहिं	नहीं
⋆	भोरी	भोली

(ख)

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. उपजि	**2.** उपजना, उत्पन्न होना
2. जानि	**3.** जानकर, समझकर
3. जायो	**8.** जन्मा
4. जिय	**7.** मन, जी
5. पठायो	**11.** भेज दिया
6. पतियायो	**4.** विश्वास किया, सच माना
7. बहियन	**5.** बाँह, हाथ, भुजा
8. बिधि	**6.** प्रकार, भाँति, रीति
9. बिहँसि	**1.** मुसकाई, हँसी
10. भटक्यो	**10.** इधर-उधर घूमा या भटका

11. लपटायो **9.** मला, लगाया, पोता

वर्ण–परिवर्तन

शब्द: परे = पड़े, **केहि** = किस, **बहुतहि** = बहुत ही, **मोहि** = मुझे, **परे** = पले।

पंक्ति से पंक्ति

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो।	4. सुबह होते ही गायों के पीछे मुझे मधुबन भेज दिया।
2. चार पहर बंसीवट भटक्यो, साँझ परे घर आयो।	5. चार पहर बंसीवट में भटकने के बाद साँझ होने पर घर आया।
3. मैं बालक बहियन को छोटो, छीको केहि बिधि पायो।	1. मैं छोटा बालक हूँ, मेरी बाँहें छोटी हैं, मैं छीके तक कैसे पहुँच सकता हूँ?
4. ग्वाल–बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।	6. ये सब सखा मुझसे बैर रखते हैं, इन्होंने मक्खन हठपूर्वक मेरे मुख पर लिपटा दिया।
5. तू माता मन की अति भोरी, इनके कहे पतियायो।	3. माँ तुम मन की बड़ी भोली हो, इनकी बातों में आ गई हो।
6. जिय तेरे कछु भेद उपजि है, जानि परायो जायो।	2. तेरे हृदय में अवश्य कोई भेद है, जो मुझे पराया समझ लिया।

पाठ से आगे

आपकी बात

हाँ एक बार मेरे साथ भी ऐसा हुआ था। मेरे दोस्त के साथ कुछ अनबन हो जाने के कारण उसने मेरे घर जाकर कह दिया था कि मैं उस दिन स्कूल नहीं पहुँचा था। बल्कि पार्क में खेलता रहा था। मेरी मम्मी ने उस पर विश्वास कर लिया और मेरे घर लौटते ही वह मुझ पर बरस पड़ी थीं। उन्हें मुझ पर विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मैं स्कूल गया था। तब मैंने सबूत के तौर पर वे नोट–बुक्स दिखाईं जिन पर मैंने उस दिन का कक्षा कार्य किया था। जब उन्होंने अपनी आँखों से दिनांक और विषय अध्यापक के हस्ताक्षर देखे तब जाकर उन्हें मेरी बात पर विश्वास हुआ था। उन्होंने मेरे उस मित्र को बुलाकर खूब डाँटा।

घर की वस्तुएँ

मटका, इस्त्री, चौकी, सिलाई मशीन, खटोला (चारपाई), मर्तबान, सूप, सिलबट्टा, चक्की (चाकी), बीजना (पंखा), रई, छलनी, डलिया, खल्लड़ (इमामदस्ता), दही चलावनी (मथानी)।

दूध से घी बनाने की प्रक्रिया:

1. सर्वप्रथम गायों को जंगल में चराने के लिए ले जाया जाता है। वहाँ वे हरी–हरी घास तथा अन्य वनस्पति खाकर अपना पेट भरती हैं।
2. तब हम अपनी गायों को दुहकर उनका दूध निकालते हैं।
3. उस दूध को आग पर रखकर उबाल आने तक गर्म किया जाता है।
4. फिर उस दूध को ठंडा होने के लिए रख देते हैं। जब दूध ठंडा होकर गुनगुना रह जाता है तो उसमें जामन (एक दो चम्मच दही) डालकर रख देते हैं। सुबह तक उस दूध का दही बन जाता है।
5. उस दही को मथानी में डालकर बिलोया जाता है। दही को कुछ समय तक बिलोने पर छाछ और मक्खन अलग–अलग हो जाते हैं। इस मक्खन को लोनी भी कहते हैं।
6. अब छाछ में से ऊपर आ गया मक्खन निकालकर किसी दूसरे बर्तन में रख दिया जाता है।
7. अब उस मक्खन को धीमी आग पर गर्म किया जाता है। कुछ देर गर्म करने पर मक्खन का पानी और छाछ जल जाते हैं और घी अलग हो जाता है।
8. अब इस घी को दूसरे साफ और सूखे बर्तन में निकाल लिया जाता है।

समय का माप

(क) समय बताने के लिए प्रयुक्त कुछ शब्द : आज, सप्ताह, कभी, मियाद, शताब्दी, भोर, मध्यकाल, मास, कब, पक्ष, तिथि, दिनांक आदि।

(ख) श्रीकृष्ण के अनुसार वे बारह घंटे गाय चराया करते थे।

(ग) यदि वे शाम को छः बजे गाय चराकर लौटे तो वह सुबह छः बजे गाय चराने के लिए निकले होंगे।

(घ) दिन के पहले पहर का प्रारंभ सुबह 6 बजे होगा क्योंकि एक पहर में तीन घण्टे का समय होता है।

हम सब विशेष हैं

(क) आपकी : मेरे सिर के बाल लंबे और घुँघराले हैं।

आपके किसी परिजन की : मेरे चाचाजी थोड़ा-सा हकलाते हैं।

आपके शिक्षक की : मेरे शिक्षक बहुत तेज चाल में चलते हैं।

आपके मित्र की : मेरा मित्र लँगड़ा कर चलता है।

(ख) ❖ यदि मेरे सहपाठी को पाठ समझ में नहीं आ रहा है तो मैं स्वयं उसे समझाने का प्रयास करूँगा। फिर भी नहीं समझ पाता है तो मैं उसे अपनी नोटबुक दे दूँगा ताकि उसकी सहायता से उसे पाठ समझने में आसानी हो।

❖ ऐसे विद्यार्थी को मैं ब्रेल लिपि का सहारा लेने की सलाह दूँगा। साथ ही उसे मैं उस पाठ का सार पढ़कर सुनाऊँगा। ऐसा कई बार करने से वह पाठ उसकी समझ में आ जाएगा।

❖ ऐसी स्थिति मैं उसे एक ही सलाह दूँगा कि वह धीरे-धीरे बोलने का अभ्यास करे। कुछ समय के अभ्यास से उसे धीरे-धीरे बोलने की आदत पड़ जाएगी।

❖ ऐसे विद्यार्थी के लिए उस भाषण को ऐसे सरल शब्दों में लिखकर दे दूँगा जिन्हें बोलने-पढ़ने में उसे अटकना नहीं पड़ेगा।

❖ इसके लिए मैं उसका साथ देते हुए अपने साथ चलने को प्रेरित करूँगा। फिर उसे अपेक्षाकृत तेज और तेज चलने के लिए कहूँगा। जब उसे मेरे साथ तेज चलने का अच्छा अभ्यास हो जाएगा, तो फिर मैं उसे दौड़ने को कहूँगा। गिरने की स्थिति में मैं उसे सँभाल लूँगा।

❖ इसके लिए मैं उसे संकेतों को समझने के लिए कहूँगा। हाँ, इतना और कहूँगा कि वह सुनने वाली मशीन खरीद ले।

आज की पहेली

खो	द	म	**ची**	**ज**	ल
आ	**ही**	**ला**	प	छा	**स्सी**
मि	**ठा**	**ई**	**नी**	**छ**	
घी		श	**र**	**ब**	**त**
आ	**इ**	**स**	**क्री**	**म**	

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख), **2.** (क), **3.** (क), **4.** (घ), **5.** (घ)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. श्रीकृष्ण, भक्त। **2.** ब्रज, श्रीकृष्ण। **3.** हँसकर, गले या हृदय। **4.** माखन, विश्वास। **5.** भोर, चराने।

सुमेलन

स्तंभ (अ)	स्तंभ (ब)
1. श्रीकृष्ण अपनी गायों को चराने के लिए जाते थे	**3.** बंसीवट पर
2. श्रीकृष्ण के मुँह पर लगा हुआ माखन तो	**5.** उनके संगी-साथियों ने ही लपेटा था।
3. श्रीकृष्ण की छोटी-छोटी बाँहें थीं, इसलिए	**4.** वे छीके तक पहुँच ही नहीं सकती थीं।
4. श्रीकृष्ण के साथी ग्वाल-बाल अब	**2.** उनके बैरी बन गए थे।
5. माता यशोदा भी अब	**1.** श्रीकृष्ण से पहले जैसा व्यवहार और प्रेम नहीं करती थीं।

सत्य/असत्य

1. ✗, **2.** ✗, **3.** ✓, **4.** ✗, **5.** ✓।

अतिलघु / लघु उत्तरीय प्रश्न

1. नहीं, श्रीकृष्ण का यह कथन "उन्होंने माखन नहीं खाया था", सत्य नहीं है।
2. श्रीकृष्ण को सबसे अधिक मक्खन प्रिय था।
3. इस पंक्ति में श्रीकृष्ण के मन का क्रोध प्रकट हुआ है।
4. माता यशोदा ने श्रीकृष्ण का क्रोध शांत करने के लिए उन्हें गले से लगा लिया।
5. इस पद में गोपियाँ तथा अन्य ग्वाल–बाल श्रीकृष्ण पर माखन चोरी का आरोप मढ़ देते हैं। यशोदा श्रीकृष्ण से इस विषय पर बात करती है तब श्रीकृष्ण अपनी माता यशोदा को स्वयं द्वारा माखन न खाने की सफाई दे रहे हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. इस पद में श्रीकृष्ण ने अपनी सफाई में निम्नलिखित तर्क दिए हैं :
   (1) मैं चार पहर तक वन में रहकर गाय चराता हूँ।
   (2) बालक होने के कारण मेरे हाथ भी छोटे हैं इसलिए मैं छीके तक नहीं पहुँच सकता।
   (3) यह माखन जो मेरे मुँह पर लगा है, वह तो ग्वाल–बालों ने लगाया है, क्योंकि वे सब मुझसे बैर मानते हैं।
2. अपनी बात को सिद्ध करने के लिए श्रीकृष्ण ने हर तरीका अपनाया है। अपने पक्ष में तर्क देते हुए वे कहते हैं कि वे सारे दिन गाय चराते हुए वन में रहते हैं तो उन्होंने मक्खन कैसे खा लिया। वे एक तर्क और देते हैं कि बालक होने के कारण उनके हाथ छीके तक पहुँच ही नहीं सकते। वे अपने मित्र ग्वाल–बालों को भी नहीं छोड़ते हैं और उन पर दोषारोपण करते हुए कहते हैं कि उन्होंने मुझे परेशान करने के लिए मेरे मुँह पर मक्खन लगा दिया है। इस तरह वे उन्हें अपना बैरी कहने में भी हिचकते नहीं हैं। जब उन्हें लगता है कि इन तर्कों से काम नहीं चलेगा तो वे माता की चापलूसी पर उतर आते हैं और उन्हें ऐसी भोली–भाली माँ कह देते हैं जो किसी की भी झूठी बात पर तुरन्त विश्वास कर लेती है। अन्त में वे उन्हें यह कहकर गाय न चराने की धमकी भी दे डालते हैं। कह देते हैं कि अपनी लाठी और कम्बल अपने पास रखो क्योंकि सब लोगों ने उन्हें बहुत ही परेशान करके रख दिया है।

**

10 परीक्षा

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास–प्रश्नोत्तर

पाठ से

मेरी समझ से

(क) 1. नीतिकुशलता।

2. राज–काज सँभालने योग्य शक्ति न रहना।

(ख) 1. महाराज–देवगढ़ अपने दीवान सरदार सुजानसिंह का अत्यधिक सम्मान करते थे। दीवान साहब के अन्दर सभी मानवीय गुण, सादगी, उदारता तथा आत्मिक बल भी था। साथ ही वे नीतिकुशल भी थे और इसी गुण के कारण महाराज जानते थे कि दीवान साहब ही किसी योग्य दीवान का चुनाव कर सकते थे।

2. सरदार सुजानसिंह वृद्ध हो चुके थे, वे यह मानते थे कि वृद्धावस्था के कारण उन्हें राज्य के कार्यों को सँभालने में परेशानियाँ होंगी। साथ ही वह शेष जीवन भगवान के भजन में गुजारना चाहते थे।

शीर्षक

(क) देवगढ़ के दीवान सरदार सुजानसिंह अपने पद से अवकाश लेना चाहते थे। उनके स्थान पर नये दीवान का चयन किया जाना था। चयन का एक ही माध्यम है कि सभी उम्मीदवारों के अन्दर नैतिक गुणों के होने की परीक्षा ली जाए इसलिए प्रेमचंद ने इस कहानी का शीर्षक 'परीक्षा' रखा होगा।

(ख) यदि हमें इस कहानी को कोई अन्य नाम देना है तो हम उसको 'दीवान का चयन' नाम देंगे। क्योंकि सम्पूर्ण कहानी के केन्द्र में नये दीवान का चयन ही है।

पंक्तियों पर चर्चा

दीवान के पद पर चयनित व्यक्ति का हृदय उदार होना चाहिए। उसमें इतनी आत्मशक्ति होनी चाहिए जिससे वह किसी भी मुसीबत का वीरता से सामना कर सके। ऐसे दयावान और आत्मशक्ति वाले लोगों की संख्या इस संसार में बहुत कम है। जो हैं वे प्रतिष्ठा और यश के ऊँचे-ऊँचे पदों पर बैठकर काम कर सकते हैं।

सोच-विचार के लिए

(क) नौकरी की चाह में आए लोगों ने स्वयं को उत्तम गुणों से युक्त दिखाने की कोशिश की। जो देर रात को सोते और सुबह 9 बजे के बाद जागते थे, वे जल्दी उठकर बगीचे में जाकर सूर्योदय के दर्शन करने लगे। जो हर किसी से असभ्यता से बात करते थे, वे नौकरों तक को सम्मान देते हुए उनसे आप और जी-जनाब करके बात कर रहे थे। जो लोग किताबों की शक्ल तक देखना पसन्द नहीं करते थे, उन्होंने मोटी-मोटी किताबें पढ़ना शुरू कर दिया। हॉकी के खिलाड़ियों ने हॉकी को भी एक विद्या माना और हॉकी का मैच खेला।

(ख) उसे किसान की सूरत देखते ही निम्नलिखित बातें ज्ञात हो गईं—

(1) किसान नाले को पार करते हुए अपनी बैलगाड़ी को नाले के ऊपर ले जाना चाहता है।

(2) किसान की बैलगाड़ी नाले की कीचड़ में इस तरह फँस गई है कि वह न तो आगे जा पा रही है और न पीछे।

(3) किसान के बैल इतने कमजोर हैं कि वे गाड़ी के बोझ को नाले के ऊपर तक नहीं ले जा सकते।

(4) किसान बहुत देर से किसी की सहायता की उम्मीद लगाए वहाँ खड़ा है, लेकिन किसी ने उसकी मदद नहीं की है।

(5) अपनी गरीबी के कारण वह सहायता माँगने में डर रहा है।

(6) यदि उसकी गाड़ी नाले के पार नहीं पहुँची तो उसे वहीं पर रात काटनी पड़ेगी।

(7) उसमें इतनी शक्ति है कि यदि वह जोर लगा देगा तो बैलगाड़ी को ऊपर खींचकर ले जा सकेंगे।

(ग) देवगढ़ राज्य के कर्मचारियों तथा वहाँ पधारे प्रतिष्ठित एवं धनवान लोगों की आँखों में सत्कार था। उन उम्मीदवारों की आँखों में ईर्ष्या थी जो बड़ी उम्मीद लेकर वहाँ आए थे मगर उनका उस पद पर चयन नहीं हुआ।

खोजबीन

(क) 1. नारायण चाहेंगे तो दीवानी आपको ही मिलेगी।

2. आवाज मिलती है, चेहरा-मोहरा भी वही।

(ख) 1. हर एक मनुष्य अपने जीवन को अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था।

2. मिस्टर 'अ' नौ बजे तक सोया करते थे, आजकल वे बगीचे में टहलते हुए ऊषा का दर्शन करते थे।

3. मिस्टर 'द', 'स' और 'ज' से उनके घर के नौकरों की नाक में दम था, लेकिन ये सज्जन आजकल 'आप' और 'जनाब' के बगैर नौकरों से बातचीत नहीं करते थे।

4. मिस्टर 'ल' को किताब से घृणा थी, परन्तु आजकल वे बड़े-बड़े ग्रन्थ देखने-पढ़ने में डूबे रहते थे।

5. जिससे बात कीजिए वह सदाचार और नम्रता का देवता बना मालूम होता था।

कहानी की रचना

'परीक्षा' कहानी की विशेषताएँ:

(1) 'परीक्षा' कहानी में गति प्रवाह है, जिसमें आगे की घटनाओं के लिए उत्सुकता बनी रहती है।

(2) वाक्य छोटे-छोटे तथा सरल हैं।

(3) भूल-चूक होना। नाम मिट्टी में मिलना, दाग लगना जैसे मुहावरों का अधिक प्रयोग।

(4) उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत एवं खड़ी बोली के शब्दों का प्रयोग- नसीब, सनद आदि उर्दू, अप्रेंटिस, मिशन आदि अंग्रेजी, दीपबंधु, ऊषा आदि संस्कृत के शब्द हैं।

(5) लहर बढ़ती चली आती है। 'मानो लोहे की दीवार हो' प्रतीकात्मक भाषा शैली का प्रयोग।

(6) गतिविधियों का सजीव चित्रण मानो घटना आँखों के सामने घटित हो रही है।

समस्या और समाधान

(क) महाराज के सामने दीवान पद के लिए ऐसे व्यक्ति के चयन की समस्या थी, जो सरदार सुजानसिंह जैसा उदार, आत्मशक्ति वाला तथा नीतिकुशल हो। इस समस्या का समाधान महाराज ने स्वयं न खोजकर इसका भार अपने दीवान के कंधों पर ही डाल दिया।

(ख) दीवान के सामने ऐसे व्यक्ति को तलाश करने की समस्या थी जिसके अन्दर मानवीय गुण हों। इस समस्या के समाधान के लिए उन्होंने देश के प्रसिद्ध समाचार-पत्रों में विज्ञापन देकर, उम्मीदवारों को एक महीने के परीक्षा समय के लिए आमंत्रित किया। उनके रहने-खाने का उचित प्रबंध किया और उनके ऊपर विशेष नजर रखी जिससे उनकी परख हो सके।

(ग) नौकरी के लिए आए लोगों की समस्या उनकी बेरोजगारी थी। उन लोगों के लिए यह समस्या थी कि उन्हें अपने नैसर्गिक गुणों के विपरीत आचरण करना पड़ रहा था। देर तक सोने वाला जल्दी जागकर बगीचे में टहल रहा था। नौकरों से दुर्व्यवहार करने वाले उनको सम्मान देने को मजबूर थे। पढ़ाई-लिखाई से दूर भागने वाले पुस्तकें लिए घूम रहे थे। लेकिन अपनी इन्हीं समस्याओं के विपरीत आचरण को वे इन समस्याओं का समाधान भी मान रहे थे।

मन के भाव

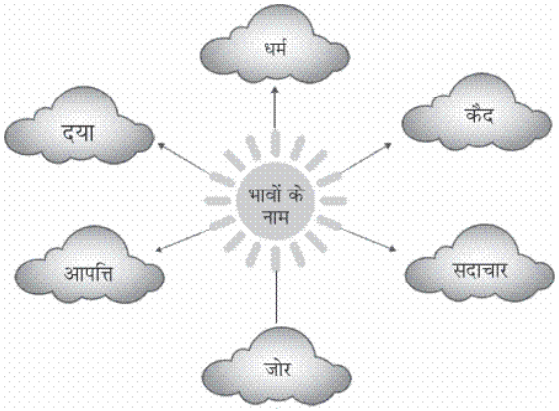

अभिनय

विद्यार्थी अपने अध्यापक के मार्ग-दर्शन में स्वयं करने का प्रयास करें।

विपरीतार्थक शब्द

स्तंभ (1)	स्तंभ (2)
1. आना	7. जाना
2. गुण	4. अवगुण
3. आदर	9. अनादर
4. स्वस्थ	5. अस्वस्थ
5. कम	6. अधिक
6. दयालु	1. निर्दयी
7. योग्य	8. अयोग्य
8. हार	3. जीत
9. आशा	2. निराशा

कहावत

❖ **अधजल गगरी छलकत जाए**—जिसके पास थोड़ा ज्ञान होता है, वह उसका दिखावा करता है। मृदुल केवल गली में ही क्रिकेट खेला है। उसने कभी मैदान की शक्ल तक नहीं देखी है। मगर क्रिकेट देखते समय हर गेंद और शॉट की ऐसी कमियाँ निकालता है जैसे विशेषज्ञ क्रिकेटर हो। सच ही है—**अधजल गगरी छलकत जाए।**

❖ **अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत**—समय निकल जाने के बाद पछताना व्यर्थ होता है। सबने हरित को कितना समझाया था लेकिन उसने किताब उठाकर नहीं देखी। अब फेल हो जाने पर बैठा-बैठा रो रहा है। उससे क्या लाभ होगा? यह तो वही बात हो गई, "अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।"

❖ **एक अनार सौ बीमार**—कोई ऐसी एक चीज, जिसको चाहने वाले अनेक हों—कोरोना काल में मुँह पर लगाने वाले मास्क की बाजार में **एक अनार सौ बीमार** वाली हालत थी। बाजार में बिकने के लिए 100 मास्क आते थे और हजारों लोग खरीदने को तैयार बैठे रहते थे। यही हालत अस्पतालों में वेंटीलेटर की सुविधा की उपलब्धता की थी।

❖ **जो गरजते हैं वे बरसते नहीं हैं**—जो अधिक बढ़-चढ़कर बोलते हैं, वे काम नहीं करते हैं— कविता कक्षा में कल मुझे पीटने की धमकी दिए जा रही थी। मैंने भी फिर धीरे-से कह दिया, **जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं** हैं।

❖ **जहाँ चाह, वहाँ राह**—जब किसी काम को करने की इच्छा होती है, तो उसका साधन भी मिल जाता है। संस्कार ने दसवीं कक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने के लिए दिन देखा न रात, पढ़ाई में जुटा रहा। उसकी मेहनत सफल हुई और उसने बोर्ड की परीक्षा में मेरिट लिस्ट में प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया है। सच ही कहा गया है—**जहाँ चाह होती है, वहाँ राह** निकल ही आती है।

पाठ से आगे

अनुमान या कल्पना से

(क) 'दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध पत्रों में यह विज्ञापन निकला' देश के प्रसिद्ध पत्रों में नौकरी का विज्ञापन दीवान सरदार सुजानसिंह की सलाह पर देवगढ़ के राजा ने निकलवाया होगा। क्योंकि प्रसिद्ध अखबारों में विज्ञापन देने के लिए बहुत अधिक पैसे की आवश्यकता होती है, जो किसी धनवान व्यक्ति के पास ही हो सकता है। दूसरे, राजा को अपनी रियासत के लिए दीवान की आवश्यकता थी न कि सरदार सुजानसिंह को। इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि वह विज्ञापन राजा ने ही निकलवाया होगा।

(ख) 'इस विज्ञापन ने सारे मुल्क में तहलका मचा दिया।' सारे देश में इस विज्ञापन ने इसलिए तहलका मचा दिया होगा क्योंकि इतने ऊँचे और सम्मानित दीवान के पद के लिए किसी खास शैक्षणिक योग्यता या अनुभव की माँग नहीं की गई थी। केवल आवश्यक गुण के रूप में हृष्ट-पुष्ट शरीर होना ही आवश्यक था तथा पेट के रोगियों को प्रतियोगिता में भाग लेने की मनाही थी।

विज्ञापन

(क) छात्र स्वयं करें।

(ख) अभी कुछ दिन पहले मैंने एक अस्पताल की दीवार पर चिपका हुआ विज्ञापन देखा था। उस विज्ञापन में बताया गया था कि यदि हम स्वस्थ और नीरोगी रहना चाहते हैं तो हमारे पास ऐसी बहुत-सी दवाइयाँ हैं जो हमें नि:शुल्क प्राप्त होती हैं। इन दवाइयों के लिए हमें एक भी पैसा खर्च नहीं करना पड़ता। इसलिए मुझे यह विज्ञापन बहुत अच्छा लगा था। वह विज्ञापन कुछ इस प्रकार था—

मुफ्त दवाइयाँ जो आपको स्वस्थ रखती हैं। ये दवाइयाँ किसी केमिस्ट के पास नहीं मिलतीं—

1. कसरत भी एक दवाई है।
2. सुबह-शाम घूमना भी एक दवाई है।
3. व्रत-उपवास रखना भी एक दवाई है।
4. परिवार के साथ भोजन करना भी एक दवाई है।
5. हँसी-मजाक करना भी एक दवाई है।
6. गहरी नींद सोना भी एक दवाई है।
7. जल्दी सोना और जल्दी जागने की आदत भी एक दवाई है।
8. अपनों के साथ सोना भी एक दवाई है।
9. खुश रहना भी एक दवाई है।
10. लोगों का सहयोग करना भी एक दवाई है।

(ग) विज्ञापन आधुनिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। सच बात है कि आज विज्ञापनों के बिना किसी भी देश की उन्नति नहीं हो सकती। सामान्यत: विज्ञापन सभी के लिए अत्यन्त लाभदायक होते हैं, किन्तु इसके अलावा कुछ विज्ञापन केवल लोगों को ठगने और धोखा देने के लिए ही दिए जाते हैं।

लाभदायक विज्ञापन—नौकरी के लिए आवश्यकता, खोया-पाया, उद्योगों के प्रचार-प्रसार, अच्छी वस्तुओं की ब्रिकी आदि के विज्ञापन लाभदायक होते हैं।

हानिकारक विज्ञापन—असाध्य रोगों का 15 दिन में पूरा इलाज, वशीकरण मंत्रों द्वारा किसी को भी वश में करें। टोना-टोटका करके गड़ा हुआ धन मिलेगा, तंबाकू, शराब आदि के विज्ञापन, झूठी नौकरियों के सपने जगाते विज्ञापन, कुछ गलत विद्यालयों में प्रवेश के विज्ञापनों से समाज को अत्यधिक हानि होती है। इससे लोगों का न केवल धन लूट लिया जाता है, बल्कि कभी-कभी उनकी जान पर भी बन आती है।

आगे की कहानी

'परीक्षा' आगे की कहानी—पंडित जानकीनाथ-सा दीवान के पद पर आसीन हो जाते हैं। वे रियासत और वहाँ की प्रजा के प्रति अपना उत्तरदायित्व भलीप्रकार निभाने लगते हैं। उनका हृदय दया-धर्म की भावना से भरा हुआ है। इसलिए रियासत में खुशहाली है। किसी को उनसे कोई भी शिकायत नहीं है। किन्तु कभी-कभी राजा के मन में यह बात उठती है कि कहीं वृद्ध सेवानिवृत्त दीवान सरदार सुजानसिंह का अनुभव उन्हें धोखा तो नहीं दे गया है। कहीं उन्होंने इतने जिम्मेदारी के पद पर जानकीनाथ-सा का चयन करके कोई गलती तो नहीं कर दी है। राजा का यह सन्देह कई बार उन्हें विचलित कर देता था।

एक रात की बात है। नये दीवान अपने कक्ष में गहन निद्रा में डूबे हुए थे। मीठे सपनों में खोये हुए उनके चेहरे पर मुस्कान थी। अचानक एक तेज शोर की आवाज सुनकर उनकी नींद टूट गई। उनके कक्ष में खिड़की के द्वारा तीव्र रोशनी-सी आ रही थी। दीवान जी ने देखा कि कुछ ही दूरी पर उनके मकान के सामने की सड़क के दूसरी ओर कुछ जल रहा था। उसकी ही लपटों की रोशनी उनके शयन-कक्ष तक आ रही थी। दीवान जी ने एक पल भी नहीं गँवाया। वे बिना पैरों में चप्पल पहने ही खिड़की से कूदकर उस आग की ओर दौड़ पड़े।

पास जाकर देखा कि एक गाड़ी धू-धू कर जल रही थी। उसमें अनाज की बोरियों के कारण ऊँची-ऊँची लपटें उठ रही थीं। जलती हुई गाड़ी के निकट ही बैल बँधे हुए थे, जो आग की तेज गर्मी और चमक के कारण घबराहट में खूँटा तुड़ाकर भाग जाना चाहते थे। मगर रस्सी मजबूत होने के कारण ऐसा नहीं कर पा रहे थे। दीवान साहब ने अपनी चिंता किए बगैर सबसे पहले बैलों को वहाँ से खोलकर छोड़ दिया। फिर उन्होंने बैलगाड़ी को एक ओर से उठाकर पलट दिया। ऐसा करते ही उस पर लदी हुई अनाज की बोरियाँ नीचे गिर गईं। वे इस दौरान शोर भी मचाते जा रहे थे। बोरियाँ पलट जाने के बाद उन्होंने गाड़ी को आगे की ओर खींच लिया, ताकि वह जलने से बच सके।

इतने में ही वहाँ आस-पास के लोग भी पहुँच गए। सबने मिलकर पानी-मिट्टी डालकर आग बुझा दी। बैलों और गाड़ी को जलने से बचाने के चक्कर में जानकीनाथ-सा का शरीर कई स्थानों पर झुलस गया था। अचानक भीड़ में देवगढ़ के महाराज को देखकर दीवान साहब आश्चर्यचकित रह गए। राजा साहब के चेहरे पर एक मुस्कान थी। वे आगे बढ़े और अपने नए दीवान को अत्यन्त मान-सम्मान और प्रेम से अंक में भर लिया। फिर उनसे बोले कि तुम्हें दीवान का पद देकर सरदार सुजानसिंह ने कोई गलती नहीं की और उन पर असीम विश्वास करके मैंने भी कोई गलती नहीं की। मुझे तुम पर नाज है, दीवानजी और सुजानसिंह पर भी। खुद पर भी नाज है जो मुझे आप जैसा दयालु, परोपकारी, हिम्मती, वीर तथा धर्मपरायण दीवान मिला।

आपकी बात

(क) यदि दीवान साहब के स्थान पर मैं होता तो अपेक्षाकृत सरल उपाय अपनाता। योग्य व्यक्ति का चुनाव करने के लिए उस मार्ग में जहाँ से उन लोगों का आना-जाना होता 500 रुपये के नोटों की गड्डी रखवाता। एक व्यक्ति को बहुत ही दीन-हीन दशा में मार्ग में भीख माँगने के लिए खड़ा करता। किसी व्यक्ति को उसी मार्ग पर बीमार बनाकर लिटा देता और उसे कराहने के लिए कहता। किसी व्यक्ति को उसी सड़क के बीच में घायलावस्था में पड़ा होने का अभिनय करवाता। कुछ ऐसे गमले रखवा देता जो पानी के अभाव में मुरझा रहे हों।

अब मैं कहीं पर छुपकर इन सबकी निगरानी अपने लोगों के साथ-साथ स्वयं भी करता। यह देखता कि कौन-सा उम्मीदवार रुपयों की गड्डी को नहीं उठाता है या उसे उसके मालिक तक पहुँचाने का प्रयास करता है। उन असहाय लोगों की सहायता करता है तथा अस्पताल पहुँचाता है। यदि उनमें कोई ऐसा व्यक्ति मिलता जो लालची न होता। जो दयावान तथा परोपकारी होता और जो पौधों को प्रेम करने वाला होता उसे मैं दीवान के पद पर चुन लेता।

(ख) यदि हमें कक्षा का मॉनीटर चुनने को कहा जाएगा तो हम लोकतांत्रिक तरीका अपनाएँगे। मॉनीटर बनने के इच्छुक छात्रों के नाम श्यामपट पर लिख देंगे। फिर कक्षा के सभी छात्रों से कहेंगे कि लोग किसको अपना मॉनीटर चुनना पसंद करेंगे। जिस छात्र के पक्ष में अधिक हाथ उठते, बस उसे ही मॉनीटर बना देते। मॉनीटर बनने के लिए छात्र मेधावी होना चाहिए। मेधावी छात्रों का सभी सम्मान करते हैं। उसे अनुशासित, सहयोगी, आज्ञाकारी तथा कक्षा में नियमित होना चाहिए। सहपाठियों के गुणों तथा अवगुणों की पहचान साथ-साथ रहते हुए स्वयं ही हो जाती है। इस काम के लिए किसी परीक्षा की आवश्यकता नहीं होती है।

नया–पुराना

मेरे लिए नई वस्तुएँ	मेरे लिए पुरानी वस्तुएँ	परिवार के बड़ों के लिए नई वस्तुएँ	परिवार के बड़ों के लिए पुरानी वस्तुएँ
इलेक्ट्रोनिक खिलौने	चाबी वाले खिलौने	स्मार्ट फोन	बैलगाड़ी, ताँगा
ड्रॉन	टेडी बिअर	लैपटोप	सिनेमा हॉल
स्मार्ट वाच	लूडो, स्नेक	मैट्रो ट्रेन	परंपरागत वस्त्र
रोबोट	विडियो गेम	मॉल्स	सत्तू
अन्डर आर्मर कनेक्टेड शूज	हाइड एंड सीक	एस्केलेटर	मिट्टी के चूल्हे
वर्चुअल रियलिटी	पकवान, भोज्य	बायोमेट्रिक अटेंडेंस	सुराही
ई-बुक्स	पुस्तकें	डिजिटल कैमरा	लोहे, काँसे, पीतल के बर्तन

वाद–विवाद

वाद-विवाद: आपस में हॉकी का खेल हो जाए। यह भी तो आखिर एक विद्या है।

पक्ष में तर्क—

(अ) हॉकी का खेल भी एक विद्या ही है क्योंकि इसे खेलने के लिए विशेष खेल-कौशल तथा निपुणता की आवश्यकता होती है।

(ब) सही बात है यदि यह विद्या नहीं होती तो खिलाड़ियों को इसके लिए लम्बे समय तक प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं पड़ती।

(स) हाँ, इसका प्रशिक्षण तो हमेशा चलता ही रहता है। जिस प्रकार हर परीक्षा से पूर्व हमें पुस्तकें पढ़नी पड़ती हैं, उसी प्रकार हमें हर मैच से पहले खेल के नए-नए तरीके सीखने पड़ते हैं।

(द) इस खेल को खेलने और जीतने के लिए सजग रहकर नई-नई योजनाएँ बनानी पड़ती हैं, जिसके लिए बुद्धि का प्रयोग किया जाता है। बुद्धू लोग तो कोई मैच जीत ही नहीं सकते।

विपक्ष में तर्क—

(अ) हॉकी का खेल तो हम लोग अपने मनोरंजन के लिए ही तो खेलते हैं। इसे विद्या कैसे कहा जा सकता है?

(ब) कोई भी विद्या मनुष्य की आय का साधन भी बन जाती है। इसमें तो हमें हमेशा खर्च ही करना पड़ता है। मालूम है, हॉकी-स्टिक और गेंद कितनी महँगी है।

(स) यदि यह विद्या होती तो हमारी कक्षा के सारे बच्चों को यह विद्या सिखाई जाती। जैसे सभी विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता है, क्योंकि पुस्तकें विद्या हैं।

(द) हाँ, पूरे स्कूल में बड़ी मुश्किल से 20 बच्चे ही हॉकी खेलते हैं। उनमें भी ज्यादातर बच्चे गायब रहते हैं। यदि वह विद्या होती तो इसे विद्या की तरह पढ़ाया जाता और इसकी परीक्षा भी होती।

अध्यापक— हॉकी का खेल एक खेल है। जिनको इसमें रुचि है, उनके लिए यह विद्या है और जिनको रुचि नहीं है उनके लिए विद्या नहीं है। अत: इस वाद-विवाद में न तो किसी की हार हुई न ही किसी की जीत।

अच्छाई और दिखावा

(क) स्वयं को अच्छा दिखाने के लिए मनुष्य—

(1) आकर्षक तथा स्वच्छ कपड़े पहनता है।

(2) अपने बाल-दाढ़ी आदि समय-समय पर कटवाते हैं और उन्हें अच्छी तरह सँवारते हैं।

(3) दिन-रात अध्ययन करते हैं ताकि हमारी बुद्धि का विकास हो।

(4) सुबह-सुबह बाग-बगीचे या किसी पार्क में टहलने जाते हैं।

(5) महिलाएँ स्वयं को आकर्षक दिखाने के लिए शृंगार करती हैं।

(6) कुछ लोग अच्छा दिखाने के लिए साइकिल चलाकर दफ्तर जाते हैं।

(ख) हाँ, अच्छा दिखाने में और 'स्वयं के अच्छा होने में' जमीन-आसमान का अन्तर है। जो स्वयं अच्छे होते हैं, उनकी अच्छाई सबको दिखाई देती है। लेकिन जो लोग अच्छा दिखाने की कोशिश करते हैं वे स्वयं को ही तसल्ली देते हैं। इसको यों भी समझा जा सकता है कि जो लोग स्वयं अच्छे होते हैं उनका जीवन अनुशासित होता है। उनकी दिनचर्या नियमित रहती है। वे स्वयं भी खुश रहते हैं और उनके संगी-साथी भी उनका साथ पाकर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। लेकिन स्वयं को अच्छा दिखाने की कोशिश करने वालों की दिनचर्या बदलती रहती है। उनके जीवन में अनुशासन का अभाव रहता है। यदि पेट बाहर निकल आया तो अच्छे नहीं लगते, अब अच्छा दिखाने के लिए कसरत शुरू। इधर पेट थोड़ा-सा अन्दर उधर कसरत बन्द।

परिधान तरह–तरह के

चित्र	नाम	अन्य नाम
चित्र-1	लहँगा	घाघरा
चित्र-2	गमछा	अँगोछा
चित्र-3	दुपट्टा	चुन्नी, ओढ़नी
चित्र-4	धोती	तहबंद, धोतर
चित्र-5	फिरन	लबादा, पेरहान
चित्र-6	पगड़ी	पाग, साफा
चित्र-7	अचकन	शेरवानी

आपकी परीक्षाएँ

हमारी कॉलोनी में सभी जानते थे कि मेरी बहन की गणित बहुत अच्छी है। वह इस समय कक्षा 6 की छात्रा है। मेरे

घर के सामने रहने वाली भूमिका भी गणित में बहुत अच्छी है। उसकी माँ हर जगह अपनी बेटी की ही तारीफें करती फिरती हैं। अपनी बेटी की प्रशंसा करते समय उनका एक उद्देश्य मेरी बहन को नीचा दिखाना भी होता था। यह बात मुझको बहुत बुरी लगती थी। एक दिन भूमिका की माँ और मेरे बीच में दोनों की गणित को लेकर बहस हो गई। अन्त में दोनों की परीक्षा लेकर उनकी श्रेष्ठता का निर्णय लेने की बात तय हो गई।

पहले मैंने भूमिका की गणित की पुस्तक में से पाँच सवाल हल करने के लिए दिए। तब भूमिका की मम्मी ने भी ऐसा ही करते हुए उसे पाँच सवाल दिए। समय दिया गया 30 मिनट। मेरी बहन ने 25 मिनट में ही पाँचों सवाल हल कर डाले, जो कि बिल्कुल सही थे। उधर भूमिका पसीने-पसीने हो रही थी। वह निर्धारित समय में केवल चार ही सवाल हल कर सकी, जिनमें से एक गलत था।

यह मेरे द्वारा ली गई पहली परीक्षा थी, जिसमें मेरी बहिन शत-प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हुई और भूमिका औसत अंक ही प्राप्त कर सकी।

आज की पहेली

दोनों चित्रों में निम्नलिखित अन्तर हैं–

(1) दाहिने हाथ के चित्र में एक पौधा अधिक है।

(2) दाहिने हाथ वाले चित्र में आदमी के हाथ में लगा बैग छोटा है।

(3) उसमें दिए गए पशु का मुँह विपरीत दिशा में है।

(4) बायें हाथ की इमारत की खिड़की काफी बड़ी है।

(5) उन्हीं इमारतों में छोटी खिड़कियाँ भी ज्यादा हैं।

(6) दोनों चित्रों की दादियों ने अपने हाथ में अलग-अलग रंग की चूड़ियाँ पहनी हुई हैं।

(7) दायीं ओर के चित्र में छोटी लड़की के बालों में रिबन बँधा है।

(8) दायें हाथ के चित्र की इमारतों के सामने पौधा नहीं है इसलिए खिड़की दिखाई दे रही है।

(9) चौराहे पर लगे इलैक्ट्रिक सिग्नल में एक लाइट कम है दोनों की ऊँचाई भी भिन्न है।

(10) दोनों चित्रों में दादी माँ के चश्मे में अन्तर है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क), **2.** (घ), **3.** (ग), **4.** (ख), **5.** (ग)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. धूमधाम, पसीने से, **2.** हाँफते-हाँफते, हार-जीत, **3.** अनाज, बैल, **4.** पैर, लँगड़ाकर, **5.** आवाज, चेहरा-मोहरा।

सत्य/असत्य

1. ✓, **2.** ×, **3.** ×, **4.** ✓, **5.** ✓।

सुमेलन

स्तंभ (अ)	स्तंभ (ब)
1. सत्यनिष्ठ मनुष्य में	**3.** दया-धर्म और वात्सल्य होता है।
2. सरदार सुजान सिंह ने	**5.** 40 वर्ष तक दीवान के रूप में देवगढ़ की सेवा की थी।
3. हर उम्मीदवार	**2.** देवगढ़ के दीवान पद पर आसीन होना चाहता था।
4. पढ़ाई से भी अधिक महत्वपूर्ण होता है	**1.** सदाचार और कर्तव्य पालन।

5. देवगढ़ के महाराज	**4.** अपने दीवान को सेवामुक्त करने को तैयार नहीं थे।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. सुजानसिंह देवगढ़ रियासत के दीवान थे।
2. देश के प्रसिद्ध अखबारों में देवगढ़ रियासत के लिए एक सुयोग्य दीवान की खोज करने के लिए विज्ञापन निकाला गया था।
3. देवगढ़ रियासत में आए फैशनेबिल लोगों ने हॉकी का खेल खेलने की योजना बनाई।
4. किसान की गाड़ी रास्ते में पड़ने वाले नाले की कीचड़ में फँस गई थी।
5. यह बात हॉकी खेलकर लौट रहे एक चोटिल युवक ने किसान से कही थी।
6. गाड़ी पर किसान के वेश में स्वयं दीवान सरदार सुजानसिंह थे।
7. दीवान सुजानसिंह का आदर राजा उनके अनुभव एवं नीति-कुशल होने के कारण करते थे।
8. इस कहानी में बूढ़ा जौहरी शब्द दीवान सरदार सुजानसिंह के लिए प्रयोग किया गया है।
9. खिलाड़ियों ने निराश-हताश किसान को ऐसे भाव से देखा, जैसे उन्हें उसकी परेशानी से कोई मतलब न हो।
10. परेशान किसान की मदद ऐसे हॉकी खिलाड़ी ने की जो स्वयं घायल होने के कारण ठीक से चल भी नहीं पा रहा था।
11. युवक को किसान की तरफ देखकर उसके दीवान सरदार सुजान सिंह होने का संदेह हुआ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. देवगढ़ के दीवान पद के लिए जितने भी उम्मीदवार आए थे, उनके व्यवहार का वास्तविकता से दूर-दूर का भी नाता न था। उनसे बात करने पर ऐसा लगता था जैसे उनके जैसा नम्र और सदाचारी पुरुष दूसरा कोई हो ही नहीं सकता। जैसे वे स्वयं नम्रता और सदाचार के देवता हों।

2. देवगढ़ रियासत के दीवान पद के लिए पंडित जानकीनाथ-सा का चयन किया गया, क्योंकि उनका हृदय साहस, आत्मबल, उदारता, दया और परोपकार की भावना से भरा हुआ था।

3. कहानी का शीर्षक 'परीक्षा' सटीक, उपयुक्त एवं कहानी के मूल भाव को व्यक्त करने में सक्षम है। क्योंकि देवगढ़ के दीवान के पद पर योग्य, साहसी, दयालु और नीतिकुशल व्यक्ति की खोज करनी थी। अत: आगन्तुक उम्मीदवारों की अनेक प्रकार से परीक्षा ली गई थी। एक महीने तक चलने वाली परीक्षा में खरा उतरने वाले व्यक्ति को ही दीवान पद दिया गया था।

4. इस चयन का औचित्य बताते हुए उन्होंने कहा जो व्यक्ति घायलावस्था में भी किसान की भरी हुई बैलगाड़ी को नाले की कीचड़ से निकालकर ऊपर चढ़ा दे, उसके हृदय में साहस, आत्मशक्ति और दया कूट-कूट कर भरी हुई होती है। ऐसा व्यक्ति कभी भी गरीबों को नहीं सताएगा। वह स्वयं धोखा खा लेगा, मगर किसी को धोखा नहीं देगा।

5. युवक घायल था। वह चाहता तो खुद गाड़ी पर बैठकर बैलों को हाँकता और किसान से पहियों को धकेलने के लिए कहता। इस प्रकार वह कीचड़ में धँसने से बच जाता। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। उसे बैलगाड़ी को हाँकना नहीं आता था। किसान भी बूढ़ा होने के कारण अधिक ताकत से पहियों को नहीं उकसा पाता। तब बैलगाड़ी नाले के ऊपर कदापि नहीं चढ़ पाती। किसान ने बैलों को कुशलतापूर्वक हाँका तथा उसने युवा शक्ति से पहियों को उकसाया तभी वह सफल हो पाए। इसमें युवक की नीति-कुशलता का गुण प्रकट होता है।

6. (1) नीति-कुशल – नीति में कुशल है जो – बहुब्रीहि समास
(2) धर्मनिष्ठ – धर्म में निष्ठ – तत्पुरुष समास
(3) आत्मबली –आत्मा से बल वाला–कर्मधारय समास
(4) वेद-मन्त्र – वेद का मन्त्र – तत्पुरुष समास
(5) कृपादृष्टि – कृपा की दृष्टि – तत्पुरुष समास
(6) प्रत्येक – हर एक – अव्ययीभाव समास

7. (1) परीक्षा – परि + ईक्षा – (दीर्घ सन्धि)
(2) मन्दाग्नि – मन्द + अग्नि – (दीर्घ सन्धि)
(3) सहानुभूति – सह + अनुभूति – (दीर्घ सन्धि)
(4) निराशा – नि: + आशा – (विसर्ग सन्धि)
(5) सदाचार – सत् + आचार – (व्यंजन सन्धि)

8. (1) जो धर्म को न मानता हो — अधर्मी
(2) जो दूर तक देख सकता हो — दूरदर्शी
(3) उपासना करने वाला — उपासक

(4)	पुत्र के प्रति स्नेह भाव	वात्सल्य
(5)	पूजा करने वाला	पुजारी
(6)	जिसके माता-पिता न हों	अनाथ

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. दीवान पद पर चयन की आशा को लेकर देवगढ़ आए लोगों की आदतें तथा वेष-भूषा सभी अलग-अलग थी। उन उम्मीदवारों में कोई फैशनपरस्त था तो कोई सादगी से जीवन बिताने वाला। रियासत पहुँचकर वे सभी स्वयं का वास्तविकता से ऊपर उठकर दिखाना चाहते थे। श्रीमान 'अ' सामान्य तौर पर 9 बजे जागते थे, लेकिन वे अब जल्दी उठकर बगीचे में जाकर सूर्योदय के दर्शन करने लगे। श्रीमान 'द', 'स' और 'ज' सम्पन्न घराने से थे। अपने नौकरों से कभी ठीक तरह से बात नहीं करते थे। वे अब नौकरों से बड़ी ही सभ्यता से पेश आते थे। श्रीमान 'ल' हमेशा पुस्तकों से जी चुराते थे, लेकिन देवगढ़ में वह किताबी कीड़ा बन गए थे। उनके हाथ में हर समय कोई-न-कोई किताब लगी ही रहती थी। वहाँ पर जो भी व्यक्ति दीवान पद पर चयन की आशा में आया था, ऐसा व्यवहार कर रहा था जैसे उससे अधिक नम्र और सदाचारी कोई दूसरा न हो।

2. सरदान सुजानसिंह देवगढ़ रियासत के दीवान थे। वे नीति कुशल, कर्तव्यनिष्ठ और धर्मनिष्ठ आदमी थे। उन्होंने चालीस वर्षों से दीवान के पद पर बड़ी ही ईमानदारी और निष्ठा से काम किया था। आयु अधिक हो जाने के कारण उन्हें लग रहा था कि वे अब अपना काम कुशलतापूर्वक नहीं कर पा रहे थे। वे नहीं चाहते थे कि उनसे कोई भूल-चूक हो और उनकी बदनामी हो। वे देशभक्त थे, इसलिए हमेशा अपनी रियासत का भला चाहते थे। वे पारखी थे, इसलिए अच्छे-बुरे लोगों की पहचान आसानी से कर सकते थे। वे धार्मिक व्यक्ति थे। अत: वृद्धावस्था में अपनी सभी जिम्मेदारियों से मुक्त होकर अपना समय ईश्वर की पूजा-सेवा में बिताना चाहते थे। उनके अन्दर राज्य तथा राजा के प्रति समर्पण भाव था, इसलिए ही नए दीवान के लिए योग्य व्यक्ति का चयन करने को सहर्ष तैयार हो गए।

3. पंडित जानकीनाथ-सा दीवान पद पर चयन हेतु एक उम्मीदवार थे। उनके अन्दर नैतिक गुण कूट-कूट कर भरे थे। वे सीधे-सादे थे किन्तु फैशनपरस्त आधुनिक लोगों की तरह कोट-पतलून पहनते थे। वे आत्मबली एवं उदार व्यक्ति थे। वे ऐसे परोपकारी थे कि स्वयं कष्ट सहकर भी असहायों की सहायता करने से पीछे नहीं हटते थे। उन्होंने घायल होने पर भी बूढ़े किसान की बिना माँगे ही मदद की थी। उनके हृदय में दूसरों के प्रति उदार, दया तथा स्नेह भाव था। उनकी दृष्टि बहुत तीव्र थी। उनकी तीक्ष्ण दृष्टि से वे दीन-हीन किसान का वेश धारण किए हुए दीवान साहब भी छिप नहीं पाए थे। उन्होंने उनको पहचानकर ही मजाक करते हुए इनाम में कुछ देने को कहा था। उनमें वीरता का भाव भी था, तभी तो वे उस किसान की गाड़ी को ऊपर पहुँचाने के लिए स्वयं कीचड़ में उतर गए थे। जानकीनाथसा योजनाकार थे, तभी उन्होंने गाड़ी को ऊपर पहुँचाने के लिए स्वयं पहिया उकसाया, किसान ने बैलों को उकसाया और थोड़ा-सा सहारा पाकर बैलों ने पूरी ताकत लगा दी और उन्हें सफलता मिल गई।

**

11 चेतक की वीरता

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

मेरी समझ से

(क) (1) चेतक बादल की तरह शत्रु की सेना पर वज्रपात बनकर टूट पड़ता था।

(2) इस पंक्ति में 'सवार' शब्द महाराणा प्रताप के लिए आया है।

(ख) (1) चेतक रण के मैदान में चौकड़ी भरता था। ऐसा लगता था कि वह धरती का नहीं अपितु आसमान का घोड़ा है। इसलिए वह बादल की तरह शत्रु की सेना पर वज्रपात

बनकर टूट पड़ता था। उसके पैर जमीन पर पड़ते तो उसका आक्रमण नदी के उफान की तरह होता।

(2) चेतक महान योद्धा राणा प्रताप का परमप्रिय घोड़ा था। उसके ऊपर केवल वही सवारी कर सकते थे। इसलिए यहाँ 'सवार' शब्द का प्रयोग महाराणा प्रताप के लिए हुआ है।

पंक्तियों पर चर्चा

(क) महाराणा प्रताप का घोड़ा निडर था, वीर था और साहसी था इसलिए वह ढाल लेकर लड़ रहे शत्रु सैनिकों के बीच में बेखौफ घुस जाया करता था। वह तलवार लेकर लड़ रहे शत्रु सैनिकों के बीच में खुद को बचाते हुए सरपट दौड़ लगाया करता था।

(ख) शत्रु सैनिक चेतक से इतने भयभीत रहते थे कि उसे सामने देखकर उनके हाथों में पकड़ी हुई तलवारें और भाले छूट जाते थे और जमीन पर गिर जाते थे। तब घोड़े की टापों की मार से उनके शरीर छिन्न-भिन्न हो जाते थे।

मिलकर करें मिलान

पंक्तियाँ	भावार्थ
1. राणा प्रताप के घोड़े से पड़ गया हवा को पाला था।	**2.** हवा से भी तेज दौड़ने वाला चेतक ऐसे दौड़ लगा रहा था मानो हवा और चेतक में प्रतियोगिता हो रही हो।
2. वह दौड़ रहा अरि-मस्तक पर, या आसमान पर घोड़ा था।	**3.** शत्रुओं के सिर के ऊपर से होता हुआ एक छोर से दूसरे छोर पर ऐसे दौड़ता जैसे आसमान में दौड़ रहा हो।
3. जो तनिक हवा से बाग हिली लेकर सवार उड़ जाता था।	**4.** चेतक की फुर्ती ऐसी थी कि लगाम के थोड़ा-सा हिलते ही सरपट हवा में उड़ने लगता था।
4. राणा की पुतली फिरी नहीं, तब तक चेतक मुड़ जाता था।	**5.** वह राणा की पूरी निगाह मुड़ने से पहले ही उस ओर मुड़ जाता अर्थात वह उनका भाव समझ जाता था।
5. विकराल वज्र-मय बादल-सा अरि की सेना पर घहर गया।	**1.** शत्रु की सेना पर भयानक वज्रमय बादल बनकर टूट पड़ता और शत्रुओं का नाश करता था।

शीर्षक

इस काव्यांश में राणा प्रताप के परम-प्रिय घोड़े चेतक की वीरता का वर्णन किया गया है। अत: इसका शीर्षक 'चेतक की वीरता' बिल्कुल उचित है।

चेतक की वीरता की ओर संकेत करते हुए अन्य शीर्षक हो सकते हैं—'चेतक का पराक्रम' 'शत्रुओं में सेना का भय', 'उड़ता घोड़ा', 'शत्रुओं का काल-चेतक' आदि।

कविता की रचना

कविता में आए तुकांत शब्द :

1. तन पर - मस्तक पर
2. उड़ जाता था - मुड़ जाता था
3. चालों में - भालों में
4. ढालों में - करवालों में
5. यहाँ नहीं - वहाँ नहीं
6. जहाँ नहीं - कहाँ नहीं
7. लहर गया - ठहर गया
8. निषंग - अंग
9. रंग - दंग

शब्द के भीतर शब्द

शब्द	छिपे हुए शब्द
मस्तक	मस्त, तक, कम, तम, कस्म
दिखलाया	दिलाया, लाया, दिया, लाख, खला
करवालों	कर, करवा, रवा, लोक, वार, वाकर, वालों, रकवा।
सरपट	सर, रपट, पट, सट, रस, पर, परस
विकराल	कराल, कल, विकल, लक, राल

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) (1) राणा प्रताप के घोड़े से, पड़ गया हवा का पाला था।

(2) वह दौड़ रहा अरि मस्तक पर, या आसमान का घोड़ा था।

(3) राणा की पुतली फिरी नहीं, तब तक चेतक उड़ जाता था।

(4) निर्भीक गया वह ढालों में, सरपट दौड़ा करवालों में।

(5) बढ़ते नद-सा वह लहर गया, वह गया गया फिर ठहर गया।

(ख) युद्ध समाज में दुख-दर्द लाते हैं। युद्धों से मानवता नष्ट होती है। युद्धों में प्रयोग होने वाले रासायनिक और आण्विक हथियार वायु, भूमि, जल आदि को इस प्रकार प्रदूषित कर देते हैं कि उसका प्रभाव वर्षों तक रहता है। युद्ध न केवल मानव जाति के लिए घातक हैं बल्कि पक्षी जगत, जलचर एवं वनस्पति को भी नष्ट कर डालते हैं। युद्ध समाप्त होने के पश्चात् शांति वार्ता के द्वारा ही हल निकलता है। अत: युद्ध से पहले ही शांति वार्ता के द्वारा युद्ध को टाल देना चाहिए।

समानार्थी शब्द

1. अनल, **2.** तुरंग, **3.** नभचर, **4.** नाद, **5.** ढाल।

आज की पहेली

पहेलियों के क्रमश: उत्तर हैं—नयन, पतंग, परछाई, छाया, गुलाब जामुन, नक्शा।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क), **2.** (घ), **3.** (ख), **4.** (ग), **5.** (क)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1.चेतक, आसमान। **2.** लगाम, राणा प्रताप। **3.** युद्ध के मैदान, उसी ओर **4.** नदी, ठहर। **5.** सैनिकों, भाले और तलवार।

सत्य/असत्य

1. ✓, **2.** ✓, **3.** ×, **4.** ✓, **5.** ✓।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. चेतक बादल की तरह दुश्मन पर वज्रपात बनकर टूट पड़ता था।

2. चेतक की टाप सुनकर दुश्मनों के दिल दहल उठते थे। उसकी टापों की मार से उनके अंग छिन्न-भिन्न हो जाते थे।

3. चेतक को देखकर शत्रु इसलिए दंग रह जाते थे क्योंकि वह वीरता, सुन्दरता, बल और स्वामिभक्ति में अनोखा था।

4. चेतक अपनी चौकड़ी की चाल से निराला दिखाई देता था।

5. चेतक अपने स्वामी महाराणा प्रताप के इशारों को समझकर तुरन्त उनकी आज्ञा का पालन करता था, इसलिए उसे कोड़े नहीं मारने पड़ते थे।

6. हम राणा प्रताप को उनकी बहादुरी, देशभक्ति और पराक्रम के लिए याद करते हैं।

7. कविता में राणा प्रताप के घोड़े की गति की तुलना हवा से की गई है।

8. निराला – पाला, कोड़ा – घोड़ा, लहर – ठहर, चाल – भाल, ढंग – रंग

9. रण, भालों, ढालों, अरि, करवालों, निषंग।

10. हल्दीघाटी का युद्ध अकबर की सेना और महाराणा प्रताप के बीच लड़ा गया था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. चेतक महाराणा प्रताप का घोड़ा था। उसके ऊपर सवार होकर ही उन्होंने हल्दीघाटी में अकबर की सेना से युद्ध लड़ा था। इस आधार पर हमें चेतक की निम्नलिखित बातें अच्छी लगती हैं—

(क) स्वामिभक्ति—चेतक स्वामिभक्त घोड़ा था। पशु होते हुए भी वह महाराणा प्रताप की आज्ञा का पालन करता था।

(ख) समझदारी—चेतक बहुत ही समझदार था। वह अपने स्वामी के हर इशारे को तुरन्त समझकर वैसा ही व्यवहार करता था।

(ग) फुर्ती तथा तीव्रगति— चेतक बहुत ही फुर्तीला था। बह दौड़ते-दौड़ते अचानक ही रुक जाता था और फिर उसी गति से दौड़ पड़ता था। उसकी गति हवा की भाँति बहुत तेज थी।

(घ) वीरता तथा साहसीपन— चेतक की वीरता शत्रु-सेना को भी आश्चर्य में डाल देती थी। वह इतना साहसी था कि अपनी जान की परवाह किए बिना वह भालों और तलवारों के बीच घुस जाता था।

(ङ) क्रूरता— चेतक अपने दुश्मनों के लिए अत्यन्त निर्दयी था। वह अपनी टापों से दुश्मन के सैनिकों को लहू-लुहान कर डालता था।

2. हम राणा प्रताप को उनकी वीरता, शौर्य, त्याग और स्वाभिमान के लिए याद करते हैं। उन्होंने मुगल बादशाह अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की और मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया।

राणा प्रताप एक ऐसे वीर योद्धा थे, जिन्होंने अपने साहस और दृढ़ संकल्प से इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया। महाराणा प्रताप ने अपने जीवन में कई कठिनाइयों का सामना किया और कभी हार नहीं मानी, इसलिए हम महाराणा प्रताप को याद करते हैं।

**

12 हिन्द महासागर में छोटा-सा हिन्दुस्तान

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

मेरी समझ से

(क) **(1)** भागने पर उन्हें सिंह के आक्रमण का डर था।

(2) भारत की बहुत-सी विशेषताएँ वहाँ दिखाई देती हैं।

(ख) *चर्चा:*

(1) हिरन अपने प्राकृतिक ज्ञान से जानते हैं कि शेर कभी किसी झुंड को अपना शिकार नहीं बनाते। वे उन हिरनों को अपना शिकार बनाते हैं जो भागते समय झुंड से बिछुड़कर अलग हो जाते हैं।

(2) मॉरिशस की 67 प्रतिशत जनसंख्या भारतवंशी और 53 प्रतिशत हिन्दू है। वहाँ पर हिन्दी के साथ भोजपुरी भाषा बोली भी जाती है और समझी भी जा सकती है। मॉरिशस में बहुत से मन्दिर हैं जिनमें नियमित रूप से पूजा-पाठ होता है। वहाँ पर वे सारे त्योहार तथा उत्सव मनाए जाते हैं जो कि भारत में मनाए जाते हैं। वहाँ पर लोग भारतीय लोगों जैसी ही पोशाक पहनते हैं। इन्हीं सभी विशेषताओं के कारण मॉरिशस छोटे पैमाने पर भारत ही है।

पंक्तियों पर चर्चा

भारत में रहकर हमारी समझ में भारतीय संस्कृति की जीवंतता और अत्यन्त प्राचीन होने का पता ही नहीं चलता। लेकिन जब हम मॉरिशस जाकर वहाँ भारतवंशियों को देखते हैं तो हमें समझ आ जाता है कि सदियाँ गुजर जाने के पश्चात् भी भारतीय संस्कृति और संस्कारों से जुड़े हुए हैं। भारतीय संस्कृति की सजीवता के कारण ही मॉरिशस के लोग लाख अत्याचार सहने के बाद भी हिन्दू धर्म को न छोड़ सके। उन्हें तरह-तरह के प्रलोभन दिए किन्तु वे ईसाई नहीं बने।

सोच-विचार के लिए

(क) "नैरोबी का नेशनल पार्क चिड़ियाघर नहीं है।" नेशनल पार्क और चिड़ियाघर में यह अन्तर है कि चिड़ियाघर में पशु-पक्षियों के लिए कृत्रिम आवास बनाकर उन्हें उनमें रखा जाता है। वहाँ लोगों के आने पर कोई रोक नहीं होती है।

नेशनल पार्क वह स्थान है जिसमें पशु-पक्षियों को उनका प्राकृतिक आवास उपलब्ध कराया जाता है। यहाँ पर उन्हें चिड़ियाघर की तरह पिंजरों में कैद करके नहीं रखा जाता है। वे स्वच्छंद विचरण करते हैं। नेशनल पार्क में आम लोगों के आने-जाने पर रोक होती है।

(ख) "*हम लोग पेड़-पौधे और खरपात से भी बदतर समझे गए।*"

लेखक और अन्य लोगों को पेड़-पौधों और खरपात से भी बदतर समझने वाले वहाँ आराम कर रहे आठ-दस शेर थे। उन्होंने ऐसा इसलिए समझ लिया क्योंकि मोटर-गाड़ियों में मोटे-मोटे शीशे चढ़ाकर उन्हें देख रहे लोगों का उनके लिए कोई भी उपयोग नहीं था। वे अपने अनुभव से जानते थे कि उन्हें देख रहे लोगों को किसी भी प्रकार से शिकार

नहीं बनाया जा सकता। लेखक और अन्य लोगों को उन्होंने पेड़-पौधों से भी बदतर इसलिए समझा क्योंकि पेड़-पौधे उन्हें कम-से-कम छाया उपलब्ध कराके उन्हें धूप, गर्मी और वर्षा से तो बचाते हैं। खरपात से भी बदतर इसलिए माना कि जैसे खरपात खेत की फसल को नुकसान पहुँचाते हैं वैसे ही वे लोग भी केवल उन्हें परेशान करने और उनके आराम में बाधा डालने के लिए ही वहाँ पहुँचते हैं।

(ग) *"मॉरिशस की असली ताकत भारतीय हैं।"*

मॉरीशस की 67 प्रतिशत जनसंख्या भारतवंशी है। वहाँ की मुख्य फसल गन्ना है, जिसकी कृषि की और विकास की जिम्मेदारी भारतवंशियों पर है। वहाँ का उत्पादन और व्यवसाय चीनी है, जिसके विकास का आधार गन्ने की फसल है। चीनी मिलों में भी भारतीयों का महत्वपूर्ण योगदान है, इसलिए उपर्युक्त कथन सत्य है।

(घ) "*उस द्वीप को उन्होंने छोटा-सा हिन्दुस्तान बना डाला*"

जब भारतीय मॉरिशस पहुँचे तो वे अपने साथ भारतीय संस्कृति और ज्ञान को भी ले गए। लाख अत्याचारों और प्रलोभनों के बावजूद अपने धर्म पर अडिग रहे। उन्होंने अपना हिन्दू धर्म नहीं छोड़ा। अपने ज्ञान का प्रयोग कृषि में करके उन्होंने ईख को वहाँ की मुख्य फसल बना दिया। वहाँ पर उन्होंने मन्दिरों और शिवालयों की स्थापना करके हिन्दू धर्म का प्रचार किया। अपने परम्परागत पर्वों और त्योहारों को महत्व दिया और उनसे जुड़े रहे। यहाँ तक कि वहाँ भी एकमात्र खूबसूरत झील को भी गंगा नदी की तरह पवित्र बना डाला और महाशिवरात्रि के पर्व पर उसी परी-तालाब का जल काँवड़ में भरकर लाए तथा शिवजी का अभिषेक किया। उन्होंने अपने परम्परागत भारतीय पोशाकों धोती तथा गाँधी टोपी को पहनना भी नहीं छोड़ा। इस प्रकार, उन्होंने मॉरिशस द्वीप को छोटा-सा हिन्दुस्तान बना दिया।

मिलकर करें मिलान

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. अफ्रीका	**3.** यह एशिया के बाद दुनिया का सबसे बड़ा महाद्वीप है।
2. नैरोबी	**1.** यह अफ्रीका महाद्वीप के एक देश 'केन्या' की राजधानी है।
3. रक्तचाप	**4.** यह रक्त-वाहिनियों अर्थात नसों में बहते रक्त द्वारा उनकी दीवारों पर डाले गए दबाव का नाम है।
4. बी.ओ.ए.सी.	**6.** यह 'ब्रिटिश ओवरसीज एयरवेज कॉरपोरेशन' नाम का छोटा रूप है। यह एक बहुत पुरानी विदेशी विमान कंपनी थी।
5. भूमध्य रेखा	**7.** यह पृथ्वी के चारों ओर एक काल्पनिक वृत्त है जो पृथ्वी को दो भागों में बाँटता है—उत्तरी भाग और दक्षिणी भाग।
6. देशान्तर रेखा	**9.** ये ग्लोब पर उत्तर से दक्षिण की ओर खींची जाने वाली काल्पनिक रेखाएँ हैं। ये उत्तरी ध्रुव को दक्षिणी ध्रुव से मिलाती हैं।
7. तुलसीदास	**2.** यह श्रीराम के जीवन पर आधारित अमर ग्रंथ 'रामचरितमानस' लिखने वाले कवि का नाम है।
8. क्रेयोल	**5.** यह दो भाषाओं के मिलने से बनी नई भाषा का नाम है।
9. काँवर	**8.** यह बाँस का एक मजबूत डंडा होता है जिसे काँवड़ या बहंगी भी कहा जाता है, जिसके दोनों सिरों पर बँधी हुई दो टोकरियों या छीकों में यात्री गंगाजल या अन्य वस्तुएँ भरकर ले जाते हैं।

यात्रा-वृत्तांत की रचना

1. शहर से बाहर बहुत बड़ा जंगल है, जिसमें घास अधिक, पेड़ बहुत कम हैं।

2. एक जगह सड़क पर दो मोटरें खड़ी थीं और उन पर तरह-तरह के बंदर और लंगूर चढ़े हुए थे।

3. जो कुछ देखा, वह जन्मभर नहीं भूलेगा। कोई सात-आठ सिंह लेटे या सोये हुए थे और उन्हें घेरकर आठ-दस मोटरें खड़ी थीं।

4. इस बीच एक सिंह ने उठकर जम्हाई ली, दूसरे ने देह को ताना मगर हमारी ओर किसी भी सिंह ने नजर नहीं उठाई।

5. फिर ऐसा हुआ कि झुंड से छूटकर कुछ हिरन एक तरफ को भाग निकले, मगर बाकी जहाँ-के-तहाँ ठिठके खड़े रहे।

6. रात थी, अँधेरा था, पानी बरस रहा था। मगर तब भी हमारे स्वागत में बहुत लोग खड़े रहे।

अनुमान या कल्पना से

चर्चा:

(क) *"मॉरिशस वह देश है, जहाँ बनारस भी है, गोकुल भी है और ब्रह्मस्थान भी"*

बहुत पहले भारत के लोग अपनी धरती, अपने तीर्थस्थल आदि सब कुछ छोड़कर मॉरिशस गए थे। वे नए वातावरण में पहुँचकर किसी-न-किसी रूप में अपनी धरती और अपने स्थानों को अपने हृदय में बसाए रखना चाहते थे। उनके साथ जुड़ी अपनी मधुर स्मृतियों को हमेशा जीवित रखना चाहते थे। अपनी संस्कृति से जुड़े रहने के लिए उन्होंने वहाँ के गली-मोहल्लों के नाम इस तरह से रखे होंगे।

(ख) *"कोई सात-आठ सिंह लेटे या सोये हुए थे और उन्हें घेरकर आठ-दस मोटरें खड़ी थीं।"*

निश्चित तौर पर अधिक संख्या में अभयारण्यों में पहुँच रहे पर्यटकों का जंगली जानवरों के ऊपर प्रभाव पड़ा होगा। प्रारम्भ में जंगली जानवर अपनी हिंसक प्रवृत्ति के कारण उन पर हमलावर होते होंगे। लेकिन जब उन्हें लगा कि उनके आक्रमण का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता तो उन्होंने उन पर आक्रमण करना बन्द कर दिया। इसी प्रकार जब उन्हें लगने लगा कि ये दोपाया जानवर उन्हें कोई क्षति नहीं पहुँचाता तो फिर वे मनुष्य और मोटरों की ओर से इतने लापरवाह हो गए कि उनकी ओर देखना तक छोड़ दिया। हिरन इतना चौकन्ना पशु है कि जरा-सी आहट या पत्तों की खड़खड़ाहट भी उन्हें सजग कर देती है। मगर दिनभर मोटरों की घर्र-घर्र तथा 'पों-पों, पी-पीं' की आवाज सुनकर वे इनके अभ्यस्त हो गए। वे भी इतने लापरवाह हो गए कि अब इन आवाजों या मनुष्यों की ओर कोई ध्यान नहीं देते। हिरन, बंदर आदि जंगली जीव हैं। जंगली घास, फल-फूल तथा पत्तियाँ ही इनका भोजन हैं। मगर जब मनुष्य इनको बिस्किट, चाकलेट आदि अन्य कृत्रिम खाद्य सामग्री देने लगा तो वे इनको खाने के आदी हो गए। अब जब भी बन्दर पर्यटकों को देखते हैं तो वे कुछ खाने को मिलने की आशा में इन्हें घेर लेते हैं।

(ग) *"हिरनों का एक झुंड दिखाई पड़ा, जिनके बीच एक जिराफ बिल्कुल बेवकूफों की तरह खड़ा था।"*

जंगल के सभी शाकाहारी पशुओं को प्राकृतिक ज्ञान होता है कि सभी हिंसक जानवर कभी झुंड पर हमला नहीं करते। वे उन जानवरों को ही अपना शिकार बनाते हैं जो हड़बड़ी या भय के कारण अपने झुंड से अलग हो जाते हैं। यह बात जिराफों पर भी लागू होती है। यही कारण है कि वह जिराफ उन हिरनों के बीच खड़े होकर अपने आप को सुरक्षित कर रहा था।

(घ) मॉरिशस के दक्षिण में एक झील है। यह झील प्राकृतिक है तथा स्वच्छ जल से भरी हुई है। इस झील के चारों ओर का दृश्य अत्यन्त मनोरम है। वहाँ की हरियाली मन को मोह लेने वाली है। पूर्णिमा की रात को खिली-खिली चाँदनी में तो यहाँ का वातावरण इतना सुरम्य हो उठता है कि लगता है यहीं पर देवताओं का वास है। वहाँ के सौन्दर्य को देखकर मन मयूर नृत्य करने लगता है। किसी पुजारी ने उस सुरम्य वातावरण में कल्पना की होगी कि अवश्य स्वर्ग की परियाँ यहाँ पर आकर नृत्य करती होंगी। आपस में खेलती-कूदती होंगी। बस उस कल्पना को साकार करने के लिए उस झील का नाम परी-तालाब पड़ गया।

(ङ) परी तालाब मॉरिशस का भव्य एवं सुरम्य स्थल है। यहाँ पर मंदिरों का पूरा एक परिसर है। यहाँ देवी दुर्गा एवं भगवान शिव की विशाल प्रतिमाएँ हैं। एक बार वहाँ के एक पुजारी ने रात को सपना देखा कि पवित्र परी-तालाब भारत की गंगा नदी का ही एक हिस्सा है। तब इसी सपने को आधार मानकर सन् 1972 में इस तालाब का नाम बदलकर गंगा-तालाब कर दिया गया। नये नामकरण से पहले भारत से पवित्र जल लाकर इस तालाब के पानी में मिला दिया गया था।

शब्दों की बात

(क) (1) सर्वनाम शब्द— उन्हें।

(2) सर्वनाम शब्द— वे, उन्हें, उन्होंने।

(ख) संज्ञा शब्द लिखकर वाक्यों का पुनर्लेखन—

(1) "हाँ, बच्चे हाफ पैंट पहन सकते हैं, लेकिन गांधी टोपी उस दिन बच्चों को भी पहननी पड़ती है।"

(2) "भारतीयों ने अत्याचार तो सहे, लेकिन प्रलोभनों को ठुकरा दिया। भारतीय अपने धर्म पर डटे रहे और जिस द्वीप

में भगवान ने भारतीयों को भेज दिया, उस द्वीप को भारतीयों ने छोटा-सा हिन्दुस्तान बना डाला।"

पहचान पाठ के आधार पर

विद्यार्थियों को चाहिए कि पहले वे अपने अध्यापक से ग्लोब पर भूमध्य रेखा, देशान्तर रेखाओं तथा विषुवत रेखा की जानकारी प्राप्त करें। तत्पश्चात् पाठ में दी गयी भौगोलिक स्थिति के अनुसार इन देशों को पहचानने का प्रयास करें।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) मेरा गाँव नदी के किनारे पर है। यह एक छोटा-सा गाँव है। हम सभी रात के समय अपने-अपने घरों पर शान्ति से सोये हुए थे। आधी रात के समय अचानक शोर उठा और हम सब लोग जाग गए। उस शोर में गाँव वालों के चीखने-चिल्लाने के साथ पानी की लहरों की आवाज भी शामिल थी। हम लोगों ने धरती पर पैर रखा तो घर में घुटने-घुटने तक पानी भरा हुआ था। हमारी कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हो गया है। हम सभी दौड़कर बाहर निकले। चारों ओर पानी-ही-पानी था जो निरंतर बढ़ता ही जा रहा था। दरअसल नदी में बाढ़ आ गयी और बाढ़ के पानी में हमारा गाँव भी घिर गया था। हमारे घर में से बाहर आने के दो मिनट बाद ही हमारा घर का एक हिस्सा धराशायी हो गया। यदि हमें थोड़ा भी विलम्ब हो जाता तो हमारे घर में ही हमारी समाधि बन गई होती। हम लोगों ने जल्दी से गाँव के पास टीले पर स्थित देवी मन्दिर में जाकर शरण ली।

इस घटना और देखे गए दृश्य को मैं उसे जन्मभर नहीं भूल सकता।

(ख) मैं गाँव का रहने वाला हूँ। नदी किनारे बसे इस गाँव के चारों ओर घना जंगल है। जिसमें हिरन, खरगोश, लोमड़ी, मोर, सियार आदि पशु-पक्षियों की भरमार है। इन पशु-पक्षियों से मुलाकात तो रोज की बात है। मोर तो हमारे घर की छत पर नाचते हुए भी दिखाई दे जाते हैं। जंगली बन्दर, बिल्ली, लंगूर आदि की उछल-कूद जिधर चले जाओ उधर दिखाई दे जाती है। रात्रि में पहर बदलने के साथ ही सियारों का समवेत स्वर वातावरण को डरावना बना देता है। हाँ, लकड़बग्घा, तेंदुआ जैसे हिंसक जानवरों से एक दो बार ही मुलाकात हुई है।

(ग) हमारे गाँव में एक परिवार है। थोड़ा-सा खेत था। बड़ी मुश्किल से गुजर-बसर हो पाती थी। फिर उन लोगों ने किराए पर खेत लेकर खेती करना शुरू कर दिया। तीन-भाई और उनके पिता के साथ घर की औरतें भी खेती के काम में जुट गईं। आय बढ़ने लगी तो वे और अधिक खेत किराये पर लेकर खेती करने लगे। उन सबकी सामूहिक मेहनत रंग लाती गयी और फिर उन लोगों ने उसी कमाई से खेत खरीदने शुरू कर दिए। ट्रैक्टर ले लिया तो खेती और आसान हो गयी। आज वे लोग इतने धनवान हो गये हैं कि जमींदार कहलाते हैं। वास्तव में, मुझे उनके अथक परिश्रम, लगन और दूरदृष्टि पर गर्व है।

कक्षा और घर की भाषाएँ

क्रम संख्या	मैं जिन भाषाओं को बोल-समझ लेता/ लेती हूँ	मेरे मित्र जिन भाषाओं को बोल-समझ लेते हैं	मेरे परिजन जिन भाषाओं को बोल-समझ लेते हैं
1.	हिन्दी	हिन्दी	हिन्दी
2.	अँग्रेजी	अँग्रेजी	राजस्थानी
3.	ब्रजभाषा	पंजाबी	भोजपुरी
4.	भोजपुरी	भोजपुरी	
कुल संख्या	4	4	3

प्रशंसा या सराहना विभिन्न प्रकार से

	नाम	प्रशंसा या सराहना का वाक्य
स्वयं	कृति वर्मा	मैं तितली-सी सुन्दर और चंचल हूँ। कभी इधर कभी उधर।
परिजन	सौभाग्य चाचा	सौभाग्य चाचा इतने सीधे इंसान हैं जैसे धौरी गाय।
शिक्षक	श्री मयंक सर	ज्ञान का भंडार हैं मयंक सर। गणित ही नहीं उन्हें अन्य विषयों का भी अच्छा ज्ञान है।

मित्र	अलंकृत शर्मा	अलंकृत तो हीरा है हीरा। जहाँ भी जाता है अपनी चमक बिखेर देता है।
पशु	गौरी गाय	गौरी तो इतनी सीधी है कि बच्चे भी उसके थन से मुँह लगाकर दूध पी लेते हैं।
स्थान	ऋषिकेश	पवित्र गंगा तट पर बसा ऋषिकेश अपनी सुरम्यता के लिए प्रसिद्ध है।
सब्जी	भिंडी	भिंडी की सब्जी का स्वाद ही निराला है। नाम लेते ही मुँह में पानी आ जाता है।
पेड़	पीपल	पीपल तो पर्यावरण का प्राण है, क्योंकि इसका पेड़ चौबीस घंटे ऑक्सीजन मुक्त करता है।

चित्रात्मक सूचना (इंफोग्राफिक्स)

(क) भारत में अंग्रेजों का शासन था। इसी प्रकार मॉरिशस पर भी अंग्रेजों का अधिकार था। वहाँ गन्ने की खेती के लिए मजदूरों की बहुत कमी थी। अत: ब्रिटिश शासक गन्ने के खेतों में काम करने के लिए मजदूरों के रूप में भारतीयों को वहाँ ले गए थे। 2 नवम्बर, 1834 को एटलस नामक जहाज भारतीय मजदूरों को लेकर वहाँ पहुँचा था। इन मजदूरों में ज्यादातर बिहार के लोग थे। मॉरिशस में आज वहाँ की कुल आबादी का 68 प्रतिशत भारतीयों का है इसलिए मॉरिशस की संस्कृति में भोजपुरी गीतों तथा हिन्दी का बहुत बड़ा योगदान है। मॉरिशस के प्रथम प्रधानमन्त्री शिवसागर राम गुलाम भी भारतीय मूल के थे।

(ख) विद्यार्थी कम्प्यूटर अथवा मोबाइल फोन की सहायता से स्वयं करें।

हस्ताक्षर

यहाँ पर विद्यार्थी स्वयं अपने हस्ताक्षर करें।

पत्र

(क) पत्र रामधारी सिंह 'दिनकर' ने लिखा है।

(ख) पत्र चतुर्वेदी जी को लिखा गया है।

(ग) पत्र 8 जुलाई, 1967 को लिखा गया है।

(घ) पत्र नई-दिल्ली से लिखा गया है।

(ङ) पाने वाले के नाम से पहले 'मान्यवर' शब्द का प्रयोग किया गया है।

(च) पत्र लेखक ने अपने नाम से पहले अपने लिए 'आपका' शब्द लिखा है।

उलझन सुलझाओ

(क) नैरोबी से 4 बजे उड़ान भरकर जहाज 5 घंटे की लगातार यात्रा करके जब मॉरिशस पहुँया तो उस समय नौ बजे का समय होना चाहिए था। लेकिन मॉरिशस में दस बज रहे थे। इसका मुख्य कारण यह है कि दोनों देशों के समयों में लगभग एक घण्टे का अन्तर है। जब नैरोबी में घडियाँ 12 बजने का संकेत देती हैं तब मॉरीशस की घड़ियाँ एक घंटा आगे 1 बजे का संकेत देती हैं।

(ख) ❖ भारत में 5 बजकर बीस मिनट का समय हुआ है।

❖ मॉरिशस में 3 बजकर पचास मिनट का समय हुआ है।

❖ भारत और मॉरिशस के समय में एक घण्टा और तीस मिनट का अन्तर है।

❖ सूर्योदय भारत में जल्दी होगा न कि मॉरिशस में।

❖ जिस समय भारत में 12 बजे होंगे, उस समय मॉरिशस की घड़ियाँ 10 बजकर 30 मिनट का समय दिखा रही होंगी।

आज की पहेली

मेरा भारत मेरा गौरव

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख), **2.** (ग), **3.** (क), **4.** (ख), **5.** (ग), **6.** (क)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. सूर्यास्त, शिकार। **2.** 15 जुलाई, 16 जुलाई। **3.** अँधेरा, दस। **4.** पोर्टलुई, जंगल। **5.** राष्ट्रीय उद्यान, अभयारण्य।

सुमेलन

	स्तंभ 'क'	स्तंभ 'ख'
1.	परी–तालाब	**6.** मॉरिशस के मध्य में एक पवित्र झील
2.	नई दिल्ली	**4.** भारत की राजधानी
3.	मॉरिशस	**1.** देशान्तर रेखा 60 के बिल्कुल निकट एक देश।
4.	नैरोबी	**5.** केन्या की राजधानी
5.	केन्या	**2.** एक अफ्रीकी देश
6.	पोर्टलुई	**3.** मॉरिशस की राजधानी

सत्य/असत्य

1. ✗, **2.** ✓, **3.** ✓, **4.** ✗, **5.** ✓।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. नैरोबी के नेशनल पार्क में जिराफ हिरनों के झुंड के बीच में खड़ा दिखाई दिया।

2. लेखक को सर्वप्रथम तरह–तरह के बन्दर और लंगूर दिखाई दिए थे।

3. जंगल में सात–आठ सिंह दिखाई दिए। वे लेटे या सोए हुए थे।

4. हिरनों के झुंड को अनुमान हो गया था कि वे शेरों द्वारा देख लिए गए हैं।

5. लेखक नैरोबी से मॉरिशस हवाई मार्ग से पहुँचा था।

6. दोनों युवा शेर आक्रामक मुद्रा में थे।

7. युवा शेरों को आक्रामक मुद्रा में देखकर लेखक को अपना रक्तचाप बढ़ता हुआ महसूस हुआ था।

8. मॉरिशस का क्षेत्रफल लगभग 720 वर्गमील है।

9. मॉरिशस में जनसंख्या का 67 प्रतिशत भारतवंशी हैं।

10. मॉरिशस में जो हिन्दू मजदूर भेजे गए थे, उनमें से अधिकतर बिहार और उत्तर प्रदेश से थे।

11. मॉरिशस में अधिकांशत: हिन्दी भाषा बोली जाती है।

12. मॉरिशस में सबसे महत्वपूर्ण त्योहार महाशिवरात्रि है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. दिनकर जी 16 जुलाई की बड़ी सुबह ही नैरोबी पहुँच गए थे। उन्हें वहाँ से मॉरिशस जाना था। उनकी उड़ान 17 जुलाई की शाम को थी। उनके पास नैरोबी में कोई कार्य नहीं था। उन्होंने इस सुअवसर का पूरा–पूरा लाभ उठाया और उसी दिन नेशनल पार्क घूमने का कार्यक्रम बना लिया। इस प्रकार उन्हें नेशनल पार्क में शेरों से मुलाकात का अवसर मिल गया।

2. नैरोबी शहर के बाहर एक जंगल को नेशनल पार्क का रूप दिया गया है। इस जंगल में चारों ओर ऊँची–ऊँची घास है, लेकिन पेड़ों की संख्या बहुत ही कम है। इस पार्क में पर्यटकों के आवागमन के लिए साफ–सुथरी सड़कों का जाल–सा बिछा हुआ है। इन सड़कों के द्वारा पार्क में कोने–कोने तक पहुँचा जा सकता है। इस पार्क में अफ्रीकी सिंहों को विशेषकर संरक्षित किया गया है। यहाँ सामान्य जन के आने पर रोक है।

3. नैरोबी के नेशनल पार्क में खड़ी दोनों मोटर–गाड़ियों को तरह–तरह के बन्दर और लंगूर घेरे हुए थे। इसका कारण यह था कि वहाँ पहुँचने वाले पर्यटक अपने साथ फल–बिस्कुट–चाकलेट आदि खाने की वस्तुएँ ले जाते हैं। कुछ पर्यटक वहाँ से बन्दरों को ये वस्तुएँ खाने के लिए देते हैं, जिनकी उन्हें आदत पड़ गयी है। इसलिए खाना मिलने के लालच में जैसे ही कोई मोटर रुकती है, वे उसे चारों ओर से घेर लेते हैं।

4. मॉरिशस द्वीप भूमध्य रेखा से लगभग 20° दक्षिण और देशान्तर रेखा 60 के बिल्कुल निकट है और

उससे पश्चिम दिशा की ओर स्थित है। इसकी लम्बाई 29 मील और चौड़ाई 30 मील है। इसका क्षेत्रफल लगभग 720 वर्ग मील है। मॉरिशस हिन्द महासागर का सबसे सुन्दर द्वीप है। इसका कोई भी भाग समुद्र से 15 मील से अधिक की दूरी पर नहीं है।

5. अंग्रेजों ने भारतीयों को कृषि मजदूर के रूप में मॉरिशस भेजा था। ये सभी गन्ने की खेती में निपुण थे। इन्होंने वहाँ पहुँचकर अपने ज्ञान, अथक परिश्रम और लगन के द्वारा गन्ना (ईख) की पैदावार को बहुत बढ़ाया। वहाँ की मुख्य फसल गन्ना ही है। गन्ना की पैदावार बढ़ने पर नयी-नयी चीनी की मिलें खोली गईं। इन मिलों में वहाँ के लोगों को रोजगार मिला। आज मॉरिशस में चीनी व्यवसाय ही एकमात्र व्यापार है, जो उस द्वीप के विकास का आधार है।

6. मॉरिशस की राजभाषा अंग्रेजी है। इसी भाषा में ही वहाँ का सरकारी काम-काज किया जाता है। लेकिन वहाँ की परम्परागत भाषा फ्रेंच है। बिहार तथा उत्तर प्रदेश के लोग अधिक हैं, अत: यहाँ हिन्दी भी खूब बोली जाती है। क्रेयोल के बाद सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा भोजपुरी है। लेकिन इसमें फ्रेंच के इतने शब्द घुल-मिल गए हैं कि यह भारत में बोली जाने वाली भोजपुरी से भिन्न-सी लगती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. दिनकर ने मॉरिशस को छोटा-सा भारत इसलिए कहा है क्योंकि यह देश भी भारत की तरह से समुद्र से घिरा हुआ है। यहाँ की 67% प्रतिशत जनसंख्या भारतवंशीय है। इसके अलावा कुल जनसंख्या का 53 प्रतिशत भाग हिन्दू हैं। मॉरिशस में गलियों के नाम कलकत्ता (कोलकाता), मद्रास (चेन्नई), बम्बई (मुंबई), हैदराबाद हैं, जिन्हें सुनकर भारत की छवि आँखों के सामने उभर आती है। यहाँ पर गोकुल, बनारस और ब्रह्म स्थान भी हैं। भारत की तरह मॉरिशस में भी माध्यमिक विद्यालयों को कॉलेज कहा जाता है। वहाँ पर भारत में मनाए जाने वाले सभी पर्व और त्योहार जैसे होली, दीवाली, ईद आदि बड़ी धूम-धाम से मनाए जाते हैं। मॉरिशस के मुख्य त्योहार पर काँवड़ यात्रा भी दर्शनीय है। भारत की तर्ज पर काँवड़ में भरकर परी तालाब का पवित्र जल लाया जाता है और शिवजी पर चढ़ाया जाता है। इस दिन भारत की परंपरागत पोशाक सफेद धोती और कमीज ही पहनी जाती है। मॉरिशस में हिन्दी भाषा का खूब प्रचार है। वहाँ पर आज भी भोजपुरी भाषा बोली जाती है, जबकि वहाँ की स्थनीय भाषा क्रेयोल है। मॉरिशस भी भारत की तरह एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की मुख्य फसल गन्ना और मुख्य व्यवसाय चीनी है। इसलिए दिनकर ने मॉरिशस को छोटा-सा भारत कहा है।

2. हाँ, नैरोबी नेशनल पार्क के जंगली जानवरों का व्यवहार बदल गया है। जंगल के फल-फूल और घास-पात खाने वाले बन्दरों को बिस्कुट-चॉकलेट तथा अन्य भोजन का स्वाद भा गया है। इसलिए वे इन पदार्थों के मिलने की आशा में वहाँ रुकने वाली हर मोटर को घेर लेते हैं। जरा-सी आहट पाकर चौकन्ना होकर बचाव की मुद्रा में आ जाने वाले हिरन और जिराफ अब मोटरों की आवाज पर भी ध्यान नहीं देते। अफ्रीकी शेर जो अपनी हिंसक प्रवृत्ति के लिए प्रसिद्ध हैं अब उन्हें घेरकर खड़ी मोटर-गाड़ियों की तरफ ध्यान भी नहीं देते। आराम से पड़े रहते हैं।

इसका मुख्य कारण यह है कि बंदरों की मनुष्यों के द्वारा खाए जाने वाले पदार्थों को खाने की आदत पड़ गई है। हिरन रोजाना पचासों मोटर-गाड़ियों को देखते हैं और उनके इंजनों की आवाज सुनते रहते हैं। वे जान गए हैं कि इन आवाजों से उन्हें कोई भी खतरा नहीं है। इसलिए वे अब इन ध्वनियों की तरफ ध्यान ही नहीं देते।

इसी प्रकार, प्रारम्भ में वहाँ के सिंहों ने पर्यटकों के ऊपर हमला किया होगा। खतरा समझकर उनको मारकर खा जाने की नाकाम कोशिश की होगी। शीघ्र ही उनकी समझ में आ गया होगा कि न तो दो पैरों वाला यह जीव उन्हें कोई क्षति पहुँचाएगा और न ही वे उसे कोई नुकसान पहुँचा सकते हैं। इसलिए उन्होंने पर्यटकों की तरफ देखना भी छोड़ दिया।

अत: हम कह सकते हैं कि नेशनल पार्क के जंगली जानवरों का व्यवहार बदल रहा है।

3. अंग्रेजी के शब्द

शब्द	अर्थ	वाक्य प्रयोग
सर्विस	सेवा	इस होटल की सर्विस बिल्कुल अच्छी नहीं है।
एयर इण्डिया	नाम	भारत में सर्वोत्तम हवाई

		सेवा एयर-इण्डिया की है।
नेशनल पार्क	राष्ट्रीय उद्यान	भारत में कान्हा नेशनल पार्क अपने आप में अनूठा है।
क्रिस्तान	ईसाई	मॉरिशस में भारतीयों को क्रिस्तान बनाने को बहुत लालच दिए गए, लेकिन उन्होंने अपना ध र्म नहीं बदला।
मोटर	मोटर	बड़े शहरों में मोटरों ने प्रदूषण इतना बढ़ा दिया है कि साँस तक लेना मुश्किल है।
पिकनिक	सैर-सपाटा	परी-तालाब कभी पिकनिक स्थल था, जो आज एक तीर्थ-स्थान बन गया है।

अरबी भाषा के शब्द

इजाज़त	स्वीकृति	हमने आपस में क्रिकेट खेलने की अर्जी लगाई थी मगर स्कूल से इजाज़त नहीं मिली।
नज़र	निगरानी	बच्चों पर नज़र रखना जरूरी है, वरना उन्हें बिगड़ते देर नहीं लगती।
रकबा	क्षेत्रफल	उसके खेत का रकबा तो 25 हेक्टेयर है, मगर भूमि उपजाऊ नहीं है।

फारसी भाषा के शब्द

पैमाना	मानदंड	उम्मीदवारों की योग्यता का पैमाना क्या है?
बखूबी	भली प्रकार से	तुम बखूबी जानते हो कि मैं कौन हूँ?
बाकी	शेष	अब भी कुछ बाकी हो तो बता दो।

**

13 पेड़ की बात

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

मेरी समझ से

(क) **(1)** उसे उल्टा लटकाया गया है।

(2) हवा को शुद्ध करके सहायता करते हैं।

(ख) *चर्चा:* 1. पौधे का तना हमेशा पृथ्वी की ओर से ऊपर प्रकाश की ओर बढ़ता है। उल्टे लटके गमले का तना शुरू में तो नीचे की ओर ही बढ़ता जाता है लेकिन जैसे ही वह प्रकाश को ऊपर से आता हुआ देखता है, वह यह भेद समझ जाता है कि उसे उल्टा लटकाया गया है। तब उसकी पत्तियाँ प्रकाश की ओर मुड़ जाती हैं।

2. पेड़-पौधे हमारे निश्वास से निकली विषैली अंगारक वायु में से अंगार को अलग करके उसे अपने भोजन के रूप में प्रयोग कर लेते हैं। इस प्रकार वायु शुद्ध हो जाती है। यदि वे ऐसा न करें तो यह अंगारक वायु पृथ्वी पर जमा हो जाएगी और जीव-जन्तुओं के प्राण संकट में पड़ जाएँगे। इस प्रकार पेड़-पौधे, जीव-जंतुओं के मित्र हैं।

पंक्तियों पर चर्चा

(क) पेड़-पौधे सूरज की रोशनी, अंगारक वायु और जल के द्वारा ही भोजन बनाते हैं। इसलिए इनके कण-कण में सूरज की रोशनी इकट्ठी हो जाती है। सूरज की किरणों में ही गर्मी और प्रकाश होता है। जब ईंधन के रूप में लकड़ी को जलाया जाता है तो जो गर्मी तथा प्रकाश उत्पन्न होता है, वह सूरज की शक्ति ही होती है।

(ख) जब से पेड़-पौधों में फूल लगने शुरू हुए हैं तभी से मधुमक्खी व तितली उनका रस पीने के लिए आ जाती हैं। अत: इन के बीच में जो दोस्ती है और अपनापन है वह हमेशा-हमेशा से चला आ रहा है। यही कारण है कि जैसे ही फूल खिलते हैं, वैसे ही मधुमक्खी व तितली अपने संगी-साथियों के साथ फूलों से मिलने आ जाती हैं।

मिलकर करें मिलान

वाक्यांश	अर्थ या संदर्भ
1. बीज का ढक्कन दरक गया	**6.** बीज के दोनों दलों में दरार आ गई या फट गए।
2. उसे 'अंगारक' वायु कहते हैं	**4.** साँस छोड़ने पर निकलने वाली वायु-कार्बन डाईऑक्साइड।
3. पत्ते सूर्य ऊर्जा के सहारे 'अंगारक' वायु से अंगार नि:शेष कर डालते हैं	**5.** सूर्य के प्रकाश से पत्ते विषाक्त वायु के प्रभाव को नष्ट कर देते हैं।
4. प्रकाश ही जीवन का मूलमंत्र है	**2.** जीवन के लिए सूर्य का प्रकाश आधारशक्ति या महत्वपूर्ण है।
5. जैसे फूल-फूल के बहाने वह स्वयं हँस रहा हो	**3.** अपनी संपन्नता और भावी पीढ़ी की उत्पत्ति से प्रसन्न-संतुष्ट।
6. इस अपरूप उपादान से किस तरह ऐसे सुंदर फूल खिलते हैं।	**1.** मटमैली माटी और विषाक्त वायु से सुंदर-सुंदर फूलों में परिवर्तित होते हैं।

सोच-विचार के लिए

(क) बीज के अंकुरित होने के लिए उचित वातावरण की आवश्यकता होती है अत: बीज के अंकुरित होने में आस-आस के तापमान, नमी(जल), हवा और रोशनी का सहयोग मिलता है।

(ख) पौधे अपना भोजन प्रकाश संश्लेषण नामक प्रक्रिया द्वारा प्राप्त करते हैं। इस प्रक्रिया के समय पत्तियों में उपस्थित 'हरित' (क्लोरोफिल) की सहायता से सूर्य की ऊर्जा को प्राप्त करके उसे रासायनिक ऊर्जा में बदल देते हैं। प्रकाश संश्लेषण के लिए पानी, कार्बनडाई ऑक्साइड, क्लोरोफिल तथा सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता होती है।

लेख की रचना

(क) आम की बात

आम को दुनियाभर में फलों का राजा माना जाता है। इसकी अनोखी मिठास, लाजवाब स्वाद और रसीलापन ही इसे फलों का राजा बनाता है। वैज्ञानिकों ने इस फल को मेगीफेरा इंडिका नाम दिया है। प्रारम्भ में आम का फल केवल भारतीय उपमहाद्वीप में ही उगाया जाता था, लेकिन समय के साथ-साथ इसकी खुशबू विदेशों में भी फैल गयी और अब ब्रॉजील, वेस्टइंडीज और मैक्सिको जैसे देशों में भी इसकी खेती की जाने लगी है।

खास बात यह है कि भारत के अलावा पाकिस्तान और फिलीपींस ने 'आम' को अपना राष्ट्रीय फल घोषित किया हुआ है। यही नहीं बाँग्लादेश में 'आम के पेड़' को राष्ट्रीय पेड़ का दर्जा प्राप्त है।

कच्चा आम हरे रंग का होता है, लेकिन पक जाने के पश्चात् इसका रंग पीला हो जाता है। आम की कुछ किस्में पक जाने के पश्चात् भी हरे रंग की ही बनी रहती हैं। आम जैसे-जैसे पकता जाता है वैसे-वैसे यह रसीला होता है। कच्चे आम में कोई गन्ध नहीं होती लेकिन पके हुए आम की महक दूर तक फैल जाती है। इसकी महक इतनी प्यारी होती है कि बरबस ही सबके मुँह में पानी आ जाता है।

आम के अन्दर निकलने वाली गुठली ही इसका बीज होती है। बरसात के दिनों में कूड़े के ढेर में पड़ी गुठली में से उगा आम का पौधा आप सभी ने देखा होगा। आम के पौधे की कलम भी लगाई जाती है। इस फल के वृक्ष नीम और पीपल की भाँति बहुत ऊँचे-ऊँचे भी होते हैं और नीबू तथा करौंद के पौधों जैसे कम ऊँचाई वाले भी होते हैं। आम के वृक्ष की ऊँचाई इसकी किस्मों के ऊपर निर्भर करती है। आम के पौधे पर सामान्यता बसन्त ऋतु फरवरी-मार्च में फूल लगते हैं। इसके फूलों को बौर कहा जाता है। बौर से लदे आम के वृक्षों की शोभा ही निराली होती है। मीठे स्वर वाली कोयल आम के वृक्षों पर ही निवास करती है। उसकी मधुर आवाज बौरों से भरे आम के वृक्षों का गुणगान करती सी लगती है।

अप्रैल के महीने में वृक्षों पर फल लगने लगते हैं। हरे रंग के कच्चे आम स्वाद में खट्टे होते हैं। कच्चे आमों की चटनी, मुरब्बा, शरबत आदि व्यंजन बनाए जाते हैं। पके हुए पीले आम और सुनहरी आमों का स्वाद, आम की किस्म पर निर्भर करता है। भिन्न-भिन्न किस्मों के आमों का स्वाद और गन्ध भी अलग-अलग होती है। मगर होती बहुत ही जायकेदार है।

भारत में पाए जाने वाले आमों की प्रमुख किस्में हैं– हापुस, दशहरी, चौसा, केसर, लँगड़ा, तोतापुरी आदि। संसार के कुल उत्पादन का 58% आम भारत में उगाया जाता है। शोधों द्वारा इसे और भी स्वादिष्ट तथा गुणकारी बनाने का प्रयास चल रहा है।

(ख) छात्र स्वयं करें।

अनुमान या कल्पना से

(क) "इस तरह संतान के लिए अपना जीवन न्योछावर करके वृक्ष समाप्त हो जाता है।"

वृक्ष के समाप्त हो जाने के पश्चात् वह भूमि पर गिर जाता है। पानी के गिरने के बाद वह घुलकर मिट्टी में मिल जाता है। उसमें कण-कण में समाई हुई ऊर्जा भी पेड़ के साथ-साथ मिट्टी में मिलकर उसे और भी परिस्थितियाँ, ताप, जल आदि मिलने पर अंकुरित हो जाते हैं। इस प्रकार बीज से अंकुर, अंकुर से पौधा, पौधे से फूल, मधुमक्खियाँ तथा तितलियों द्वारा परागण और बीज तथा सबसे बाद में पौधों की मृत्यु। यह क्रम हमेशा से चलता आ रहा है और चलता रहेगा।

(ख) पेड़-पौधों के बारे में लेखक की रुचि कोई एक दिन में ही जाग्रत नहीं हुई होगी। लेखक बालकपन से ही प्राकतिक वातावरण में पले-बढ़े होंगे। वे पेड़-पौधों की हर गतिविधि को बड़े ध्यान से देखते होंगे। उन्होंने देखा होगा कि छुई-मुई के पौधों को स्पर्श करते ही उसकी पत्तियाँ मुरझा जाती हैं। उन्होंने यह भी देखा होगा कि सूरजमुखी के फूल का मुख सदा सूरज की दिशा में ही घूम जाता है। उन्होंने देखा होगा रात होने पर कमल के फूल की पंखुड़ियाँ शाम होते ही बंन्द होने लगती हैं और सूरज निकलते ही खिल उठती हैं। उन्होंने तितलियों, मक्खियों, भँवरों आदि को फूल का रसपान करते हुए देखा होगा। उन्होंने पेड़-पौधों के विषय में और अधिक जानकारी जुटाने की कोशिश की होगी। इस प्रकार पेड़-पौधों के बारे में लेखक की रुचि बढ़ती चली गई होगी।

प्रवाह चार्ट–

बीज → अंकुर → पल्लव → पत्ता → कली → फूल → फल → बीज।

अंकुरण

निरीक्षण के परिणाम:

(1) चने के बीज बोने के 24-36 से घंटे के अन्दर बीज से अंकुर फूट निकलते हैं। **(2)** पहले दो दिन में बहुत तेजी से बढ़ते हैं और इनकी ऊँचाई लगभग एक इंच तक हो जाती है। **(3)** दो दिन बाद ही इनमें छोटी-छोटी पत्तियाँ निकलना शुरू हो जाती हैं। **(4)** 5 वें दिन से इनमें छोटी-छोटी शाखाओं का निकलना शुरू हो जाता है। **(5)** अंकुरित बीज किसी कमरे के अन्दर हैं तो ये प्रकाश की अर्थात् खिड़कियों की ओर मुड़कर बढ़ने लगते हैं। **(6)** यदि बीजों को अंकुरण के बाद खुले स्थान पर रखा गया है तो ऊपर की ओर अपेक्षाकृत अधिक तेजी से वृद्धि करते हैं।

शब्दों के रूप

पाठ से आगे

मेरे प्रिय

फूल	पक्षी	वृक्ष	पुस्तक	खेल
गुलाब	तोता	आम	गीता	क्रिकेट

कमल	मैना	पीपल	मल्हार	हॉकी
बेला	कोयल	बरगद	दीपकम्	कबड्डी

आज की पहेली

रात, तमाम, ममता, ताप, पल्लव, वसंत, तना, नाम, मजबूत, तरल, लटक, कई।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख), **2.** (क), **3.** (क), **4.** (क), **5.** (ग)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. नल, संचार। **2.** विषाक्त, अंगारक। **3.** पतंगों, अँधेरे। **4.** मधुमक्खियाँ, तितलियाँ। **5.** तितलियाँ, बंधु-बांधव।

सत्य/असत्य

1. ✓ **2.** × **3.** × **4.** ✓ **5.** × ।

सुमेलन

स्तंभ (अ)	स्तंभ (ब)
1. बेल-लताएँ	3. निकट के वृक्षों का सहारा लेकर सूर्य के प्रकाश तक पहुँचने की कोशिश करती हैं।
2. अंगारक वायु	4. जन्तुओं के लिए जहरीली है किन्तु, वृक्षों का पोषण करती है।
3. कुछ कीट-पतंगे	5. पक्षियों द्वारा गड़प कर लिए जाने के भय से रात में ही बाहर निकलते हैं।
4. फूलों की खुशबू	1. रात में विचरण करने वाले पतंगों को खासतौर पर आकर्षित करती है।
5. सूखा हुआ पेड़	2. हवा के एक ही तीव्र आघात से भूमि पर आ गिरता है।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. बहुत दिनों तक मिट्टी के नीचे पड़े रहने पर भी बीज इसलिए अंकुरित नहीं हुआ, क्योंकि अंकुरण के लिए नमी की आवश्यकता होती है।

2. वृक्ष का जो भाग मिट्टी के नीचे की ओर वृद्धि करता है, वह जड़ है।

3. बीज के अंकुरित के बाद पेड़ की जड़ वाला भाग पहले बनता है।

4. लेखक ने गमले को उल्टा लटकाकर यह बताना चाहा था कि वृक्ष की पत्तियाँ तथा डालियाँ हमेशा सूर्य के प्रकाश की ओर ही वृद्धि करती हैं।

5. वृक्ष की जड़ भूमि में पड़े हुए जल को सोखकर उसे वृक्ष के हर अंग तक पहुँचाकर उसे सूखने से बचाती है।

6. जड़ के किसी कटे हुए भाग का निरीक्षण करने पर अनगिनत नलिकाएँ दिखाई देते हैं।

7. छोटे-छोटे छिद्रों (रंध्रों) को पेड़ के मुख कहा जाता है। ये पत्तों पर पाए जाते है।

8. हम जो लकड़ी, कोयला या गैस भोजन पकाने के लिए जलाते हैं, उनमें पाई जाने वाली गर्मी सूर्य की ऊर्जा का अंश है।

9. पेड़-पौधों के बीजों को ही उनकी संतान कहा गया है।

10. लेखक ने माँ की ममता की तुलना स्पर्शमणि या पारस पत्थर से की है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वृक्ष अंगारक वायु में से अंगार का सेवन करके वायु का शुद्धीकरण कर देते हैं। यदि इस विषाक्त वायु का शुद्धीकरण न हो तो पृथ्वी पर इसकी मात्रा इतनी बढ़ जाएगी कि हमें साँस लेने के लिए प्राणवायु नहीं मिल पाएगी। तब प्राण वायु के अभाव में हमारा जीवन समाप्त हो जाएगा। इस प्रकार वृक्ष हमें जीवित रखने में सहायक हैं।
2. पेड़-पौधे अपनी संतानों को सुरक्षित रखने के लिए फूलों की पंखुड़ियों से घिरे हुए छोटे से घर में रखते हैं। इन छोटे-छोटे घरों में एक प्रकार का शहद भी रखते हैं, वो मक्खियों तथा तितलियों को बहुत ही अच्छे लगते हैं। इस शहद का रसपान करने के लिए तितलियाँ तथा मक्खियाँ पेड़-पौधों की घनिष्ठ बन जाती है। इसके अलावा पेड़-पौधे फूलों के द्वारा वातावरण में एक मनमोहक सुगंध बिखेर देते हैं, इस सुगंध के प्रति आकर्षण भी उनकी घनिष्ठता बढ़ाता है।
3. जब पेड़ों की जड़ों में पानी डाला जाता है तो मिट्टी के अन्दर उपस्थित बहुत से पदार्थ उसमें घुल जाते हैं। ये वे पदार्थ हैं जो पेड़ों की वृद्धि तथा विकास के लिए आवश्यक हैं। यही पौधों का भोजन भी होता है। जड़ें इसी पानी को सोखकर उसे पौधे के अन्य भागों तक पहुँचाती हैं। यदि पौधों की जड़ों को पानी नहीं दिया जाएगा तो पौधे का भोजन बंद हो जाने के कारण वह कुछ ही दिनों में मर जाएगा।
4. सूक्ष्मदर्शी ऐसा यंत्र होता है जिसके द्वारा हम छोटी-से-छोटी चीजों को भी आसानी से देख सकते है। इसके प्रयोग से हमें यह लाभ हुआ कि हमें ज्ञात हो गया कि पौधों के हर भाग के अन्दर हजार-हजार छोटे-छोटे नल होते हैं और इन नलों के द्वारा ही पेड़ की जड़ें जो तरल भोजन सोखती हैं, पेड़ के हर अंग तक पहुँच जाता है। इसके अलावा यह भी पता चला कि पत्तों पर बहुत सारे छोटे-छोटे मुँह के साथ-साथ इनके होंठ भी होते हैं जो खुलते और बन्द होते रहते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. यह दर्शाना अत्यन्त सरल है कि पेड़-पौधे प्रकाश चाहते हैं। इस बात को दर्शाने के लिए एक ऐसा गमला लेंगे, जिसमें तीव्रगति से वृद्धि करने वाला एक पौधा लगाएँगे। उस गमले को ऐसे कमरे में दुख देंगे। जिसमें केवल एक ही खिड़की हो। कमरे में प्रकाश के आने का कोई अन्य मार्श नहीं होना चाहिए। इस गमले के अन्दर नियमित रूप से पानी डालकर उसकी देखभाल करेंगे। चार-छः दिन बाद हम देखते हैं कि पौधें की पत्तियों को धीरे-धीरे खिड़की की ओर मुड़ रही है। यदि गमले को अधिक दिनों तक वहीं रखा रहने देते हैं तो हम देखते हैं कि पौधे की वृद्धि की गति पहले की अपेक्षा कम हो गई है लेकिन उसकी सभी डालियाँ और पत्तियाँ पूरी तरह से उस खिड़की की ओर मुड़ गई हैं, ताकि उन्हें पर्याप्त प्रकाश मिल सके। इससे सिद्ध होता है कि पेड़-पौधों प्रकाश चाहते हैं।
2. मक्खियाँ, तितलियाँ आदि के द्वारा परागण हो जाने के बाद फूल के अन्दर बीज बनता है। वृक्ष उसे अपना रस पिलाकर पालन-पोषण करता है। जब वृक्ष को विश्वास हो जाता है कि फूल में फल-फूल रहे बीज द्वारा उसका वंश निरन्तर चलता रहेगा तो उसका सांसारिक सुख-सुविधाओं के प्रति आकर्षण समाप्त होता जाता है। वह धीरे-धीरे करके अपनी संतान रूप में पनप रहे बीज पर अपना सब कुछ लुटा देता है। अब उसका शरीर जो कुछ समय पूर्व हरा-भरा था, सूखना शुरू कर देता है। बिल्कुल सूख जाने पर उसमें इतनी शक्ति भी नही रह जाती कि वह अपने पैरों पर खड़ा भी हो सके। उसे अब हवा के ठंडे झोंके भी अच्छे नहीं लगते हैं। फिर एक दिन तेज हवा के झोंके से वह जड़ सहित उखड़कर जमीन पर गिर जाता है और हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है। इस प्रकार पेड़-पौधे सन्तान के लिए जीते हैं और फिर मर जाते हैं।

गेहूँ, चना, गैंदा, बाँस आदि के पौधे बीज उत्पादन करने के बाद तुरन्त मर जाते हैं।

3. घने जंगलों में पेड़ों की संख्या बहुत होती है। उन पेड़ों के बीज भी फूल से निकलकर पेड़ों के नीचे ही गिर जाते हैं। जिनसे बहुत सारे अंकुर फूट पड़ते हैं और वे शीघ्र ही वृक्ष का रूप धारण कर लेते हैं। अब उनको जीवित रहने के लिए सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता पड़ती है। हर पौधा अपने लिए अधिक-से-अधिक सूर्य के प्रकाश को चाहता है। इसके लिए उनमें एक होड़-सी लग जाती है। प्रत्येक पौधा जल्दी ऊँचा होकर ज्यादा-से-ज्यादा प्रकाश प्राप्त करना चाहता है। ये वृक्ष इतने घने होते हैं कि सूर्य की रोशनी धरती तक नहीं पहुँच पाती। अब जो छोटे रहे गए उन्हें तो देर-सबेर मरना ही है। जो ऊपर पहुँच जाते हैं उन्हें सूर्य से भरपूर शक्ति मिलती है, वे हरे-भरे ही रहते हैं। मगर बेल-लताएँ बहुत समझदार होती हैं। वे मजबूत तने के अभाव में खड़ी तो नहीं रह पातीं मगर तुरन्त ही अपने आस-पास के वृक्षों पर चढ़कर उनकी चोटी तक पहुँचकर जाती है और सूर्य से भरपूर शक्ति प्राप्त करके हरी-भरी बनी रहती हैं।

4. बीज के अंकुरण के लिए उसे अनुकूल परिस्थितियाँ मिलती चाहिए। सर्दियों में अत्यधिक ठंड होने के कारण बीज में से अंकुर नहीं फूटा। बीज में से अंकुर फूटने के लिए तापमान एक सीमा से कम नहीं होना चाहिए। उस समय ओस के कारण मिट्टी में कुछ नमी तो होती है किन्तु सूरज की रोशनी भी कम ही होती है। सर्दियों के बाद वसंत आया लेकिन बीज अंकुरित नहीं हुआ क्योंकि मिट्टी में नमी नहीं थी। तत्पश्चात् गर्मियाँ आ गईं इन दिनों में तापमान बहुत बढ़ गया और वह मिट्टी जिसमें बीज पड़े हुए थे और भी खुश्क हो गई। यही कारण था कि गर्मी की ऋतु भी निकल गई मगर बीज में से अंकुर नहीं फूटा और महीना-दर-महीना बीत जाने पर भी बीज अंकुरित नहीं हो पाया। वह मिट्टी में वैसा-का-वैसा पड़ा रहा। लेकिन जैसे ही वर्षा की ऋतु आई वैसे ही तीन-चार दिन जमकर बरसात हो गई। अब मौसम न तो गर्म रहा और न ठंडा। मिट्टी में पानी की कमी नहीं थी। हवा भी नमी के कारण शीतल थी। बस जैसे ही बीज को अनुकूल परिस्थितियाँ मिलीं वह अंकुरित हो गया। क्योंकि बीज को अपने अंकुरण के लिए आस-पास का अनुकूल तापमान, नमी, हवा और रोशनी की आवश्यकता होती है।

**